जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 224 प्रभात कोटा, गुरुवार 29 मई, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने बड़े जोश से 2025 को पार्टी का ''ऑर्गनाइज़ेशन इयर'' घोषित किया था

... पर छः माह बीत गए हैं, लगभग सभी राज्यों में पार्टी संगठन लगभग नदारद हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नईदिल्ली, 28 मई। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बड़े जोर-शोर से 2025 को पार्टी में ''संगठन का वर्ष' घोषित किया था। लेकिन आधा साल बीत चुका है और संगठनात्मक गतिविधियों में न तो कोई विशेष हलचल दिखती है, न ही कोई ठोस प्रगति।

राज्य-दर- राज्य कांग्रेस का संगठन निष्क्रिय अवस्था में बना हुआ है।

इस स्थिति के लिए कई वरिष्ठ नेता पार्टी के संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। वेणुगोपाल एआईसीसी महासचिव एव संगठन-प्रभारी हैं, लेकिन ज़मीन पर संगठन को मज़बूत करने के बजाय उनका पूरा ध्यान गांधी परिवार, खासतौर पर राहुल गांधी के साथ यात्रा करने पर रहता है और जहां भी राहुल जाते हैं, वे उनके साथ होते हैं।

वेणुगोपाल ने खुद को राहुल गांधी का मुख्य सहायक बना लिया है।

क्या यह कोई असुरक्षा की भावना है, जो उन्हें राहुल गांधी के इर्द-गिर्द बने रहने के लिए प्रेरित करती है? कहना मुश्किल है।

- कहने को के.सी. वेणुगोपाल कांग्रेस के राष्ट्रीय संगठन मंत्री हैं, पर, वे पूरा समय राहुल गांधी के पीछे रहते हैं। जहाँ राहुल जाते हैं, वहाँ के.सी. वेणुगोपाल भी होते हैं। असल में वेणुगोपाल चाहते हैं कि राहुल गांधी पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहे, राहुल गांधी उन्हीं की बात सुनें।
- मल्लिकार्जुन खड़गे कई बार रिक्त पद भरने का प्रयास कर चुके हैं, पर, खड़गे की लिस्ट को वेणुगोपाल हमेशा ठुकरा देते हैं।
- पार्टी संगठन की दुर्दशा पर किसी का ध्यान नहीं है, इस समय वेणुगोपाल व उनके समर्थकों का सारा फोकस शशि थरूर को पार्टी से निकलवाने पर है और इसके लिए रोज़ नई-नई कहानियां गढ़ी जा रही हैं।
- वेणुगोपाल केरल का मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पाले हुए हैं और उन्हें इसमें शशि थरूर ही बाधा नज़र आते हैं, इसलिए वे थरूर को रास्ते से हटाने में जुटे हैं और इस काम में उन्हें जयराम रमेश जैसे उन नेताओं की सहायता मिल रही है, जिनकी कुर्सी खतरे में है।

वे ऐसे एकमात्र संगठन-प्रभारी महासचिव हैं, जो हमेशा गांधी परिवार के साथ यात्रा करते रहते हैं, जबकि यह न तो उनके पद की भूमिका है, न ही उनकी जिम्मेदारी।

इस रवैये का नतीजा यह हुआ है कि पार्टी का संगठन बुरी तरह उपेक्षित हो चुका है। एक के बाद एक राज्य में संगठनात्मक इकाइयाँ निष्क्रिय होती जा रही हैं।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्यों में खाली पड़े पदों को भरने की कई बार कोशिश की, लेकिन वेणुगोपाल ने इन प्रयासों को बार-बार विफल कर दिया। यहां तक कि वे खड़गे द्वारा तैयार की गई सूची तक को खारिज कर देते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि वेणुगोपाल का अधिकतर ध्यान केरल पर केन्द्रित है, जहां वे खुद को मुख्यमंत्री पद का दावेदार मानते हैं और वहाँ के अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को खत्म करने में लगे हैं।

उनका मुख्य निशाना शशि थरूर हैं। बताया जा रहा है कि वेणुगोपाल, जयराम रमेश और अन्य लोगों की मदद से, थरूर के खिलाफ मीडिया में नकारात्मक खबरें गढ़ रहे हैं, जबकि थरूर को दुनिया भर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डूंगरपुर में लैपर्ड ने 4 युवकों पर हमला किया

डूंगरपुर, 28 मई (निसं)। वरदा थाना क्षेत्र के वलोता फला लिमडी गांव में झांड़ियों में छिपकर बैठे लैपर्ड ने चार युवकों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया। युवकों के चिल्लाने पर बड़ी संख्या में ग्रामीण जब मौके पर पहुंचे तो लैपर्ड भाग गया। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, वलोता फला लिमडी गांव निवासी मुकेश पुत्र मोगजी रोत, हाजा पुत्र कन्हैयालाल, लक्ष्मण पुत्र जीवा और शंकर पुत्र लक्ष्मण लाल चारों युवक लक्ष्मण की बहन रानी, पुत्री जीवा रोत की सगाई में गए थे। चारों युवक रीना की ससुराल से पैदल घर लौट रहे थे।

- युवकों के चिल्लाने पर बड़ी संख्या में ग्रामीण आ गये और लैपर्ड भाग गया।

रास्ते में वलोता डैम के पास झाड़ियों में छिपकर बैठे लैपर्ड ने मुकेश पर हमला कर दिया। उसे बचाने आए अन्य युवकों पर भी लैपर्ड ने हमला कर उन्हें घायल गंभीर रुप से कर दिया। युवकों के चिल्लाने का शोर सुनकर आस पास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे, जिसके बाद लैपर्ड भाग गया। सूचना मिलने पर, वरदा पुलिस और वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची तथा चारों घायल युवकों को 108 एम्बुलेंस की मदद से डूंगरपुर जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज चल रहा है। लैपर्ड के मूवमेंट को लेकर वन विभाग को सूचना दी गई है, जिस पर वन विभाग लैपर्ड मूवमेंट को ट्रैक कर रेस्क्यू करने में जुटा है।

राजस्थान सहित चार राज्यों में आज होगी मॉक ड्रिल

भारत सरकार अपनी सर्तकता में कोई कमी नहीं करना चाहती है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 मई। पाकिस्तान के साथ संघर्षविराम की घोषणा भले ही कर दी गई हो, लेकिन भारत का इरादा अपनी सतर्कता कम करने का कदापि नहीं है। अब देश ने गुजरात, राजस्थान, पंजाब और जम्मू-कश्मीर जैसे चार राज्यों में नागरिक सुरक्षा के मॉक ड्रिल आयोजित करने का निर्णय लिया है।

इन मॉक ड्रिल्स से सीमा पार की शत्रुता और आतंकी घटनाओं की स्थिति में, आपातकालीन प्रतिक्रिया के समन्वय और नागरिकों की निकासी सम्बन्धी रणनीतियों की परख होगी। इसके साथ ही, इनसे एनडीए सरकार बिहार चुनावों से पहले राष्ट्र भक्ति का जोश कायम रखकर राजनैतिक हित भी साधना चाहती है।

संघर्ष विराम की घोषणा के तुरंत बाद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राज्यों के तूफानी दौरे पर निकल पड़े , जिसमें वह 'मजबूत राष्ट्रवाद' की नीति को जोर-शोर से उठा रहे हैं। बिहार के मधुबनी में एक सार्वजनिक संबोधन में उन्होंने कहा कि उनकी सरकार पहलगाम हत्याकांड के जिम्मेदार आतंकियों को 'धरती के अंतिम छोर तक' ढूंढ़ निकालेगी।

बीकानेर की एक रैली में उन्होंने कहा कि उनके शरीर में खून नहीं, बल्कि 'गर्म सिंदूर' बह रहा है। दाहोद और गुजरात में, किसी देश का नाम लिए बिना, उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की घोषणा की। प्रधानमंत्री चार राज्यों में रैलियां करेंगे। इसकी शुरुआत गुरुवार से हो रही है। उम्मीद है कि प्रधानमंत्री इन रैलियों में ऑपरेशन सिंदूर के संदेश को पुरजोर तरीके से प्रचारित करेंगे, खासकर ऐसे समय में, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप यह दावा कर भारत सरकार को असहज स्थिति में डाल रहे हैं कि यह संघर्षविराम अमेरिका द्वारा भारत और पाकिस्तान को की गई व्यापारिक सौदों की पेशकश की वजह से संभव हुआ।

- लेकिन राजनैतिक विशेषज्ञों का कहना है कि सत्तारूढ़ एनडीए बिहार चुनावों तक राष्ट्रभक्ति के जोश को ठंडा नहीं होने देना चाहती है, इसलिए संघर्ष विराम के बाद भी मॉक ड्रिल करवाना चाहती है।
- प्रधानमंत्री मोदी भी सीज़फायर के बाद से राज्यों का दौरा कर रहे हैं और ऑपरेशन सिंदूर के संदेश को पुरजोर तरीके से आगे बढ़ा रहे हैं।
- राजस्थान के साथ जिन तीन अन्य राज्यों में मॉक ड्रिल होगी, वे हैं गुजरात, पंजाब और जम्मू कश्मीर।

बताया जाता है कि ट्रंप प्रशासन ने अमेरिका की अंतरराष्ट्रीय व्यापार अदालत के सामने यहाँ तक कह दिया है कि अगर ट्रंप की टैरिफ पावर्स पर कोई कानूनी रोक लगती है, तो इससे न केवल व्यापार सौदे प्रभावित होंगे, बल्कि 'भारत-पाक संघर्षविराम भी खतरे में पड़ जाएगा।'

मॉक ड्रिल गुरुवार से शुरु हो रही है। इसके कुछ सप्ताह पहले गृह मंत्रालय ने 7 मई को 'ऑपरेशन अभ्यास' नाम से एक मॉक ड्रिल करवाई थी और फिर उसी दिन कुछ घंटे बाद ही भारत ने ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत कर दी थी। ऑपरेशन अभ्यास, 1971 के भारत-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जस्टिस के.आर. श्रीराम होंगे राजस्थान हाई कोर्ट के नए चीफ जस्टिस

मौजूदा चीफ जस्टिस एम.एम. श्रीवास्तव को मद्रास हाई कोर्ट का चीफ जस्टिस नियुक्त करने की सिफारिश की गई है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 मई। एक अन्य बड़े फेर-बद के अन्तर्गत, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने राजस्थान, त्रिपुरा, झारखण्ड तथा मद्रास उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों के तबादलों की सिफारिश की है। यह निर्णय 26 मई को मुख्य न्यायाधीश बी आर आई गवई की अध्यक्षता में हुई कोलीजियम की मीटिंग में लिया गया।

कोलीजियम ने सुझाव दिया है कि राजस्थान हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस मनिन्द्र मोहन श्रीवास्तव का तबादला मद्रास उच्च न्यायालय में और मद्रास हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस के.आर. श्रीराम का तबादला राजस्थान हाईकोर्ट में कर दिया जाए साथ ही त्रिपुरा हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस अपरेश कुमार सिंह का तबादला तेलंगाना उच्च न्यायालय में तथा जस्टिस एम.एस. रामचन्द्र राव का तबादला झारखण्ड से त्रिपुरा उच्च न्यायालय में कर दिया जाये। जस्टिस श्रीवास्तव मूलतः छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय से तथा जस्टिस श्रीराम बाम्बे हाईकोर्ट से हैं।

- जस्टिस के.आर. श्रीराम मूलतः बॉम्बे हाई कोर्ट से हैं, उन्हें 21 सितम्बर 2024 को मद्रास हाई कोर्ट का चीफ जस्टिस बनाया गया था।
- सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने चीफ जस्टिस बी.आर. गवई की अध्यक्षता में राजस्थान, त्रिपुरा, झारखंड और मद्रास हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों के तबादले की सिफारिश की है।

सर्वोच्च न्यायालय ने उच्चतर न्यायपालिका में भारी बदलाव करते हुये, 10 उच्च न्यायालयों के 21 जजों की तबादले विभिन्न उच्च न्यायालयों में करने की अनुशंसा की है।

28 सितंबर, 1963 को मुंबई में जन्मे सीजे केआर श्रीराम ने मुंबई विश्वविद्यालय से एलएलबी करने के बाद लंदन से समुद्री विज्ञान में एलएलएम किया। वहीं, वे जुलाई 1986 को महाराष्ट्र एवं गोवा बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकृत हुए। बतौर वकील उन्होंने बॉम्बे हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, उपभोक्ता आयोगों, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण, प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण और कंपनी कानून बोर्ड में सफलतापूर्वक वकालत की। उन्हें 21 जून, 2013 को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जयपुर में आज करोना के 5 नये केस आये

जयपुर, 28 मई । राजस्थान में करोना वायरस एक बार फिर से दस्तक देता नज़र आ रहा है। बुधवार को प्रदेश भर से कोविड के 7 नए मामले सामने आए, जिनमें से सर्वाधिक 5 केस जयपुर से रिपोर्ट हुए हैं। अन्य दो मामले जोधपुर से मिले हैं।

जानकारी के अनुसार, बुधवार को संक्रमितों में 16 वर्षीय बालक बालोतरा से, बीकानेर से 31 वर्षीय महिला और दौसा से एक 5 वर्षीय बच्चा है। शेष चार

- आज रिपोर्ट हुए संक्रमितों में दौसा का एक 5 वर्षीय बच्चा भी है।

मरीजों में से 51 वर्षीय, 38 वर्षीय और 40 वर्षीय पुरुष तथा 24 वर्षीय महिला जयपुर से संक्रमित पाए गए। ये केस राज्य के विभिन्न प्रतिष्ठित अस्पतालों, एम्स जोधपुर (2), एसएमएस जयपुर (2), आरयूएचएस (1), जयपुरिया (1) और एक विश्वसनीय स्रोत से रिपोर्ट हुए हैं।

राज्य में वर्ष 2025 की शुरुआत से अब तक कुल 39 कोरोना संक्रमित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अल्पसंख्यकों और राष्ट्रवादी समूहों, दोनों को साधने में जुटी हैं ममता बनर्जी

प.बंगाल की मु.मंत्री, देश के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति में भी प्रासंगिकता बनाए रखना चाहती हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 मई। तृणमूल कांग्रेस, राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका के साथ-साथ, पश्चिम बंगाल में अपने परंपरागत अल्पसंख्यक वोट बैंक पर पकड़ बनाए रखने के उद्देश्य से, दोनों पक्षों को साधने की रणनीति अपनाने की कोशिश कर रही है।

पार्टी के अखिल भारतीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के सिलसिले में विभिन्न देशों के नेताओं को जानकारी देने वाली राष्ट्रीय टीम का हिस्सा बनकर मजबूती से अपनी भूमिका निभाई। उन्होंने पाकिस्तान को 'एक पागल कुत्ते का संचालक' कहकर करारा हमला बोला। इस बयान से उन्हें सत्तारूढ़ दल की सराहना तो मिली ही, साथ ही उन्होंने खुद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रखर राष्ट्रवादी के रूप में प्रस्तुत भी किया।

हालांकि, पाकिस्तान को ''पागल कुत्ता'' कहना बंगाल की मुस्लिम आबादी के बीच खतरा पैदा कर सकता है। भारत के खिलाफ पाकिस्तान की साज़िशों और आतंकी हमलों के बावजूद, बंगाल का मुस्लिम समुदाय किसी भी टकराव की स्थिति में पाकिस्तान के प्रति सहानुभूति रखता है। मुस्लिम बिरादरी किन्हीं भी राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानती है।

यहां तक कि जब भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच होता है, तब भी बड़ी संख्या में मुसलमान पाकिस्तान का समर्थन करते हैं। ऐसे में अभिषेक बनर्जी के बयान, राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भले ही उन्हें प्रशंसा दिलाएं, परंतु, राज्य में अल्पसंख्यकों के बीच इसका विपरीत प्रभाव हो सकता है।

- ममता के भतीजे अभिषेक, जो संसदीय प्रतिनिधिमंडल के साथ जापान गए हैं, ने पाकिस्तान को ''पागल कुत्ते का हैंडलर'' करार दिया। उनकी इस टिप्पणी को ममता बनर्जी की राष्ट्रवादियों का समर्थन जुटाने की कवायद के रूप में देखा जा रहा है।
- अभिषेक बनर्जी की इस टिप्पणी से राष्ट्रवादी सोच वाले लोग तो खुश हैं पर संभावना है कि बंगाल का अल्पसंख्यक वोट बैंक इससे नाखुश हो सकता है।
- बंगाल के राष्ट्रवादी तबके को खुश करने के लिए अभिषेक बनर्जी ने जापान में रासबिहारी बोस का भी ज़िक्र किया और वे उनके स्मारक पर भी गए।

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बनी संयुक्त संसदीय टीम में बनर्जी की भूमिका भी कुछ हद तक जटिल रही। सरकार की ओर से टीम के लिए पहले सुझाए गए नाम को तृणमूल कांग्रेस ने खारिज कर दिया। पार्टी ने वरिष्ठ सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय को टीम के साथ जापान यात्रा पर जाने से रोक दिया और कहा कि पार्टी खुद तय करेगी कि कौन जाएगा।

बाद में पार्टी ने यूसुफ पठान के नाम को भी अस्वीकार कर दिया, जिससे उन्हें टीम से हटना पड़ा। इसके बाद ही, पार्टी ने अभिषेक बनर्जी को शशि थरुर के नेतृत्व वाली संयुक्त संसदीय टीम में बतौर प्रतिनिधि भेजा, जो कि ममता बनर्जी के भतीजे भी हैं।

जापान में, पाकिस्तान के खिलाफ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने प्रो. महमूदाबाद की अंतरिम जमानत अवधि बढ़ाई

नयी दिल्ली, 28 मई। शीर्ष अदालत ने अशोका यूनिवर्सिटी के प्रो. अली खान महमूदाबाद को 21 मई को दी गई अंतरिम जमानत की अवधि बढ़ाने का निर्देश दिया और कहा कि वह इस मामले में जुलाई में सुनवाई करेगी। इसके साथ ही एसआईटी को हरियाणा में दर्ज दो

- सुप्रीम कोर्ट ने एसआईटी को हिदायत दी कि हरियाणा में दर्ज दो मुकदमों के तथ्यों तक ही जांच को सीमित रखा जाए।

मुकदमों के तथ्यों की जांच तक सीमित रहने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की अंशकालिक कार्य दिवस पीठ ने याचिकाकर्ता के अधिवक्ता के कपिल सिब्बल की इस आशंका पर कि जांच का दायरा बढ़ाया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत की विशाल सैन्य क्षमता का मुकाबला करने के लिए हल्के परमाणु हथियार विकसित कर रहा है पाकिस्तान

अमेरिका की डिफैन्स इन्टैलिजैंस एजेंसी ने 2025 की अपनी रिपोर्ट में दावा किया

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 मई। पाकिस्तान की रक्षा नीति लंबे समय से चली आ रही इस धारणा पर आधारित है कि भारत उसके अस्तित्व के लिए खतरा है। यह धारणा कोई नई नहीं है, बल्कि उपमहाद्वीप के इतिहास,1947 के विभाजन के दर्द, कई युद्धों और कश्मीर मुद्दे पर जारी शत्रुता से गहराई से जुड़ी हुई है। पाकिस्तान के सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व के लिए भारत की पारंपरिक सैन्य श्रेष्ठता, जो उसकी विशालता, आधुनिकता, वायु सेना, नौ सेना और मिसाइल प्रणालियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, पाकिस्तान के लिए सिर्फ एक रणनीतिक चुनौती नहीं, बल्कि उसके अस्तित्व के लिए मूलभूत खतरा है।

यह आंकलन अमेरिका की डिफेंस इंटेलिजेंस एजेंसी (डीआईए) की 2025 वर्ल्डवाइड थ्रैट एसेसमेंट रिपोर्ट से सामने आया

- ''वर्ल्ड वाइड थ्रैट असैसमैंट'' शीर्षक वाली डी.आई.ए. की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान 1947 से ही भारत के डर के साये में जी रहा है।
- भारत की विशाल सेना की आधुनिकता और पारंपरिक श्रेष्ठता को पाकिस्तान रणनीतिक चुनौती से भी कहीं अधिक, अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है।
- इस डर की वजह से पाकिस्तान कम दूरी तक मार करने वाले हल्के परमाणु हथियार हासिल करने पर फोकस कर रहा है, ताकि, जब भी भारत, पाकिस्तान के आतंकी अड्डों को निशाना बनाए तो पाकिस्तान इनका इस्तेमाल कर भारत को रोक पाए।
- डी.आई.ए. ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि पाकिस्तान की यह रणनीति बेहद खतरनाक है, यह न केवल परमाणु युद्ध का कारण बन सकती है, बल्कि इनकी चोरी और सनक में या गलतफहमी में इनके दुरुपयोग का भी भारी खतरा है।

है। यह रिपोर्ट पाकिस्तान की सैन्य नीति और रणनीतिक सोच, खासकर भारत के प्रति उसके नज़रिये, पर एक गंभीर अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है।

इसके जवाब में पाकिस्तान ने आक्रामक सैन्य आधुनिकीकरण कार्यक्रम शुरु किया है। डीआईए की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान खास तौर पर भारत के साथ सैन्य क्षमता की बड़ी खाई को पाटने के लिए विषम क्षमताओं के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। इस प्रयास का मुख्य आधार है, बैटल फील्ड या टैक्टिकल न्यूक्लियर हथियारों का विकास, ये कम-क्षमता वाले, सीमित दूरी तक मार करने वाले परमाणु हथियार हैं, जिन्हें युद्ध के मैदान में इस्तेमाल के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये हथियार भारत के कोल्ड स्टार्ट डॉक्ट्रिन को रोकने के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं। कोल्ड स्टार्ट डॉक्ट्रिन के तहत, सीमित लेकिन तेज़ पारंपरिक हमले पाकिस्तान की सीमा में किए जा सकते हैं, खासकर सीमा पार आतंकवाद के जवाब में। परमाणु प्रतिक्रिया का विकल्प खुला रखकर, पाकिस्तान किसी भी भारतीय सैन्य कार्रवाई को शुरुआती स्तर पर रोकने के लिए रणनीतिक अस्पष्टता बनाए रखना चाहता है।

टैक्टिकल परमाणु हथियारों का विकास पाकिस्तान की ''फुल-स्पैक्ट्रम डैटरैंस'' रणनीति का हिस्सा है। इस अवधारणा में परमाणु हथियारों का प्रयोग केवल रणनीतिक प्रतिशोध तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि युद्ध क्षेत्र की विभिन्न स्थितियों में भी इनका प्रयोग किया जा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा में बारिश

नयी दिल्ली, 28 मई। देश के 17 राज्यों में मानसून की एंट्री हो चुकी है। बुधवार को मानसून समय से 12 दिन पहले छत्तीसगढ़ और 13 दिन पहले ओडिशा पहुंचा। दोनों राज्यों के कुछ जिलों में तेज बारिश हुई।

महाराष्ट्र के मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, पालघर, रायगढ़ में आज भारी बारिश हो रही है। यहां बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। बदलापुर, उल्हासनगर,

- राजस्थान के अन्य भागों में लू और आंधी का प्रकोप देखा जा रहा है।

कल्याण, डोंबिवली और ठाणे के अलग-अलग इलाकों में जलभराव हो गया है।

राजस्थान में मौसम तीन रूप देखने को मिल रहे हैं। बूंदी जिले में तेज गर्मी पड़ रही है। यहां के गांव में एक वृद्ध महिला की मौत हुई। जांच में हीटवेव से मौत की बात सामने आई। उदयपुर,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

फल की इच्छा छोड़कर निरंतर कर्त्तव्य करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कर्त्तव्य करते हैं, उन्हें अवश्य मोक्ष प्राप्त होता है। –गीता

मोदी ने अपने कार्यकाल के 11 वर्ष पूरे किए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कार्यकाल के ग्यारह वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस अवधि में मोदी सरकार ने कई ऐतिहासिक फैसले लिए जिनकी देश और दुनिया में काफी चर्चा हुई। मोदी ने 26 मई 2014 को भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री हैं जिनका जन्म आजादी के बाद हुआ है। ग्यारह साल बाद भी मोदी की लोकप्रियता लगातार बनी हुई है। मोदी ने देश के सबसे लंबे समय तक लगातार शासन करने वाले गैर–कांग्रेसी प्रधानमंत्री होने का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री तक 25 साल का बेमिसाल सफर पूरा करने वाली यह शख्सियत नरेन्द्र दामोदर दास मोदी आज ग्लोबल लीडर के रूप में अपनी पहचान कायम करने में सफल हुए है। मोदी में गजब का आत्मविश्वास है। प्रखर और कुशल वक्ता के रूप में उनकी राष्ट्रीय पहचान है।

मोदी की कार्यशैली, सोच, साहस, हौसला, कार्य निष्ठा, देश के प्रति समर्पण, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व और कुछ कर गुजरने की ललक ने उनकी लोकप्रियता को देश ही नहीं अपितु दुनिया में भी बढ़ाने का काम किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी की इन 11 सालों की उपलब्धियां बेमिसाल रही है। इन 11 सालों में मोदी सरकार ने अनेक क्षेत्रों में सफलता के परचम फहराए इसमें कोई दो राय नहीं है। मोदी सरकार के कार्यकाल में विपरीत स्थितियों के बावजूद भारत ने विश्व आर्थिक क्रांति का उद्घोष कर विकास के प्रेरक के रूप में अपना स्थान सुरक्षित किया है। इस अवधि में देश के बुनियादी ढांचा क्षेत्र में सबसे अधिक सार्वजनिक निवेश हुआ है। परिणाम स्वरुप अनेक क्षेत्रों में आशातीत प्रगति कर भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है। मोदी ने कश्मीर में एक ध्वज, एक निशान और एक संविधान का जनसंघ के पितृ पुरुष का सपना साकार किया। मोदी ने अनेक ऐतिहासिक कार्यों को अंजाम देकर 'मोदी है तो मुमकिन है' की अपनी छवि बनाई।

मोदी संघ के एक विनम्र स्वयं सेवक की तरह देश की नब्ज को पहचानने में सफल हुए। इस अवधि में मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि ये रही कि सरकार के किसी मंत्री पर कोई भी भ्रष्टाचार या घोटाले का आरोप नहीं लगा। प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जनता की आशाओं अपेक्षाओं पर नितांत खरे उतरे। जन विश्वास अर्जित कर मोदी ने देशवासियों का आत्मसम्मान व राष्ट्र का गौरव बढ़ाने का काम किया है। देश की सबसे बड़ी वैश्विक उपलब्धियों में एक चौथी अर्थव्यवस्था बनने की है।

मोदी में गजब का आत्मविश्वास है। प्रखर और कुशल वक्ता के रूप में उनकी राष्ट्रीय पहचान है। मोदी की कार्यशैली, सोच, साहस, हौसला, कार्य निष्ठा, देश के प्रति समर्पण, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व और कुछ कर गुजरने की ललक ने उनकी लोकप्रियता को देश ही नहीं अपितु दुनिया में भी बढ़ाने का काम किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी की इन 11 सालों की उपलब्धियां बेमिसाल रही है।

भारत ने जापान को पछाड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर 4 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी हासिल की है। यह उपलब्धि भारत की वैश्विक भूमिका और आर्थिक नीतियों की सफलता को दर्शाती है। जनधन योजना, स्वच्छ भारत मिशन, जीएसटी, आयुष्मान भारत योजना, डिजिटल इंडिया, इंफ्रास्ट्रक्चर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान, आत्मनिर्भर भारत अभियान, अनुच्छेद 370 हटाना, राम मंदिर निर्माण, नारी शक्ति और कानून, तीन तलाक कानून, रक्षा और सुरक्षा, शिक्षा और कौशल विकास,महिलाओं के लिए सैन्य सेवा में प्रवेश और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सहित 80 करोड़ गरीबों को रोजी–रोटी की सुविधा उपलब्ध कराकर मोदी सरकार की ग्यारह सालों की प्रमुख उपलब्धियां है। हाल ही ऑपरेशन सिन्दूर के माध्यम से पाकिस्तान में चल रहे आतंकी अड्डों को ध्वस्त करने में सफलता हासिल की। इस अवधि में बढ़ती कीमतों (खासतौर पर पेट्रोल–डीजल), किसानों के आंदोलन, बेरोजगारी, नोटबंदी, जीएसटी आदि की नाराजगी के बावजूद लोगों पर अभी भी मोदी का जादू बरकरार है।

मोदी सरकार के 11 साल के कार्यकाल दौरान उनके विरोधियों में उनके प्रति बेहद नाराजगी का भाव है। इसके बावजूद लोगों का मानना है भ्रष्टाचार को काबू करने का मोदी ने ईमानदारी से प्रयास किया है जिसकी वजह से सरकारी मदद का लाभ जरूरतमंद गरीबों और असहाय लोगों तक पहुंचा है। इन 11 सालों में मोदी सरकार ने अनेक क्षेत्रों में सफलता के परचम फहराए इसमें कोई दो राय नहीं है। इस अवधि में मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि ये रही कि सरकार के किसी मंत्री पर कोई भी भ्रष्टाचार या घोटाले का आरोप नहीं लगा। प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जनता की आशाओं अपेक्षाओं पर नितांत खरे उतरे। जन विश्वास अर्जित कर मोदी ने देशवासियों का आत्मसम्मान व राष्ट्र का गौरव बढ़ाने का काम किया है। देश और दुनिया में यह मानने वालों की कमी नहीं है कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की जनता से संवाद शक्ति बेमिसाल है। भाजपा को चुनावी विजय दिलाने में मोदी का जनता से सीधा और जीवंत संवाद है। जनता से उनका ऐसा ही जीवंत संवाद तब देखने को मिलता है जब वे सभाओं को संबोधित करते है। जनता जनार्दन मोदी मोदी के नारे के साथ उनका करतल ध्वनि से स्वागत करते है। अपनी बेहद अनूठी और मन मोह लेने वाली संवाद कला से लोगों का दिल जीत लेते हैं प्रधानमंत्री मोदी।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 29 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, आर्द्रा नक्षत्र रात्रि 10:39 तक, शूल योग दिन 3:47 तक, तैतिल करण दिन 12:26 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कर्क, बुध–वृष, गुरू–मिथुन, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग, रवियोग रात्रि 10:39 से आरम्भ होगा। आज महाराणा प्रताप जयन्ती है। आज जिलहिज मु.मास 12 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:19 तक, चर 10:42 से 12:24 तक, लाभ अमृत 12:24 से 3:47 तक, शुभ 5:29 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:10

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में अनावश्यक वाद–विवाद हो सकते हैं।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। पारिवारिक यात्रा संभव है।

धनु

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृष

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कुंभ

व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मीन

घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

महाराणा प्रताप: स्वधर्म एवं स्वदेश के लिए आजीवन संघर्षरत सेनानी

राजेश्वर सिंह

भारतीय संस्कृति व परम्परा में धर्म को मनुष्य के सहज कर्तव्य के रूप में परिभाषित किया गया है और धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, स्वच्छता, इन्द्रिय संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध इसके दस लक्षण बताये गये हैं। भारत में सभ्यता के आदिकाल से ही मनुष्य का व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन उपर्युक्त महान मानवीय मूल्यों पर आधारित दस लक्षण धर्म के मूलाधार पर प्रतिष्ठित था। भारतीय भूभाग के विपुल विस्तार व आवागमन के त्वरित साधनों के अभाव की वजह से यह एकात्म सांस्कृतिक क्षेत्र विभिन्न राज्यों अथवा राजनीतिक इकाइयों मे विभक्त था किन्तु वहाँ भी व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक व्यवस्था व राज व्यवस्था का आधार दस लक्षण धर्म ही था।

विदेशी आक्रान्ताओं के भारत पर आक्रमण का मूल उद्देश्य न केवल इस विस्तृत भूभाग की विपुल धन सम्पदा का दोहन था वरन् अपना राज्य स्थापित कर यहां के धर्म, संस्कृति, परम्परा व आधारभूत जीवन मूल्यों को ध्वस्त कर जनसामान्य में दास मनोवृत्ति को अधिरोपित करना था ताकि उनका आधिपत्य निष्कंटक हो सके। आक्रान्ता व उनके वंशज इस उद्देश्य की प्राप्ति में आंशिक रूप से सफल अवश्य हुए क्योंकि भारतीय समाज में गुण –कर्म आधारित गतिशील वर्ण व्यवस्था कालक्रम में वंशानुगत अपरिवर्तनीय जाति व्यवस्था में तब्दील हो चुकी थी और अस्पृश्यता तथा जातिगत भेदभाव यहाँ की सामाजिक व्यवस्था का अंग बन चुका था, जिससे पीड़ित एक छोटे से वर्ग ने लाभ, लोभ या आतंक की वजह से धर्म परिवर्तन अवश्य किया किन्तु व्यापक जन समुदाय की धर्म निष्ठा अटूट और अपरिवर्तनीय ही रही। इसके मद्देनजर विदेशी मूल के शासक वर्ग ने अपनी रणनीति में बदलाव किया व स्थानीय शासकों के साथ सहअस्तित्व, सहयोग व समायोजन की नीति का अवलम्बन किया। यह नीति ऊपर से तो अत्यन्त सहिष्णु, समावेशी व उदारवादी प्रतीत होती थी किन्तु अन्दर से आक्रांताओं के मूलभूत उद्देश्य अपरिवर्तनीय ही रहे।

राजपुताना के राज्यों में केवल मेवाड़ ही एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने मुगल सामाज्य का अंग बनने से स्पष्ट रूप से इंकार किया जिसका खामियाजा वहॉ के शासकों व जन साधारण को भुगतना पड़ा। 1567 ई. में अकबर ने जब चित्तौड़ पर चढाई की ,उस समय अपने सरदारों एवं सेनानायकों की सलाह पर महाराणा उदय सिंह ने चित्तौड़ का गढ छोड़ दिया। 23 फरवरी 1568 ई. की रात्रि में चित्तौड़ का अन्तिम जौहर हुआ तथा दूसरे दिन दुर्गद्वार खोलकर योद्धाओं ने साका किया। इसके साथ ही अकबर का चित्तौड़ पर अधिकार हो गया। कुछ समय तक दुर्गम पहाड़ों एवं कुम्भलमेर में रहने के बाद महाराणा उदय सिंह ने गोगुन्दा में अपना स्थान कायम किया और वहीं पर 28 फरवरी, 1572 को उन का देहान्त हुआ। अपनी मृत्यु के कुछ दिवस पूर्व ही महाराणा उदय सिंह ने राजगद्दी पर प्रताप के औचित्यपूर्ण दावे की उपेक्षा कर अपने कनिष्ठ पुत्र जगमाल को युवराज व राज्य का भावी उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था किन्तु मेवाड़ के सरदारों के प्रभावी हस्तक्षेप के कारण 28 फरवरी, 1572 को ही प्रताप का मेवाड़ की राजगद्दी पर राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। यह घटनाक्रम स्पष्ट रूप से इस तथ्य का द्योतक है कि राजा में देवत्व के निहित होने की अवधारणा के बावजूद सामन्तों में सत्य, न्याय और औचित्य के प्रति निष्ठा थी व गलत राजाज्ञा को अस्वीकार करने का साहस भी था।

प्रताप की गद्दीनशीनी के एक वर्ष पश्चात अप्रैल, 1573 में आमेर के कुंवर मान सिंह कच्छवाहा, सितम्बर, 1573 में आमेर के राजा भगवंतदास तथा दिसम्बर, 1573 में राजा टोडरमल अकबर के दूत के रूप में प्रताप से मिले व उन्हें मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार करने हेतु सहमत करने का प्रयास किया किन्तु यह प्रयास निष्फल ही रहा। अन्ततः 18 जून, 1576 को प्रताप व मुगल सेनाओं के बीच हल्दी घाटी का सुप्रसिद्ध युद्ध हुआ जिससे मेवाड़ के प्रमुख योद्धा रामदास मेड़तिया, रामशाह तंवर, झाला बीदा, झाला मानसिंह, रावत नैतसी इत्यादि वीरता पूर्वक लड़ते हुए काम आए और प्रताप तथा उनके बचे हुए सैनिकों को रणभूमि छोड़नी पड़ी। यद्यिप विजय मुगल सेना की हुई किन्तु वे प्रताप को पकड़ने अथवा उनका मनोबल तोड़ने में असमर्थ रहे। इसके बाद अक्टूबर, 1576 में अकबर ने स्वयम् तथा अक्टूबर, 1577, दिसंबर, 1578 तथा नवंबर 1579 में मुगल सेनापति शाहबाज खां ने लगातार मेवाड़ पर आक्रमण किए किन्तु प्रताप को गिरफ्तार करने अथवा मेवाड़ पर पूर्ण अधिकार करने में पूर्णतया विफल रहे।

अक्टूबर, 1582 में विजयादशमी के दिन प्रताप ने कुंभलमेर से 40 किमी उत्तरपूर्व में दिवेर गांव के शाही थाने पर आक्रमण किया। मुगल सेना का नेतृत्व सुल्तान खां के हाथ में था। इस युद्ध में प्रताप की विजय हुई और राजपूत सेना ने मुगलों को अजमेर तक खदेड़ा। दिवेर के युद्ध ने मुगलों के मनोबल को बुरी तरह तोड़ दिया। इसके उपरान्त प्रताप ने गोगुन्दा, कुम्भलगढ, बस्सी, चावण्ड, जावर, मदारिया तथा माण्डलगढ़ जैसे महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्जा कर लिया।

19 जनवरी, 1597 को अपनी मृत्यु से पूर्व प्रताप ने चित्तौड़गढ को छोड़कर मेवाड़ के लगभग सम्पूर्ण भूभाग पर आधिकार कर लिया था। चित्तौड़गढ दुर्ग पर वापस अधिकार करने की उनकी उत्कट अभिलाषा थी और इस कार्य की सिद्धि तक उन्होंने पत्तल में भोजन करने व तृणशय्या पर शयन करने का दुस्साध्य प्रण लिया था, जिसे जीवन के अन्त तक निभाया।

यह संघर्ष गाथा उस अप्रतिम महावीर की है जो चाहता तो अन्य राजाओं की तरह अकबर की अधीनता स्वीकार कर सुख, साधन ,समृद्धि और सुविधा से युक्त वैभवशाली जीवन जी सकता था, किन्तु अपने धर्म, संस्कृति, परम्परा, पूर्वजों के जीवन मूल्यों एवं स्वदेश की रक्षा के लिये उन्होंने आजीवन संघर्ष के कण्टकाकीर्ण पथ का वरण किया और लाख कठिनाइयॉ आने के बावजूद अपने स्वातन्त्र्य व स्वाभिमान पर आंच नहीं आने दी। इस संघर्ष में उनके साथी और सहभागी केवल राजपूत और भील ही नहीं थे, ब्राह्मण, ओसवाल, चारण और पठान आदि समुदायों ने भी तन, मन और धन से महाराणा को सहयोग दिया व आजीवन उनके मनोबल को ऊंचा बनाए रखा। यह इस बात का प्रमाण है कि नायक में अगर बुद्धिमता, संकल्पशक्ति, साहस, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता, धैर्य, विनम्रता, आत्मबल और दृढ निश्चय हो तो जन साधारण में भी उत्साह, ध्येयनिष्ठा, एकात्मता, सहयोग व समर्पण का भाव जागृत होना स्वाभाविक है।

–राजेश्वर सिंह,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था : उपलब्धि तो है, लेकिन सफर लम्बा है

राजेन्द्र मोहन शर्मा

भारत की अर्थव्यवस्था ने हाल के वर्षों में वैश्विक मंच पर उल्लेखनीय प्रगति की है। 2025 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच चुकी है, जिसके साथ यह विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, भारत ने जापान को पीछे छोड़ दिया है। इस आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वित्तीय समावेशन रहा है, जिसने समाज के हर वर्ग, खास तौर पर ग्रामीण और निम्न आय वर्ग को बैंकिंग, ऋण और डिजिटल भुगतान जैसी सेवाओं से जोड़ा है। हालांकि, भारत की यह चमकती आर्थिक तस्वीर पूरी तरह सच नहीं है। आंकड़ों की बाजीगरी, संरचनात्मक कमियां और सामाजिक चुनौतियां इस कहानी को "आधी हकीकत, आधे फसाने" के रूप में देखती हैं।

भारत की आर्थिक प्रगति का आधार 1991 के उदारीकरण सुधारों में निहित है, जिसने वैश्विक व्यापार के दरवाजे खोले। 2015 में भारत की जीडीपी 2.1 ट्रिलियन डॉलर थी, जो 2025 तक 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई, यानी 105% की वृद्धि। यह वैश्विक औसत 3.9% से कहीं अधिक है। 2022 में भारत ने यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर पांचवां स्थान हासिल किया और अब जापान को पीछे छोड़ कर अग्रसर है। निर्यात क्षेत्र में भी भारत ने मजबूत प्रदर्शन किया। 2021–22 में वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात 650 बिलियन डॉलर को पार कर गया, और 2023–24 में इसके 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्युटिकल्स और व्यावसायिक सेवाओं में भारत की वैश्विक पहचान बनी है। मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों ने विनिर्माण और नवाचार को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप दर्जनों यूनिकॉर्न कंपनियां उभरी।

चंद्रयान–3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग ने भारत की तकनीकी क्षमता को और मजबूत किया। लेकिन इस आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण पहलू वित्तीय समावेशन है, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को औपचारिक और समावेशी बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। वित्तीय समावेशन का सफर 2005–06 में शुरू हुआ, जब रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया। 2014 में शुरू हुई प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाय) ने इस दिशा में क्रांति ला दी। 2025 तक, 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए, जिनमें 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक जमा हुए। आधार प्रणाली ने 1.3 अरब से अधिक लोगों को डिजिटल पहचान दी, जिससे बैंक खाता खोलना और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना आसान हुआ। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने डिजिटल भुगतान को आम जन तक पहुंचाया।

2024 में यूपीआई ने 150 बिलियन से अधिक लेनदेन दर्ज किए, जिनका मूल्य 200 लाख करोड़ रुपये से अधिक था। यह भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती डिजिटल भुगतान अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनाता है। मुद्रा योजना ने छोटे और मझोले उद्यमों को 20 लाख करोड़ रुपये से अधिक के ऋण दिए, जिसने सूक्ष्म उद्यमिता को बढ़ावा दिया। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और सुरक्षा बीमा योजना ने लाखों लोगों को सस्ती बीमा योजनाओं से जोड़ा। विश्व बैंक की 2021 की ग्लोबल फिनडेक्स रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 78% वयस्कों के पास बैंक खाता था, जो 2011 में 35% से कहीं अधिक है। ये उपलब्धियां भारत की अर्थव्यवस्था को विकसित बनाने और गरीबी उन्मूलन में योगदान दे रही हैं। हालांकि, आर्थिक प्रगति और वित्तीय समावेशन के दावों में आंकड़ों की बाजीगरी स्पष्ट दिखती है।

भारत को तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में प्रचारित किया जाता है, लेकिन यह क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के आधार पर है। पीपीपी में भारत 2011 में ही तीसरा स्थान हासिल कर चुका था, लेकिन जीडीपी, जो वास्तविक आर्थिक शक्ति को मापती है, में भारत अभी भी चौथे या पांचवें स्थान पर है। यह अंतर आम जनता के लिए भ्रामक हो सकता है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में भारत की स्थिति और कमजोर है। 2023 में भारत की प्रति व्यक्ति आय 2,610 डॉलर थी, जो विश्व में 136वें स्थान पर है, जबकि अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय 80,000 डॉलर से अधिक है।

वित्तीय समावेशन में भी आंकड़े पूरी तस्वीर नहीं दिखाते। जन धन खातों की संख्या प्रभावशाली है, लेकिन 2023 के सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 20% खाते निष्क्रिय हैं। कई खाते केवल सरकारी सब्सिडी के लिए खोले गए, जिससे वास्तविक वित्तीय भागीदारी कम रही। बेरोजगारी के आंकड़े भी चिंता बढ़ाते हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, 2022 में पढ़े–लिखे युवाओं में बेरोजगारी 65.7% थी, जो 2000 में 54.2% थी। सब्सिडी का बोझ भी एक समस्या है। 2013–14 में ईंधन और उर्वरक सब्सिडी पर 2,47,596 करोड़ रुपये खर्च हुए, जो राजकोषीय घाटे को बढ़ाता है।

भारत की आर्थिक और वित्तीय प्रगति के सामने कई चुनौतियां हैं। आय असमानता एक बड़ी समस्या है। गोल्डमैन सैक्स के विश्लेषण के अनुसार, लग्जरी ब्रांड्स की बिक्री सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं से तेजी से बढ़ रही है, जो अमीर और गरीब के बीच खाई को दर्शाता है। वित्तीय साक्षरता की कमी भी वित्तीय समावेशन को सीमित करती है। केवल 27% वयस्कों को वित्तीय प्रबंधन की बुनियादी समझ है, जिसके कारण लोग बचत और निवेश में पीछे रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग और डिजिटल बुनियादी ढांचे की बड़ी कमी और एक चुनौती तो है ही।

2022 में प्रति 1 लाख लोगों पर केवल 14.7 बैंक शाखाएं थीं, और स्टेट ऑफ इंटरनेट 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, केवल 52% ग्रामीण आबादी के पास इंटरनेट था। लैंगिक असमानता भी बनी हुई है। ग्लोबल फिनडेक्स 2021 के अनुसार, पुरुषों की तुलना में महिलाओं के पास बैंक खाता होने की संभावना 10% कम है। साइबर सुरक्षा एक उभरती चुनौती है। 2023 में डिजिटल धोखाधड़ी से 1.2 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। महंगाई भी निम्न और मध्यम आय वर्ग को प्रभावित कर रही है, क्योंकि खाद्य पदार्थों की कीमतों में दोहरे अंकों की वृद्धि ने महंगाई को 4% के लक्ष्य से ऊपर रखा है।

पर्यावरणीय चुनौतियां भी भारत की प्रगति को बाधित करती हैं। टिकाऊ विकास लक्ष्यों में भारत 166 देशों में 112वें स्थान पर है। वैश्विक निर्भरता, खास तौर पर चीन से आयात और अमेरिका की विदेश नीति पर निर्भरता, भारत की आर्थिक स्वायत्तता को कमजोर करती है। अन्य देशों के साथ तुलना भारत की स्थिति को और स्पष्ट करती है। अमेरिका, 30.3 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसकी प्रति व्यक्ति आय भारत से 30 गुना अधिक है, और 95% वयस्कों के पास बैंक खाता है।

अमेरिका की अर्थव्यवस्था सेवा, विनिर्माण और प्रौद्योगिकी पर आधारित है, जबकि भारत कृषि और सेवा क्षेत्र पर निर्भर है। चीन, 19.5 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। अलीपे और वीचैट पे ने चीन में 90% वयस्कों को डिजिटल भुगतान से जोड़ा, लेकिन इसका केंद्रीकृत नियंत्रण भारत के लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से अलग है। जापान और जर्मनी, क्रमशः 4.4 और 4.9 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, भारत के निकटतम प्रतिस्पर्धी हैं। इनकी प्रति व्यक्ति आय 34,000 और 51,432 डॉलर है। केन्या जैसे विकासशील देश ने एम–पेसा के जरिए वित्तीय समावेशन में भारत से बेहतर प्रदर्शन किया, जहां 83% वयस्कों के पास मोबाइल मनी खाता है। भारत की विशाल जनसंख्या और भौगोलिक विविधता इसे अलग बनाती है, लेकिन बुनियादी ढांचे और साक्षरता में कमी इसे पीछे रखती है। यद्यपि भविष्य की संभावनाएं भारत के लिए आशाजनक हैं। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के अनुसार, भारत 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है, और हर डेढ़ साल में 1 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी में जोड़ सकता है।

विश्व बैंक का सुझाव है कि कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित प्रौद्योगिकी में निर्यात बढ़ाकर भारत 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात लक्ष्य को हासिल कर सकता है। वित्तीय समावेशन में, डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ाकर 2030 तक 80% ग्रामीण आबादी को डिजिटल भुगतान से जोड़ा जा सकता है। वित्तीय साक्षरता को स्कूलों और समुदायों में अनिवार्य करना होगा। लैंगिक समानता के लिए विशेष योजनाएं और साइबर सुरक्षा के लिए नई तकनीकें जरूरी हैं। राजकोषीय घाटे को कम करने, सब्सिडी को तर्कसंगत बनाने और व्यापार घाटे को नियंत्रित करने के लिए नीतिगत सुधार आवश्यक हैं। 2047 तक नेट–जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य और हरित ऊर्जा में निवेश भारत को पर्यावरणीय स्थिरता में अग्रणी बना सकता है।

निष्कर्ष:–भारत का विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने और वित्तीय समावेशन का सफर प्रभावशाली है। मेक इन इंडिया, जन धन योजना, आधार और यूपीआई ने भारत को वैश्विक मंच पर स्थापित किया, लेकिन आंकड़ों की बाजीगरी, जैसे पीपीपी और निष्क्रिय खातों की समस्या, और बेरोजगारी, आय असमानता और पर्यावरणीय चुनौतियां इस चमक को फीका करती हैं। अन्य देशों की तुलना में भारत ने कम समय में बड़ी प्रगति की, लेकिन बुनियादी ढांचे और साक्षरता में सुधार जरूरी है। निर्यात विविधीकरण, डिजिटल और हरित प्रौद्योगिकी, और शिक्षा में निवेश भारत को 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वित्तीय समावेशन में वैश्विक नेता बना सकता है। सही नीतियों और सुधारों के साथ, भारत अपनी आर्थिक और सामाजिक कहानी को पूरी हकीकत में बदल सकता है।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार,
शिक्षाविद और चिन्तक

एनजीटी ने चिड़ियाघर संरक्षण के लिए मुख्य सचिव सहित पांच को नोटिस दिया

- **कोटा चिड़ियाघर में प्रस्तावित खेल परिसर के विकास के लिए पेड़ों की कटाई का मामला**
- **105 साल पुराने पेड़ो और हॉर्नबिल बुलबुल जैसी लुप्त पक्षी प्रजातियों का घर है चिड़ियाघर**

भीलवाड़ा, (निसं)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेंट्रल जोनल बैंच भोपाल ने कोटा चिड़ियाघर में प्रस्तावित खेल परिसर के विकास के लिए पेड़ों की कटाई के मामले में मुख्य सचिव राजस्थान सरकार, जिला कलेक्टर कोटा, वन विभाग कोटा, कोटा विकास प्राधिकरण सहित पांच को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

एनजीटी ने पीपल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी एवं भीलवाड़ा निवासी पर्यावरणविद बाबूलाल जाजू की अधिवक्ता लोकेंद्र सिंह कछावा के मार्फत दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान नोटिस जारी करने के आदेश दिए। याचिकाकर्ता बाबूलाल जाजू ने याचिका में बताया कि कोटा चिड़ियाघर की स्थापना 1905 में कोटा के महाराजा ने की थी और यह हाड़ौती क्षेत्र का एकमात्र चिड़ियाघर है एवं वन विभाग 1954 से इसका संचालन कर रहा है। जाजू ने आरोप लगाया है कि कोटा विकास प्राधिकरण ने वन भूमि पर स्थित इस चिड़ियाघर की भूमि को खेल परिसर के विकास के लिए अधिग्रहित करने का प्रस्ताव दिया है जो पूरी तरह से मनमाना, अन्यायपूर्ण और पर्यावरण के खिलाफ है।

याचिका में इस बात पर जोर दिया गया है कि चिड़ियाघर बड़ी संख्या में 100 साल से अधिक पुराने पेड़ों का घर है, जो हॉर्नबिल, बुलबुल, सनबर्ड, प्रिनिया, विवेर, एग्रेस्ट जैसी कई लुप्तप्राय:/संरक्षित पक्षी प्रजातियों का निवास स्थान हैं। पेड़ों की कटाई से पक्षियों का बसेरा उजड़ने के साथ ही पर्यावरण को अपूरणीय क्षति होगी। न्यायमूर्ति शिवकुमार सिंह और डॉ. अफरोज अहमद विशेषज्ञ सदस्य की पीठ ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नोटिस जारी कर चार सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। साथ ही मामले की रिपोर्ट के लिए प्रधान मुख्य वन संरक्षक, आयुक्त कोटा संभाग एवं सदस्य सचिव राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के एक–एक प्रतिनिधि की संयुक्त समिति गठित कर साइट का दौरा कर छह सप्ताह के भीतर तथ्यात्मक और कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। एनजीटी ने मामले में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को प्रमुख पक्षकार मानते हुए प्रतिवादी संख्या 6 के रूप में तत्काल जोड़ने के भी निर्देश दिए। मामले में अगली सुनवाई 26 अगस्त 2025 को होगी। उल्लेखनीय है कि जाजू ने प्राचीन चिड़ियाघर का अवलोकन कर पुराने विशालकाय पेड़ों एवं विलुप्त होते पक्षियों की प्रजातियों के संरक्षण के लिए एनजीटी की शरण ली थी।

सार-समाचार

मोतीलाल मीना का स्वागत किया

कोटा, (निसं)। श्री मीना समाज विकास समिति कोटा द्वारा मोतीलाल मीना को भारत सरकार द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड में स्वतंत्र निदेशक नियुक्त करने पर स्वागत सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर समिति द्वारा उनको माला साफा पहनाकर मोमेन्टो प्रदान कर सम्मान स्वागत किया गया मोतीलाल मीना द्वारा अवगत कराया कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का अति-महत्व है। कोई भी व्यक्ति एवं समाज शिक्षा के बिना आगे नही बढ़ सकता मैं भी आज शिक्षा के बल पर इस मुकाम पर पहुच पाया हूँ। विगत वर्षों में मीना समाज द्वारा जय मीनेष आदिवासी विश्वविद्यालय निर्माण कर संचालित किया है। जो शिक्षा के क्षैत्र में मील का पत्थर साबित होगा, इसके निर्माण के समय मुझे भी इससे जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ जिसमें मैने स्वयं का योगदान प्रदान किया एवं अन्य लोगों से भी योगदान दिलवाया है मैं समाज को आष्वस्त करवाना चाहता हूँ कि मैं समय-समय पर सामाजिक गतिविधियों में भाग लेता रहूंगा तथा जय मीनेष विश्वविद्यालय को सशक्त बनाने के लिए प्रयास करूगा जिससे इसकी विश्वस्तरीय पहचान बन सकें इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष आर.डी.मीना, पूर्व जिला जज रमेश मीना, पूर्व जिला प्रमुख कमला मीना एवं भरत मारन, सीआई जगदीश मीना, हंसराज मीना, रामस्वरूप मीना, हेमराज मीना, मांगीलाल मीना, हरिप्रकाश मीना, बंशीलाल मीना, लक्ष्मीनारायण मीना, राधेश्याम मीना, जयपुर से हरिनारायण मीना, एन.आर. मीना, रामस्वरूप विनायका आदि समाजबंधु उपस्थित रहे।

'मंत्रीजी मुकंदरा टाइगर रिजर्व में बाघों का कुनबा बढ़ाइये'

कोटा, (निसं)। बाघ बचाओं बाघ बढ़ाओ अभियान के संयोजक कुन्दन चीता, हाड़ौती पर्यावरण संरक्षण के संभागीय अध्यक्ष श्याम मनोहर हरित ने वन और पर्यावरण मंत्री राजस्थान सरकार से मांग की है कि बहुत संघर्ष करने के बाद कोटा को टाईगर रिजर्व मिला था, लेकिन वन विभाग की लापरवाही से यहां बाघ और उसके बच्चे अकाल मौत मारे गए उसके बाद वन विभाग मुकंदरा टाईगर रिजर्व में बाघो की संख्या को नहीं बढ़ा पा रहा है, कुनो नेशनल पार्क में छोड़े गए चीतों की तर्ज पर यहां भी एक साथ कई बाघ और बाघिन को छोड़ा जाए तो मुकन्दरा हिल टाईगर रिजर्व बाघों से आबाद हो सकता है, रणथम्भौर टाइगर रिजर्व में बाघो की संख्या ज्यादा होने के कारण उनका क्षेत्र कम पड़ने के कारण रोज बाघों की लड़ाई हो रही है जो बाघों की मौत का कारण बन रही है और इनमें से कई बाघ तो आदमखोर बन चुके है, इस कारण कई बाघ और बाघिन को मुकंदरा में छोड़ा जाना चाहिए। मुकंदरा टाइगर रिजर्व की उपेक्षा होने के कारण हाड़ौती के पर्यावरण प्रेमियों में भारी रोष है, बाघ बचाओ बाघ बढ़ाओं अभियान के संयोजक कुन्दन चीता, हाड़ौती पर्यावरण संरक्षण के संभागीय अध्यक्ष श्याम मनोहर हरित ने चेतावनी दी है की यदि मुकंदरा को बाघ और बाघिन का बड़ा परिवार नहीं मिलता है, तो कोटा में वन विभाग के अधिकारियों को चेन से नहीं बैठने दिया जाएगा, इन्होंने बताया कि पर्यावरण दिवस के पूर्व हाड़ौती की धारा पर आंदोलन की शुरुआत की जाएगी।

विद्यार्थियों ने 10वीं बोर्ड परीक्षा में दम दिखाया

कोटा, (निसं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित कक्षा 10वीं के परीक्षा परिणामों में एलबीएस स्कूल, कोटा ने एक बार फिर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्था का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि से विद्यालय परिसर में हर्ष और गर्व का माहौल रहा। संस्था के चेयरमैन कुलदीप माथुर ने जानकारी दी कि विद्यालय के छात्रा याशिका ने 92.83 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं छात्र नितिन चौधरी ने 92 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय स्थान और इंशात मेघवाल ने 91.50 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। कुल 73 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त की, जो विद्यालय की उत्कृष्ट शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रमाण है। विद्यालय के निदेशक सुदर्शन माथुर ने कहा कि यह शानदार परिणाम हमारे शिक्षण तंत्र की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की मेहनत और अभिभावकों के विश्वास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि संस्था भविष्य में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्राचार्य रघुवीर प्रसाद नागर ने विद्यालय की सफलता का श्रेय विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग को दिया। सुरेन्द्र नागर ने बताया कि परिणाम की घोषणा के पश्चात विद्यालय में मिठाइयाँ बाँटकर एक-दूसरे को बधाईयाँ और शुभकामनाएँ दी गई।

आरोपी को पांच वर्ष का कारावास

कोटा, (निसं)। विशिष्ट न्यायालय एनडीपीएस कोटा के न्यायाधीश रामपाल चौधरी ने अफीम तस्करी के आरोपी को पांच वर्ष के कठोर कारावास एवं 50,000 जुर्माने की सजा से दंडित किया है। विशिष्ट लोक अभियोजक महेंद्र सिंह निर्भय ने बताया कि 19 जुलाई 2019 को थाना जीआरपी कोटा ने प्लेटफार्म नंबर 1 कोटा रेलवे स्टेशन पर खड़ी ट्रेन नम्बर 19039 अवध एक्सप्रेस ट्रेन के जनरल कोच से एक शख्स को मय बैग डिटेन किया। शख्स से उसका नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम राकेश सिंह पुत्र रामसिंह निवासी गांव परीक्षा थाना माता वसैया जिला मुरैना मध्यप्रदेश का होना बताया। यात्रा बाबत पूछा तो चौहमेला से आना और सवाई माधोपुर जाना बताया। उसकी तलाशी ली तो अभियुक्त के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ अफीम बरामद की। अफीम का शुद्ध वजन 500 ग्राम हुआ। जिसको जब्त कर पुलिस ने अनुसंधान के पश्चात अभियुक्त राकेश सिंह के विरुद्ध धारा 8/18 एनडीपीएस एक्ट में आरोप पत्र न्यायालय में पेश किया। जिसमें अभियोजन पक्ष की ओर से प्रकरण में कुल 11 गवाह लेखबद्ध करवाए गए और कुल 36 दस्तावेज प्रदर्शित करवाएं। न्यायालय ने मामले में निर्णय देते हुए अभियुक्त सिंह को 5 वर्ष के कठोर कारावास और 50000 जुर्माने की सजा से दंडित किया।

अधिवेशन आयोजित

छबड़ा (निसं)। राजस्थान धाकड़ महासभा के तत्वावधान में खानपुर में अधिवेशन आयोजित हुआ। जिसमें छबड़ा से बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने भाग लिया। यहां धाकड़ समाज के युवाओं में तेजी से पनप रही प्री-वेडिंग शूट प्रथा पर तुरंत प्रभाव से रोक लगाने का संकल्प पारित किया गया। जिसका समारोह में मौजूद बड़ी संख्या में समाजबंधुओ ने एक साथ हाथ उठाकर समर्थन किया। सेवानिवृत व्याख्याता शंकरलाल नागर ने चल रही कुप्रथा के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि धाकड समाज में भी अन्य समाजों की तरह धाकड़ युवाओं में भी आज हर शादी में यह कुप्रथा लोकप्रिय प्रथा बन गई है, जिसमें दूल्हा और दुल्हन शादी से कुछ समय पहले एक प्रोफेशनल फोटोग्राफर से अपनी तस्वीरें और वीडियो खिंचवाते हैं। फिर ये फोटो शादी के समय गैलरी में लगाए जाते हैं। कल्पना करें कि शादी हुई नही ओर युवा पहले ही मिलन कर रहे है, यदि किसी कारणवश रिश्ता, रिश्ता नही रहें तो लड़की और परिवार के सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

पुण्यतिथि पर सेवा कार्य किए

बूंदी (निसं)। चार दशक तक हाडीती के दिग्गज नेता रहे पूर्व मंत्री स्वर्गीय पंडित ब्रज सुंदर शर्मा की 30वीं पुण्यतिथि पर आज राजकीय सामान्य चिकित्सालय में उनके परिजनों ने मरीज को फल, जूस वितरित किया। गर्मी में राहत के लिए प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ प्रभाकर विजय को दो कूलर भेंट किए। इस दौरान स्वर्गीय ब्रज सुंदर शर्मा की पुत्रवधू राष्ट्रीय महिला आयोग पूर्व अध्यक्ष ममता शर्मा, समृद्ध शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार विजयंत आमेरा, नगर परिषद उपसभापति लटूर भाई, पूर्व सभापति हिना अगवान, समाजसेवी रोशन लाल भड़कतिया, पार्षद रोहित बैरागी, आनंदी लाल मीणा, रविंद्र चतुर्वेदी, एडवोकेट गोपाल गुर्जर आदि लोग मौजूद रहे।

प्रियांशु ने 96.83 प्रतिशत अंक प्राप्त किए

छबड़ा (निसं)। आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय का दसवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। प्रधानाचार्य अमृतलाल मीणा ने बताया कि दसवीं बोर्ड परीक्षा में 73 बालकों में से 61 भैया प्रथम श्रेणी, 12 भैया द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। प्रियांशु केलवा ने 96.83 अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। शौर्य शर्मा ने 93.67, दिवेश मालव ने 93.67, हर्षित नागर ने 93.50, विनीत कुमार मीणा ने 91.83, अनुपम मीणा ने 90.67 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

कोटा विकास प्राधिकरण का 1650 करोड़ रूपये का बजट पारित

■ दो नई आवासीय योजनाएं लॉन्च

कोटा विकास प्राधिकरण की बैठक में नन्दग्राम एवं रस्टिक फार्म योजना लॉन्च की गई है।

कोटा, (निसं)। कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए) की चतुर्थ बैठक बुधवार को संभागीय आयुक्त एवं प्राधिकरण अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह शेखावत की अध्यक्षता में केडीए सभा कक्ष में आयोजित की गई। बैठक में कोटा के इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट के लिए 1650 करोड़ रूपये का बजट पारित किया गया। साथ ही, दो नई आवासीय योजनाएं भी लॉन्च की गई।

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि प्राधिकरण द्वारा आवंटित भूखंड में नियत समयावधि में निर्माण नहीं करने से खाली प्लॉट में जल भराव होता है और किसी तरह की जनहानि एवं मौसमी बीमारियां फैलने की आशंका रहती है संबंधित कनिष्ठ अभियंता द्वारा जल भराव वाले प्लॉट चिन्हित किए जाएंगे एवं वहां मिट्टी भराई के खर्च की वसूली पट्टाधारक से की जाएगी। मिट्टी भराई का खर्च एवं समयावधि में निर्माण नहीं करने पर निर्माण शास्ति की वसूली की जाएगी। साथ ही, खाली प्लॉट में जल भराव के कारण किसी प्रकार की जनहानि होने पर संबंधित पट्टाधारक के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज करवाई जाएगी। बैठक में निर्णय लिया गया कि जिन भूखंड आवंटियों ने आवंटन की शर्तों की पालना नहीं की है उनके खिलाफ लैंड रेवेन्यू एक्ट के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। आवंटन शर्तों के अनुसार लम्बे समय तक निर्माण नहीं होने एवं आवंटन की शर्तों के उल्लंघन पर नियमानुसार भूखंड निरस्त किए जाने की कार्यवाही भी की जा सकती है।

कार्य गुणवत्ता की थर्ड पार्टी जांच होगी-बैठक में निर्णय लिया गया कि प्राधिकरण के कार्यों की गुणवत्ता जांच के लिए थर्ड पार्टी इंस्पेक्शन करवाया जाएगा। इसके लिए आईआईटी एवं प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज के विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी।

नन्दग्राम एवं रस्टिक फार्म योजना लॉन्च-इस अवसर पर कोटा विकास प्राधिकरण द्वारा दो नई आवासीय योजनाएं भी लॉन्च की गई। इसमें "नन्दग्राम" योजना एयरपोर्ट रोड पर बड़गांव के पास लॉन्च की गई है। इसमें अफोर्डेबल हाउसिंह को प्रोत्साहित करने के लिए ईडब्ल्यूएस एवं एलआईजी श्रेणी के 46 भूखंड एवं एमआईजी श्रेणी के 19 भूखंड उपलब्ध होंगे। इस योजना में पार्क, फेसिलिटी एवं फुटकर दुकानें भी प्रस्तावित की गई हैं। यह योजना 36 मीटर चौड़ी सड़क पर स्थित है जो बड़गांव को बूंदी रोड से जोड़ती है।

केडीए की दूसरी योजना "रस्टिक फार्म" बल्लोप, बूंदी रोड़ पर होगी। इसमें 18 फार्म हाउस एवं एक क्लब हाऊस प्रस्तावित है। फार्म हाऊस का क्षेत्रफल 1500 से 3000 वर्ग मीटर होगा। बैठक में जिला कलेक्टर बूंदी अक्षय गोदारा, केडीए आयुक्त ऋषभ मंडल, केडीए सचिव कुशल कोठारी, भूमि अवाप्ति अधिकारी मालविका त्यागी, निदेशक वित्त नीतू सिंह, निदेशक अभियांत्रिकी रविन्द्र माथुर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जयपुर रेलवे स्टेशन के पास एक व्यक्ति से 150 ग्राम अवैध मेफैड्रोन बरामद

कोटा, (निसं)। राजस्थान में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक लगाने के अपने सतत प्रयासों के तहत केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सी.बी.एन.) राजस्थान के जयपुर सेल के अधिकारियों ने स्टेशन रोड, जयपुर रेलवे स्टेशन के पास एक व्यक्ति को रोका, जिससे 150 ग्राम अवैध एम.डी. (मेफैड्रोन) बरामद किया गया तथा उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह कार्यवाही नरेश बुन्देल, उप नारकोटिक्स आयुक्त, कोटा (राज.) के मार्गदर्शन में की गई। उन्होने बताया की सीबीएन को एक विशेष सूचना मिली की एक व्यक्ति जयपुर रेलवे स्टेशन के निकट स्टेशन रोड पर आपूर्ति के लिए अवैध एम.डी. (मेफैड्रोन) ले जा रहा है। उन्होने बताया की इस कार्यवाही के लिए (सी.बी.एन.) जयपुर के अधिकारियों की एक टीम गठित की गई और 27 मई 2025 को उस व्यक्ति को पकड़ने के लिए टीम को रवाना किया गया। टीम द्वारा संदिग्ध व्यक्ति को जयपुर रेलवे स्टेशन के निकट स्टेशन रोड पर रोका गया और उसके सामान की तथा व्यक्तिगत तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसके स्पोर्ट्स शूज के इनसोल के नीचे दो पॉलीथीन बैग में छिपाकर रखा हुआ 150 ग्राम वजन का अवैध एम.डी. (मेफैड्रोन) बरामद किया गया। कानूनी औपचारिकताएं पूर्ण करने के पश्चात बरामद अवैध एम.डी. (मेफैड्रोन) को एन.डी.पी.एस. अधिनियम, 1985 के अंतर्गत जब्त कर लिया गया है तथा उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया।

न्यायालय जिला न्यायाधीश, कोटा, राजस्थान

483/27-05-2025 CM 56/2025

श्रीमती ममता रूनवाल आयु-60 वर्ष पत्नी श्री प्रदीप रूनवाल, निवासी- एफएच-185, स्कीम नम्बर- 54, विजय नगर, इन्दौर (म.प्र.) - 452010 -- प्रार्थीया

-- बनाम --

1. हुकुमचन्द लोढा आयु- 89 वर्ष पुत्र श्री चांदमल लोढा निवासी- मकान नं.- 301, बजाजखाना, रामपुरा, कोटा (राज.)- 324006
2. अंजना लोढा आयु- 55 वर्ष पत्नी स्व. श्री कमल कुमार लोढा निवासी मकान नं.-301, बजाजखाना, रामपुरा, कोटा (राज.)-324006
3. रिजू लोढा आयु- 22 वर्ष पुत्री स्व. कमल कुमार लोढा निवासी- मकान नम्बर- 301, बजाजखाना, रामपुरा, कोटा (राज.)- 324006
4. सर्वसाधारण

- अप्रार्थीगण

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा - 276 भारतीय उत्तराधिकारी अधिनियम बाबत् जारी किये जाने प्रोबेट

:: जनरल नोटिस ::

हर आम व खास को सूचना दी जाती है न्यायालय हाजा में प्रार्थीया ममता रूनवाल ने उपरोक्त शीर्षक का प्रोबेट आवेदन पत्र पेश कर कथन किया है कि प्रार्थीया को स्व. कमल कुमार ने ग्राम बिल्लौराखुर्द प.ह.नं.-2 तहसील खण्डवा जिला पूर्व निमाड़ के भाग की, ग्राम पंचायत बिल्लौराबुजुर्ग में स्थित खसरा नम्बर- 43/2 रक्बा 1.70 हैक्टेयर में से पश्चिमी की 1.00 हैक्टेयर, खसरा नम्बर- 112/1 रक्बा 0.45 हैक्टेयर एवं खसरा नम्बर- 112 /2 रक्बा 0.6 हैक्टेयर में से पश्चिम की 0.55 हैक्टेयर कुल किता-3 रक्बा 2.00 हैक्टेयर आराजी के बाबत् दिनांक-12.08.2008 को प्रार्थीया के पक्ष में वसीयतनामा निष्पादित किया था, कमल कुमार का दिनांक- 29.04.2022 को देहान्त हो गया है। प्रार्थीया कमल कुमार की वसीयत के आधार पर न्यायालय जिला न्यायाधीश कोटा में प्रोबेट हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतः हर खासो आम को सूचना दी जाती है कि यदि किसी व्यक्ति को उक्त प्रोबेट जारी किये जाने में किसी प्रकार की आपत्ति व उज्र ऐतराज हो तो वह व्यक्ति दिनांक- 01-08-2025 को समय प्रातः 10.30 बजे पर न्यायालय हाजा में असालतानया वकालतन रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति पेश करें, अन्यथा आवेदन स्वीकार कर प्रोबेट प्रमाण पत्र जारी कर दिया जायेंगा।

यह सूचना पत्र न्यायालय की मुद्रा व मेरे हस्ताक्षर से आज दिनांक 23-05-2025 को न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया हैं।

कोटा — जिला न्यायाधीश, जिला कोटा

शालिनी गौतम को पुनः महिला कांग्रेस कोटा शहर की जिलाध्यक्ष नियुक्त किया

शालिनी गौतम

कोटा, (निसं)। राजस्थान प्रदेश महिला कांग्रेस द्वारा जारी की गई नवनियुक्त कार्यकारिणी सूची में शालिनी गौतम को पुनः महिला कांग्रेस कोटा शहर की जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। आभार व्यक्त करते हुए गौतम ने अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्षा अल्का लांबा, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस महासचिव राखी गौतम एवं राजस्थान महिला कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सारिका सिंह का विशेष आभार प्रकट किया।

इस मौके पर शालिनी गौतम ने कहा कि मैं सभी शीर्ष नेताओं की आभारी हूं जिन्होंने मुझ पर दोबारा विश्वास जताते हुए यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी। यह न केवल मेरे लिए सम्मान की बात है, बल्कि संगठन के प्रति मेरी जवाबदेही को भी और बढ़ाता है। संघठन ने मुझे आज तक जो भी दायित्व सौंपा, उसे मैंने पूरी निष्ठा, समर्पण और लगन से निभाया है। मैं यह विश्वास दिलाती हूं कि आने वाले समय में भी मुझे जो भी कार्य सौंपा जाएगा, उसे मैं पूर्ण निष्ठा से निभाऊंगी।

इससे पूर्व उन्हें 20 अक्टूबर 2023 को पहली बार इस पद की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उनके कुशल नेतृत्व, संगठनात्मक दृढ़ता और निरंतर सक्रियता को देखते हुए प्रदेश नेतृत्व ने एक बार फिर उन्हें यह दायित्व सौंपा है। इस अवसर पर सैकड़ों महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं कांग्रेसजन उनके स्वनिवास पहुंचे और ढोल-नगाड़ों, फूल-मालाओं और आतिशबाजी के साथ जोरदार स्वागत किया।

सभी ने मिठाई खिलाकर बधाई दी और उनके आगामी कार्यकाल की सफलताओं की कामना की। इस अवसर पर नवदुर्गा महिला मण्डल व कामनापूर्ण गणेश महिला मण्डल द्वारा महावीर नगर विस्तार योजना स्थित कामनापूर्ण गणेश मंदिर परिसर में ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत कर माला व साँफा पहनाकर मिठाई खिलाकर अभिनंदन किया, इस मौके पर कमलेश कुमारी, लाड़ कंवर गोचर, डॉ.गुरिंदर कौर अंबालवी, अंजना गौतम, आशा, विद्यावती, लता वनवानी, संतोष देवी, शीला गौतम, संगीता संतवानी आदि महिला कार्यकर्ता मुख्य रूप से मौजूद रही। यूथ कांग्रेस के प्रदेश कॉ-ऑर्डिनेटर आशीष गुर्जर द्वारा यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ तथा पूज्य सिंधी समाज कोटा दक्षिण के अध्यक्ष निरंजन मेघानी द्वारा माला पहनाकर एवं सॉफा बांधकर स्वागत किया गया। शालिनी गौतम वर्तमान में नगर निगम कोटा दक्षिण के वार्ड 65 की पार्षद भी हैं। वे लंबे समय से समाजसेवा, महिला सशक्तिकरण एवं संगठन निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाती आ रही हैं।

वीसी के जरिए बोर्ड परीक्षा परिणाम घोषित हुआ

कोटा, (निसं)। शिक्षा एवं पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर ने बुधवार को कोटा से वीसी के माध्यम से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर राजस्थान की दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित किया। बोर्ड की माध्यमिक एवं माध्यमिक व्यावसायिक परीक्षा 2025 के साथ-साथ प्रवेशिका परीक्षा 2025 का परीक्षा परिणाम भी बुधवार को जारी कर दिया गया। परीक्षा परिणाम 93.60 प्रतिशत रहा जो अब तक का सर्वश्रेष्ठ परिणाम है। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि शिक्षा तंत्र के सुदृढ़ीकरण, विद्यालय में अनुशासन और नवाचारों के कारण परीक्षा परिणाम बेहतर रहा है। उन्होंने उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। वहीं, जो विद्यार्थी अपेक्षानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाए उन्हें संदेश दिया कि वे हताश न हों बल्कि मेहनत के साथ तैयारी करते हुए अगले वर्ष श्रेष्ठ प्रदर्शन करें।

शिक्षा मंत्री ने बताया कि माध्यमिक व माध्यमिक व्यावसायिक परीक्षा में 10 लाख 94 हजार 186 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं जिसमें से 10 लाख 71 हजार 460 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। माध्यमिक एवं माध्यमिक व्यवसायिक परीक्षा का परिणाम 93.60 प्रतिशत रहा जिसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 93.16 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 94.08 रहा।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

क्रमांक: LU2012/KOT/2025-26/100987 **लोक सूचना** दि.28.05.2025

श्रीमती GURVINDER KAUR BHULLAR पत्नी श्री NAIB SINGH BHULLAR जाति SIKH निवासी BHULLAR FARM, NEAR ARYAN COLLEGE, KAITHOON ROAD SUKHPURA ने इस कार्यालय मे नीचे उल्लिखित भूमि का पर्यटन इकाई प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारी के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात्:-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं.	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	क्षेत्रफल (हैक्टे.)
1.	सुखपुरा, लाडपुरा (कोटा)	SMT. GURVINDER KAUR W/O SH NAIB SINGH CASTE- JATSIKH SA. DADABADI KOTA KHATEDAR	123/16	10000	1
				कुल	1

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियो को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क औरा राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारो के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर अपनी एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियम समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव मे यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जावेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 28/05/2025 को जारी की गयी। प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना नाम इरफान अन्सारी से बदलकर नया नाम इरफान अली रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-इरफान अली पुत्र मोहम्मद हनीफ अन्सारी अनिल फोटो स्टूडियो की गली दहीखेड़ा झालावाड़

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना नाम अनुश्री गुप्ता से बदलकर नया नाम अनुश्री बनर्जी रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-अनुश्री बनर्जी पत्नी राहुल गौड़ सी 507 स्काई पार्क सनप्राईम पोरवाल भवन के सामने सुभाष नगर इन्द्रपुरा कोटा

ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट से बेहतर रेल एवं सड़क कनेक्टिविटी पर चर्चा हुई

कोटा, (निसं)। कोटा ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट की प्रगति को लेकर बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में एयरपोर्ट की सड़क एवं रेल नेटवर्क से बेहतर कनेक्टिविटी के साथ ही इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट पर उद्योग जगत, कोचिंग संस्थानों, पर्यटन, व्यापार, रेलवे, होटल इंडस्ट्रीज, एसएसआई एसोसिएशन, बस ऑपरेटर एसोसिएशन, एनएचएआई, पीएचईडी सहित विभिन्न संस्थानों एवं विभागों के प्रतिनिधियों से सुझाव आमंत्रित किए गए। बैठक की अध्यक्षता अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) मुकेश चौधरी ने की। जीएम प्रोजेक्ट एयरपोर्ट ऑथिरिटी ऑफ इंडिया सुनील प्रसाद ने बताया कि 440.086 हैक्टेयर भूमि पर बनने वाले इस एयरपोर्ट के लिए तकनीकी निविदा आमंत्रित कर ली गई है जो इस सप्ताह के अंत तक खुलेगी। उन्होंने कहा कि निविदा खुलने के बाद एयरपोर्ट निर्माण का कार्य शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने एयरपोर्ट के आसपास के क्षेत्रों में किए जाने वाले विकास कार्यों के बारे में भी जानकारी दी। बैठक में एयर कनेक्टिविटी सहित एयरपोर्ट को सड़क एवं रेल मार्ग से कनेक्ट करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई। बैठक में एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर संदीप अग्रवाल ने बेहतर रोड कनेक्टिविटी के लिए भविष्य कार्ययोजना की जानकारी दी। एसएसआई एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष गोविंदराम मित्तल, एसएसआई एसोसिएशन के वर्तमान अध्यक्ष मनोज राठी, होटल फेडरेशन ऑफ राजस्थान के संभागीय अध्यक्ष अशोक माहेश्वरी, ट्रांसपोर्ट कम्पनीज एसोसिएशन के अध्यक्ष मधुसुदन खंडेलवाल, लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष अंकुर गुप्ता, व्यापार महासंघ बूंदी के अध्यक्ष निरंजन जिंदल, श्री राम रेयन्स के जीएम मनोज विक्रम सिंह, सीएफसीएल के डीजीएम विकास पी.भोले, कोटा पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष तरूमीत सिंह बेदी, कोचिंग संस्थानों के प्रतिनिधियों एवं अन्य ने एयरपोर्ट से जुड़े महत्वपूर्ण सुझाव एवं फीडबैक प्रस्तुत किए।

बैठक में आरटीओ कोटा मनीष कुमार शर्मा, नगर निगम के उपायुक्त जवाहर जैन, महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र हरिमोहन शर्मा, सीएमएचओ कोटा डॉ.नरेन्द्र नागर, पीएचईडी, पीडब्ल्यूडी, पर्यटन, वन, शिक्षा, श्रम एवं अन्य विभागों से जुड़े अधिकारियों ने अपने सुझाव दिए।

जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित

बूंदी (निसं)। जिला प्रशासन एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के तत्वावधान में सुदामा सेवा संस्थान में बुधवार को वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण व सशक्तिकरण के लिए 'अटल वयो अभ्युदय' योजनान्तर्गत एक जिला स्तरीय कार्यशाला हुई

कार्यशाला का शुभारम्भ जिलाध्यक्ष रामेश्वर मीणा एवं नगर परिषद की सभापति सरोज अग्रवाल ने माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष एवं सभापति ने वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण और उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। इस दौरान, जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी हुकमचंद जाजौरिया ने बताया कि कार्यशाला में चिकित्सा विभाग से मनोचिकित्सक डॉ. मोहम्मद जावेद ने वरिष्ठ नागरिकों के मानसिक स्वास्थ्य की जांच और उसके महत्व पर जानकारी दी। कार्यशाला में आयुर्वेद विभाग के अधिकारियों एवं योग प्रशिक्षक द्वारा उपस्थित वरिष्ठजनों को योग एवं ध्यान की विभिन्न क्रियाएं करवाई गई। आईसीआईसीआई बैंक के प्रतिनिधियों ने वित्तीय योजनाओं, डिजिटल साक्षरता, बैंकिंग साइबर सुरक्षा और साइबर अपराधों से बचाव के तरीकों के बारे में फिल्म प्रदर्शन के माध्यम से जानकारी दी।

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11/विक्रय/2025/71 दिनांकः-28.05.2025

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

कोटा विकास प्राधिकरण कोटा द्वारा योजना श्रीनाथपुरम-ई आवासीय भूखंड संख्या 117 का आवंटन पत्र क्रमांक 314 दिनांक 12.08.2004 को श्री संजय खण्डेलवाल पुत्र श्री मदन लाल गुप्ता के नाम आवंटन किया गया था। श्री संजय खण्डेलवाल की मृत्यु दिनांक 05.04.2012 को हो गयी है। मृत्यु उपरांत श्री संजय खण्डेलवाल पुत्र श्री मदन लाल गुप्ता के विधिक वारिसान द्वारा प्रस्तुत वसीयतनामा, मृत्यु प्रमाण पत्र, वसीयती गवाहों के शपथ पत्र, आईडी इत्यादि दस्तावेजों के आधार पर श्रीमती अल्का खण्डेलवाल पत्नी स्व. श्री संजय खण्डेलवाल द्वारा उक्त भूखंड संख्या 117 श्रीनाथपुरम-ई आवासीय अपने नाम नामहस्तान्तरण करने की स्वीकृति नगर विकास न्यास कोटा से चाही जा रही है।

अतः जरीये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त भूखंड संख्या 117 योजना श्रीनाथपुरम-ई का नाम हस्तांतरण श्रीमती अल्का खण्डेलवाल पत्नी स्व. श्री संजय खण्डेलवाल के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी। उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11/विक्रय/2025/72 दिनांकः-28.05.2025

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

कोटा विकास प्राधिकरण कोटा द्वारा योजना बसंत विहार केशवपुरा-9 आवासीय आवास संख्या 1638 का आवंटन पत्र क्रमांक 736 दिनांक 18.04.1985 को श्रीमती गुलाब बाई पत्नी स्व. श्री जगन्नाथ के नाम आवंटन किया गया था। श्रीमती गुलाब बाई की मृत्यु दिनांक 18.05.2005 को हो गयी है। मृत्यु उपरांत श्रीमती गुलाब बाई पत्नी स्व. श्री जगन्नाथ के विधिक वारिसान द्वारा प्रस्तुत रजिस्टर्ड रिलीज डीड (हक त्याग पत्र), मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, आईडी इत्यादि दस्तावेजों के आधार पर श्री राम किशन शर्मा पुत्र स्व. श्री जगन्नाथ द्वारा उक्त आवास संख्या 1638 बसंत विहार केशवपुरा-9 आवासीय अपने नाम नामहस्तान्तरण करने की स्वीकृति नगर विकास न्यास कोटा से चाही जा रही है।

अतः जरीये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त आवास संख्या 1638 योजना बसंत विहार केशवपुरा-9 का नामहस्तांतरण श्री राम किशन शर्मा पुत्र स्व. श्री जगन्नाथ के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी। उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पक्षकारा श्रीमती मुमताज बेगम पत्नी श्री अब्दुल कलाम निवासी गली नं. 14 महात्मा गांधी कालोनी माला फाटक अर्जुनपुरा कोटा द्वारा श्री शिवकुमार आत्मज श्री प्रताप रॉय से उनके स्वामित्व की दुकान संख्या 8 (भूतल) छोटी सब्जीमण्डी तहसील लाडपुरा कोटा 182.81 वर्गफीट क्रय की जा रही है।

यह कि श्री शिवकुमार आत्मज श्री प्रताप रॉय ने उक्त दुकान का क्रय श्रीकृष्ण गुप्ता से दिनांक 01.12.2007 को जर्ये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र किया था। उक्त दुकान जिस सम्पत्ति का भाग है श्रीकृष्ण गुप्ता की पुश्तैनी सम्पत्ति थी। जिसका अन्य कोई दस्तावेज उनके पास उपलब्ध नहीं है।

यह कि क्रेता द्वारा उक्त सम्पत्ति को क्रय करने हेतु उक्त सम्पत्ति को रहन रखकर स्मॉल फाईनेंस बैंक से ऋण प्राप्त किया जा रहा है। उक्त सम्पत्ति को रहन करने के संबंध में यदि किसी भी व्यक्ति, बैंक, संस्था या अन्य को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वह अधोहस्ताक्षरकर्ता को 7 दिवस के भीतर सूचित कर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

भवदीय

कमल गुप्ता एडवोकेट

एम.पी.ए. 53 महावीर नगर द्वितीय कोटा

मो. 9414288889

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ-15/कृ.भू.रू./2025/340 **विज्ञप्ति** दिनांकः-28.05.2025

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम कुन्हाड़ी योजना "हिम्मत नगर" खसरा नं. 99 में स्थित भूखंड संख्या सी-83 के नाम हस्तान्तरण करने हेतु न्यास कार्यालय में श्री मोहन लाल पुत्र श्री लखीराम दुसेजा निवासी मकान नं. 2-यू-6 महावीर नगर तृतीय कोटा राज. द्वारा ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। उक्त भूखंड का नाम हस्तांतरण क्रमांक UIT-KOTA/FY 22-23/MUT/1709 दिनांक 01.11.2022 को श्रीमती कीर्ति नागर पत्नी श्री मुकुल नागर के पक्ष में जारी किया गया था। नाम हस्तांतरी द्वारा उक्त भूखंड का बेचान जर्ये पंजीकृत मुख्तार आम श्रीमती दीप्ति जैन पत्नी श्री आदेश जैन द्वारा जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 19.04.2024 से श्री मोहन लाल पुत्र श्री लखीराम दुसेजा को कर दिया गया है।

अतः श्री मोहन लाल पुत्र श्री लखीराम दुसेजा के नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण

रंग भरो प्रतियोगिता

कोटा, (निसं)। विश्व सिन्धी सेवा संगम, कोटा चैप्टर की ओर से देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत एक कार्यक्रम राजस्थान की शान महाराणा प्रताप के जन्मोत्सव के संदर्भ में किया गया, जिसमें दो अलग-अलग स्थानों पर 150 बच्चों ने महाराणा प्रताप के चित्र में रंग भरो प्रतियोगिता में भाग लिया। पहला कार्यक्रम श्री झूलेलाल मंदिर, विज्ञान नगर में महिला समिति श्री झूलेलाल मंदिर समिति के सहयोग से व दूसरा कार्यक्रम श्री करणीनगर बाल आवास, कोटड़ी में श्री करणीनगर विकास समिति के सहयोग से आयोजित किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं के 11 श्रेष्ठ विजेता रहे। दृष्टि सहेतिया, मिशिका गोयल, दिवयाना भोजवानी, किशिका, हर्षित चोथवानी, रिविका कृपलानी, शिवराज जाटव, रोहित बैरवा, कमल, हरीशंकर मजूमदार, काव्या भंडारी। विजेताओं को विश्व सिन्धी सेवा संगम, कोटा चैप्टर के अध्यक्ष प्रेम भाटिया, निदेशक, मीडिया, किशन रतनानी, विमल परियानी, महिला मण्डल श्री झूलेलाल मंदिर की संरक्षक रीटा अजवानी आदि ने पुरस्कृत किया।

पश्चिम मध्य रेल

खुली निविदा सूचना सं.-ईएल/टीआरडी/50/एनआईटी दिनांकः 26.05.2025

भारत के राष्ट्रपति के लिए अथवा उनकी ओर से वरि. मं.वि.इंजी (क.वि.) प.म.रे. कोटा निम्न कार्य के लिए खुली मोहरबंद ई-निविदा आमंत्रित करता है। निविदा संख्या एवं कार्य का नाम- ईएल/ टीआरडी /50/11 (2025-26) - ऐन्यूअल मैन्टेनेंस कान्ट्रैक्ट ऑफ फायर इक्स्टिंगविशर फॉर टी आर डी डिपार्टमेंट इन कोटा डिविजन, कार्य की अनुमानित लागत- 6,73,092/-, निविदा बंद होने की दिनांक एवं समय- दिनांक 20/06/2025 को 15:30 बजे, वेबसाईट का विवरण तथा नोटिस बोर्ड का स्थान जहां से निविदा का संपूर्ण विवरण देखा जा सकें। https://www.ireps.gov.in वरि. मं. वि. इंजी. (क.वि.) कोटा प्रथम तल मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय प.म.रे. कोटा, ऑफर केवल ई-टेंडरिंग के माध्यम से https://www.ireps.gov.in पर स्वीकार किये जायेंगें। निविदादाता के पास क्लास ।।। डिजिटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट होना चाहिए एवं आईआरईपीएस पोर्टल पर रजिस्टर्ड होना चाहिए। कोई भी निविदा मैनुअली स्वीकार नहीं है। निविदा डालने से पहले टेंडर दस्तावेजों की स्पेशल कंडीशन व शर्तें अवश्य पढ़ लें।

(हस्ता.)

वरि. मं. वि. इंजी (क.वि.)

पश्चिम मध्य रेल, कोटा

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

आवास फाइनेंसियर्स लिमिटेड

(CIN: L65922RJ2011PLC034297) पंजीकृत एवं निगमित कार्या.: 201-202, द्वितीय मंजिल, साउथ एंड स्क्वायर, मानसरोवर इंडस्ट्रीयल एरिया, जयपुर-302020

Aavas FINANCIERS LTD — SAPNE AAPKE, SAATH HAMAARA

निविदा सूचना

वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व प्रतिभूतिहित प्रवर्तन अधिनियम 2002 के शर्त व नियम 8 (6) के अन्तर्गत अचल सम्पत्ति की नीलामी विक्रय सूचना

आमजन तथा एवं व्यक्ति विशेष देनदारों तथा जमानती को सूचित किया जाता है कि निम्न उल्लेखित प्रत्याभूत ऋणदाता की गिरवी / प्रभारित अचल सम्पत्ति, जिसका भौतिक कब्जा आवास फाइनेंसियर्स लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया था, प्रत्याभूत ऋणदाता "जैसे है जहाँ है" जो भी और जैसा भी है के आधार पर विक्रय करने जा रहे हैं। प्रकरणों का विशेष विवरण इस प्रकार हैं-

ऋणी/सह-ऋणी/जमानती/ बंधककर्ता का नाम	बकाया राशि दिनांक	13(2) डिमांड नोटिस की राशि व दिनांक	कब्जे की दिनांक	संपत्ति का विवरण (प्रतिभूति आस्ति)	संपत्ति का आरक्षित मूल्य	संपत्ति की धरोहर राशि	निविदा खोले जाने की तिथि व समय	निविदा खोलने, जमा कराने व नीलामी का स्थान आवास फाईनेन्सियर्स लि.
राजेश जोशी, मीनू जोशी खाता सं. : LNKTO02222-230248259	₹ 9,57,892.00/- बकाया दिनांक 24 मई 2025	6 अक्टूबर 2024 ₹ 782435/- बकाया दिनांक 4 अक्टूबर 2024	2 अप्रैल 2025	फ्लेट नं. 741 सातवी मंजिल 'पाराशवनाथ अपार्टमेन्ट', रेजीडेन्सी सेनल रोड़, ग्राम-नान्ता, तहसील-लाड़पुरा, जिला-कोटा, राजस्थान 324008 क्षेत्रफल 336.70 वर्ग फीट	₹ 942760/-	₹ 94276/-	प्रातः11 बजे से दोपहर 1 बजे तक दिनांक 30 जून 2025	पहली मंजिल, डी-25, सुखधाम कॉलोनी, यूनियन बैंक के उपर, 80 फीट रोड, पुलिस लाईन के पास, कोटा पिन कोड 324001 राजस्थान-भारत

निविदा की शर्तें : 1. निविदा में सहभागिता करने हेतु इच्छुक खरीददार अपनी निविदा शाखा में उपलब्ध निविदा प्रपत्र जो कार्य दिवस के समय शाखा से प्राप्त किये जा सकते हैं, में अपने द्वारा निवेदित मूल्य लिखकर सीलबंद लिफाफे में जिसके ऊपर "टेण्डर ऑफर सम्पत्ति का विवरण" लिखा हो के साथ उपरोक्त वर्णित धरोहर राशि के चैक/बैंकर्स चैक/माँग ड्राफ्ट जो कि प्राधिकृत अधिकारी, आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के पक्ष में जयपुर में देय हो, नीलामी से पहले कार्य दिवस के दौरान आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के उपरोक्त पते पर जमा करा कर निविदा में भाग ले सकते हैं। प्राप्त निविदाएं आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के उपरोक्त पते पर उपस्थित निविदाकर्ताओं के समक्ष खोली जावेगी। इसके पश्चात निविदाकर्ताओं के बीच खुली बोली लगवाने का विकल्प प्राधिकृत अधिकारी के पास सुरक्षित है। यदि बोली सफल नहीं होती है तो असफल निविदाकर्ताओं को उसी दिन धरोहर राशि लौटा दी जायेगी। 2. सफल निविदाकर्ता को 25 प्रतिशत राशि (धरोहर राशि सहित) प्राधिकृत अधिकारी के द्वारा सफल निविदाकर्ता के नाम की उद्घोषणा करने के तुरन्त पश्चात, जमा करवाना होगा तथा शेष राशि विक्रय की पुष्टि के दिन से 15 दिन के अन्दर जमा कराना आवश्यक है, अन्यथा जमा राशि बिना सूचना बैंक में जब्त समझी जायेगी। 3. प्राधिकृत अधिकारी को बिना कोई कारण बताये बोली स्वीकार अथवा अस्वीकार करने या निविदा स्थगित करने का पूर्ण अधिकार है। निविदा जमा कराने व निविदा खोलने वाली दिनांक को राजकीय अवकाश होने की स्थिति में निविदा अगले कार्य दिवस वाले दिन होगी। 4. सम्पत्ति के निरीक्षण हेतु सम्पत्ति अथवा निविदा से संबंधित जानकारी हेतु इच्छुक निविदाकर्ता, आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड 201-202, दूसरी मंजिल, साउथ एण्ड स्क्वायर, मानसरोवर इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर-302020 **पुष्पेन्द्र मीणा-9875896876 नोटः-** यह सूचना पत्र ऋणी/जमानती/बंधककर्ताके लिए भी नियम 9 (1)/8(6) के अधीन 15/30 दिवस का सूचना पत्र माना जायेगा कि यदि बैंक को देय राशि की अदायगी उनके द्वारा नहीं की जाती है तो उक्त संपत्ति निविदा द्वारा उपरोक्त दिनांक पर ही विक्रय की जाएगी।

स्थान : जयपुर **दिनांकः 29.05.2025** **प्राधिकृत अधिकारी आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड**

महिला डॉक्टर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

- पिता के निधन के बाद से तनाव में थी, मौत के कारणों का खुलासा नहीं हुआ

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में महिला डॉक्टर की संदिग्ध परिस्थितियों ने मौत हो गई। मथुरा दास हॉस्पिटल के गर्ल्स हॉस्टल में डॉक्टर शव मिलने से दहशत फैल गई। डॉक्टर कविता वर्मा (31) यहां पीजी की तैयारी कर रही थी। मंगलवार रात उनके कमरे से बदबू आने पर दूसरी डॉक्टर्स ने प्रशासन को इसकी जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने गेट तोड़ा तो डॉक्टर कविता की बॉडी पलंग पर पड़ी मिली। आशंका जताई जा रही है कि उनकी मौत दो दिन पहले हुई थी। परिवार ने बताया कि पिता के निधन के बाद से वो तनाव में थी। हालांकि, मौत के कारणों का अभी खुलासा नहीं हुआ है। सरकारी हॉस्टल में डॉक्टर की मौत की जानकारी के बाद देर रात पुलिस व अन्य अधिकारी मौके पर जांच में जुटे रहे।

शास्त्री नगर थाना पुलिस के अनुसार कविता सवाईमाधोपुर की रहने वाली थी। वो फीमेल हॉस्टल-9 की पांचवीं मंजिल पर रूम में रहती थी। उनके कमरे से बदबू आने लगी तो दूसरी डॉक्टर्स ने उनका गेट खटखटाया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई थी। डॉ. कविता के भाई वीरेंद्र व अन्य रिश्तेदारों ने बताया कि उनके पिता एलआईसी में एओ के पद पर थे।

करीब साढ़े तीन साल पहले उनकी ट्रेन से नीचे गिरने की वजह से मौत हो गई थी। उसके बाद से ही कविता परेशान रहने लगी थी। पढ़ाई में भी बैक आने से वो तनाव में रहती थी। रविवार रात को घरवालों से हुई बातचीत में वो सही लग रही थी। परिवार ने बताया कि कविता काफी इंट्रोवर्ट थी। पढ़ाई और पिता के निधन के कारण परेशान रहती थी। जानकारी के अनुसार डॉक्टर कविता 2014 बैच की स्टूडेंट थी। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया कि कविता को एमबीबीएस पूरी करने में नौ साल लग गए। मार्च में इंटर्नशिप पूरी हुई थी। इन दिनों वो यहीं हॉस्टल में रहकर 15 जून को होने वाली पीजी एग्जाम की तैयारी कर रही थी। पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

बजरी माफियाओं के हमले में घायल कॉन्स्टेबल की मौत

25 मई को बजरी माफिया ने ऑन ड्यूटी कॉन्स्टेबल सुनील को डंपर से कुचल दिया था, अस्पताल में भर्ती कराया था

- गंभीर रूप से घायल कॉन्स्टेबल की 2 दिन इलाज के बाद 27 मई की रात को मौत हो गई
- गार्ड ऑफ ऑनर के साथ शव को अंतिम विदाई दी, पैतृक गांव लोहावट शव लेकर पहुंचे परिजन
- पुलिस ने घटनाक्रम में चार लोगों को गिरफ्तार किया, जिसमें सरपंच पति हापूराम भी शामिल है

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में बजरी माफियाओं के हमले में घायल हुए कॉन्स्टेबल ने मंगलवार की रात उपचार के बीच अस्पताल में दम तोड़ दिया। 25 मई को बजरी माफिया ने ऑन ड्यूटी कॉन्स्टेबल को डंपर से कुचल दिया था। पेट और पैर के ऊपर से गाड़ी निकाल दी थी। गंभीर रूप से घायल कॉन्स्टेबल की 2 दिन इलाज के बाद 27 मई की रात को मौत हो गई।

अवैध बजरी खनन एवं परिवहन को लेकर माफियाओं हमले का शिकार हुए पुलिस कॉन्स्टेबल सुनील के शव का बुधवार दोपहर में मथुरादास माथुर अस्पताल में पोस्टमार्टम किया गया। उसके बाद शव को पुलिस लाइन लाया गया, जहां पर पुलिस के उच्चाधिकारियों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिए जाने के साथ शव को अंतिम विदाई दी गई। शव को लेकर उसके परिजन मूल गांव लोहावट के लिए रवाना हो गए। शाम को राजकीय सम्मान के साथ अंत्येष्टि की गई। कॉन्स्टेबल सुनील के निधन होने के समाचार के बाद समूचे पुलिस विभाग में शोक की लहर छा गई थी। रविवार को लूणी थाना क्षेत्र में नाकाबंदी के समय अवैध बजरी डंपर चालक ने कुचल दिया था। वह बुरी तरह घायल हो गया था और दो दिन तक जीवन मृत्यु से संघर्ष करते हुए उसकी मंगलवार की देर रात मौत हो गई। पुलिस ने इस पूरे घटनाक्रम में चार लोगों को गिरफ्तार किया है, जिसमें सरपंच पति हापूराम भी शामिल है।

जानकारी के अनुसार रविवार को लूणी थाना क्षेत्र के खेकाड़ली गांव की मूलजी की प्याऊ के पास पुलिस लाइन से चैतक ड्यूटी में तैनात सुनील खिलेरी ने एक बजरी से भरे डम्पर को रोकने का प्रयास किया था, लेकिन चालक और उसके साथी डम्पर को भगाकर ले गए। जिस पर पुलिस ने पीछा भी किया और उसको रोका, लेकिन इसी दौरान डम्पर चालक ने रोकने के लिये डम्पर के आगे खड़े कॉन्स्टेबल को कुचलने हुए मौके से भाग छूटा। साथी कॉन्स्टेबल अशोक उसको तुरंत चेतक वाहन में डालकर एमडीएम अस्पताल लेकर पहुंचा था, जहां पर आला पुलिस अधिकारी भी मौके पर पहुंचे और उसके सघन इलाज की व्यवस्था की लेकिन दो दिन तक जिन्दगी और मौत तथा दो तीन छोटे बड़े आपरेशन के बावजूद उसकी जान नहीं बच पाई। प्रकरण में तीन लोगों की गिरफ्तारी बाकी है।

हिस्ट्रीशीटर ने स्कॉर्पियो चढ़ाकर हैड कॉन्स्टेबल को मारने का प्रयास किया

- हैड कॉन्स्टेबल और साथ वाले सिपाही ने जैसे-तैसे खुद को बचाया, स्कार्पियो में चार लोग सवार बताए जाते हैं
- शहर के भदवासिया रोड पर पुलिस द्वारा की जा रही संदिग्ध वाहनों की चैकिंग के दौरान हुई घटना, वीडियो वायरल

जोधपुर, (कासं)। शहर के भदवासिया रोड पर पुलिस द्वारा की जा रही संदिग्ध वाहनों की चैकिंग के समय स्कॉर्पियो चालक ने पुलिस के हैड कॉन्स्टेबल को मारने का प्रयास किया। उसे रूकने का इशारा किए जाने पर दो बार गाड़ी को रोका और फिर आगे पीछे करते हुए गाड़ी को भगाया। हैड कॉन्स्टेबल और साथ वाले सिपाही ने जैसे तैसे खुद को बचाया। स्कार्पियो में चार लोग सवार बताए जाते हैं। जिसमें एक हिस्ट्रीशीटर शामिल है। बाकी अन्य को भी नामजद किया गया है। घटनाक्रम का सीसीटीवी फुटेज और वीडियो वायरल हुए हैं।

जानकारी के अनुसार माता का थान पुलिस थाने के हेड कॉन्स्टेबल प्रतापराम और साथी सिपाही मंगलवार को भदवासिया रोड पर संदिज्ध वाहनों की चैकिंग में लगे हुए थे। तब एक सफेद रंग की स्कॉर्पियो को संदिग्ध मानकर उसे रूकने का इशारा किया। उसके चालक ने गाड़ी को अचानक से हेड कॉन्स्टेबल के समीप लाकर रोका और फिर दो-तीन मीटर तक गाड़ी को लेकर चला गया। वहां रूकते देखते हेड कॉन्स्टेबल प्रतापराम और साथी पीछे गए तब चालक ने फिर से गाड़ी को बैक किया। इस पर प्रतापराम ने खुद को बचाया। इसके बाद फिर से गाड़ी को आगे तकरीबन 10-12 मीटर तक चलाया और फिर बैक लेकर हेड कॉन्स्टेबल प्रतापराम और साथी सिपाही को कुचलने का प्रयास किया। मगर उन्होंने पीछे हटकर अपनी जान बचाई। इसके बाद स्कार्पियो चालक गाड़ी को तेजी से भगा ले गया। इसमें सवार व्यक्तियों की पहचान राहुल कच्छवाह , गौरव चौहान, नीरज और सुनिल उर्फ बाडा चौहान के रूप में की गई है। इनके खिलाफ माता का थान थाने में राजकार्य में बाधा डालने का प्रकरण दर्ज किया गया है। इसमें एक आरोपी माता का थान थाने का हिस्ट्रीशीटर बताया गया है।

117 अभ्यर्थियों को अंतिम अवसर

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 अंतर्गत जारी हिंदी, संस्कृत, सामाजिक विज्ञान, अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान विषय की विचारित सूचियों में सम्मिलित अभ्यर्थियों में से 117 अभ्यर्थियों द्वारा ऑनलाइन विस्तृत आवेदन पत्र आयोग को प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। आयोग द्वारा इन अभ्यर्थियों की सूची आयोग की वेबसाइट पर जारी कर ऑनलाइन विस्तृत आवेदन पत्र प्रस्तुत करने का अंतिम अवसर दिया गया है। इस संबंध में विस्तृत सूचना तथा संबंधित अभ्यर्थियों की सूची आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आयोग की उप सचिव चित्रा जैनानी ने बताया कि अंतिम अवसर के तहत ऑनलाइन विस्तृत आवेदन पत्र भरने का लिंक 30 मई को खोला जाएगा जो कि 2 जून 2025 तक ही सक्रिय रहेगा।

हवालात से हथकड़ी सहित गोलीकांड का संदिग्ध आरोपी फरार

- प्रकरण में लापरवाही बरतने पर एसपी ने खेड़ली मोड़ थाना प्रभारी रामनिवास मीणा को लाइन हाजिर कर जांच कमेटी गठित कर दी
- छौंकरवाडा कलां अचार व्यापारी गोलीकाण्ड में पकड़ा गया था संदिग्ध आरोपी

हलैना, (निसं)। जयपुर नेशनल हाइवे-21 स्थित भुसावर उपखण्ड क्षेत्र में खेड़ली मोड़ थाना से पुलिस को चकमा देकर गांव छौंकरवाडा कलां अचार व्यापारी गोलीकाण्ड में पकड़ा गया संदिग्ध आरोपी हाथों में हथकड़ी लगे ही फरार हो गया, जिससे पुलिस महकमे में हड़कम्प मच गया। प्रकरण में लापरवाही बरतने पर जिला पुलिस अधीक्षक मृदुल कच्छावा ने खेड़ली मोड़ थाना प्रभारी रामनिवास मीणा को लाइन हाजिर कर जांच कमेटी गठित कर दी।

एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि जयपुर नेशनल हाइवे-21 पर बाइक सवार अज्ञात तीन बदमाशों ने शनिवार-रविवार की रात गांव छौंकरवाड़ा कलां पर इसी गांव निवासी अचार विक्रेता देवनारायण जाटव पुत्र चरन जाटव को गोली मार दी, जिससे विक्रेता घायल हो गया। उन्होंने बताया कि इस प्रकरण में गांव पथैना निवासी सुरजीत सिंह को हिरासत में ले रखा था, जो संदिग्ध आरोपी था, जिससे थाना पर पूछताछ जारी थी, जो बुधवार को तड़के में अंधेरे का लाभ उठाते हुए पुलिस को चकमा देकर हवालात से हथकड़ी लगे भाग गया। सूचना पर जिले में नाकाबंदी कराई और संदिग्ध आरोपी के गांव पथैना सहित अनेक गांवों में दबिश दी, लेकिन संदिग्ध आरोपी पकड़ में नहीं आया।

लाइन हाजिर हुए थाना प्रभारी रामनिवास मीणा से जब पूछा कि क्या हवालात से आरोपी फरार हो गया है, इस थाना प्रभारी मीणा का जवाब था कि कहां जायेगा आरोपी, उसे जल्द पकड़ लेंगे। पुलिस से भागा आरोपी कभी सुरक्षित बच नहीं सकता है। संदिग्ध आरोपी सुरजीत सिंह निवासी पथैना ने हवालात से भाग कर स्वयं को सिद्ध कर दिया कि वह छौंकरवाडा कलां व्यापारी गोलीकाण्ड के अज्ञात आरोपी से मिला हुआ है।

युवक का अपहरण करने वाला आरोपी गिरफ्तार, एक फरार

अजमेर, (कासं)। रामगंज थाना पुलिस ने फिरौती के लिए घर के बाहर से युवक का अपहरण करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 12 घंटे अंदर के अपहरण हुए युवक को मुक्त करा लिया, जबकि मामले में अपहरणकर्ता का साथी एक आरोपी फरार है। पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है।

- पुलिस ने 12 घंटे में अपहरण हुए युवक को मुक्त कराया, 25 लाख की फिरौती मांगी थी
- पुलिस के मुताबिक रुपए के लेनदेन को लेकर युवक का अपहरण किया था

रामगंज थाना पुलिस ने फिरौती के लिए युवक का अपहरण करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया।

एडिशनल एसपी सिटी हिमांशु जांगिड़ बुधवार को मामले का खुलासा करते हुए बताया कि 25 लाख रुपए की फिरौती के लिए रामगंज थाना क्षेत्र से एक युवक के अपहरण का पुलिस ने 12 घंटे के अंदर ही पर्दाफाश करते हुए मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर युवक को सुरक्षित छुड़ा लिया। एएसपी सिटी हिमांशु जांगिड़ ने प्रेस वार्ता में मामले का खुलासा करते हुए बताया कि मामलमे में साथी आरोपी फरार है, पुलिस उसकी सरगर्मी से तलाश में जुटी है। एएसपी जांगिड़ ने बताया कि पीड़ित अजय नगर निवासी चंद्रप्रकाश लखानी ने रामगंज थाना पुलिस को शिकायत दी थी कि उसका बेटा अक्षय लखानी 26 मई को घर से निकला था, लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटा। उसी दौरान परिवार के पास एक कॉल आया, जिसमें अक्षय के अपहरणकर्ताओं ने उसको जान से मारने की धमकी दी और 25 लाख रुपये की फिरौती की मांग की। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम का गठन किया गया। कार्रवाई करते हुए टीम ने तकनीकी निगरानी व सूचना तंत्र के माध्यम से अक्षय की लोकेशन ट्रेस की। पुलिस को पता चला कि आरोपी अक्षय को कायड़ गांव की ओर ले गए हैं। तत्परता दिखाते हुए पुलिस ने जयपुर-अजमेर हाइवे के पास से अक्षय लखानी को दस्तयाब कर लिया और मुख्य आरोपी राजपाल सिंह राठौड़ को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उसका एक साथी मौके से फरार हो गया। पुलिस के मुताबिक रुपए के लेनदेन को लेकर युवक का अपहरण किया गया था।

अक्षय साउथ अफ्रीका में काम करता था, जहां पर उसके साथ दिनेश माहेश्वरी से रुपए के लेन देन को लेकर विवाद था। दिनेश ने रुपए लेने के लिए साउथ अफ्रीका से अजमेर कुंदन नगर निवासी देवेंद्र और रामगंज निवासी राजपाल से संपर्क किया था। इस लेनदेन के रुपए लेने के लिए दोनों का भी हिस्सा था। अपहरणकर्ताओं ने फिरौती के रुपए लेने के लिए जयपुर में एक मेडिकल स्टोर पर अनीष चौधरी को भेजा था, लेकिन अनीष को यह नहीं पता था कि रुपए किस बात के लिए जा रहे हैं। पुलिस इस मामले में जांच कर रही है।

दुष्कर्मी गिरफ्तार

अनूपगढ़, (निसं)। पुलिस ने नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मोहित कुमार (21) के रूप में हुई है। थानाधिकारी ईश्वर प्रसाद जांगिड़ ने बताया कि पीड़िता के पिता ने 26 अप्रैल को शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि मोहित कुमार उनकी नाबालिग बेटी को बहला-फुसलाकर ले गया है।

Municipal Board Of Bagru (Jaipur)

क्रमांकः- न.पा.ब./2025-26/366 दिनांक :- 27.05.2025

:: E- Notice Inviting Bid ::

Bid for Municipal Board Of Bagru For Works (01) Date 27.05.2025 invited form interested bidders Date 05.06.2025 Upto 6:00 AM Other particulars of the bid may be invited on the procurement portal, http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in of the state.

UBN CODE :- DLB2526WSOB06040

Executive officer
Nagar palika Bagru

Raj.Samwad/C/25/3165

कार्यालय नगर परिषद, चितौड़गढ़

क्रमांक / SBM / 2025-26 / 2088 दिनांक 27.05.2025

ई-निविदा सुचना

नगर परिषद द्वारा पंजीकृत / अनुभवी फर्मो से SBM अनुभाग के कार्य हेतु ऑनलाईन ई-निविदा आमत्रित की जाती है। कार्य की अनुमानित राशि, निविदा विकय, प्राप्ति, अन्य शर्ते एवं जानकारी परिषद की वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.raj.nic.in पर रखी जा सकती है। कार्य की अनुमानित व्यय 1944000/- रूपये है।

1. UBN DLB2526SLOB05965

राज.संवाद / सी / 25 / 3186 आयुक्त, नगर परिषद चित्तौडगढ

Office of the Superintendent Engineer and Project Manager WCDC, Karauli

No. :- 525 Date :- 26/05/2025

NOTICE INVITING BID
NIB No. : 09/2025-26

Bids for anicut, pakka checkdam work Project MJSA 2.0 Phase – 1 Block – Shri Mahaveerji of estimated value INR 27.62 Lacs [01 Package] are invited from interested bidders up to 06.00 PM, 05-05-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, departmental website.

NIB CODE :- WSC2526A0183
UBN NO. :- WSC2526WSRC00325

Raj.Samwad/C/25/3203 Superintending Engineer and Project Manager

कार्यालय नगर परिषद, जालोर (राज0)

क्रमांकः नपजा / स्टोर / ई-टेण्डर / 2025 / 1216 दिनांकः 15.05.2025

-:: ई निविदा सूचना संख्या 01/2024-25 ::-

यतः नगर परिषद, जालोर द्वारा निम्नलिखित कार्य / सामग्री की आपूर्ति हेतु माल एवं सेवाओं के उपापन के लिए दर संविदा वित्तीय वर्ष 2024-25 (दिनांक 31.03.2025) के लिए कार्य दर (रेट कान्टेक्ट) हेतु राजस्थान लोक सेवा उपापन पारदर्शिता नियम 2013 के अन्तर्गत विभिन्न फर्मो, ठेकेदारो, अधिकृत डिलरों, अधिकृत डिलरों, पंजीकृत / प्राधिकृत फर्मो / आपूर्तिकर्ताओं / डिलरों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डर प्रकिया के अन्तर्गत निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा की सम्पूर्ण विवरण / शर्त ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल https://eproc.rajasthan.gov.in/ व https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी तथा डाउनलोड की जा सकती है।

UBN No. - DLB2526A1401

आयुक्त
नगरपरिषद, जालोर

राज.संवाद / सी / 25 / 3239

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड

(राजस्थान सरकार का उपक्रम) एसबीयू एण्ड पीसी-लिग्नाईट, सी-स्कीम, जयपुर- 302005(राज.)

फोन नम्बरः (0141)2227938/2227710,2227715, फैक्सः (0141)2227360,2227761, E-mail: jaipur.rsmml@rajasthan.gov.in

ई-निविदा सूचना दिनांक :- 28/05/2025

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
F.6(1)69/cc/2025/05 dated 27.05.2025 UBN No. MML2526SLOB00024	कसनाऊ-मातासुख लिग्नाईट परियोजना, नागौर (पिन कोडः 341001) पर पाँच (05) बोलेरो -07 सीटर या समकक्ष वाहन (ए. सी. डीजल टैक्सी परमिट) मय वाहन चालक किराये पर लेने हेतु। (उपरोक्त वाहन का मॉडल वर्ष 2022 या उसके बाद का होना आवश्यक है) अनुमानित राशि-105.00 लाख, धरोहरराशि - 210,000/-, निविदा राशि - 4720/-(अहस्तान्तरणीय) (जीएसटी सहित) और रू. 2000/- (ई टेण्डर शुल्क एमडी, आरआईएसएल)

उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.rsmm.com अथवा www.sppp.rajasthan.gov.in अथवा www.eproc.rajasthan.gov.in अथवा प्रबंधक (यांत्रिकी अनुबंध) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।

राज.संवाद/सी/25/3196 उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा.)

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, कोटा (राज.)

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, दादाबाड़ी परिसर, सरकारी आवास, ए-1, कोटा (राज0)

फोनः- 0744-2461550, Email:- eemhkota@ymail.com, ee-mh-kota@gov.in

क्रमांक :-116 **निविदा सूचना संख्या-03/2025-26** दिनांक :- 16.05.2025

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एंव स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत राज्य विभिन्न चिकित्सालयों पर रू0 397.24 लाख के 02 विद्युत कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकाके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदको, जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट पर www.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेबसाईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

Sr. No.	UBN No.
1	(NRH2526WSOB00265)
2	(NRH2526WSOB00267)

अधिशाषी अभियंता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कोटा

DIPR/C/6657/2025

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, वृत्त-करौली

क्रमांक : 722 दिनांक : 20/5/2025

निविदा सूचना संख्याः 01/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से बजट वर्ष 2025-26 की घोषणा सं. 19.00/2025-26 के तहत जिला करौली में अटल प्रगति पथ निर्माण कार्य दोष निवरण अवधि 10 वर्ष सी.सी. कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग मे पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न सक्षम श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा से संबंधित समस्त विवरण बेवसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" एवं "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से बेवसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

(जयलाल मीना)
अधीक्षण अभियन्ता, सा0नि0वि0 वृत्त-करौली

DIPR/C/6492/2025

कार्यालय नगरपालिका बाली (पाली) राज.

Tel.- (02938)-222045 E-mail : municpalboardbali@yahoo.in

क्रमांक : न.पा.बा./2025-26/504 दिनांक : 26.05.2025

-: संशोधित ई-बोली सूचना MB-03/2025-26 :-

नगरपालिका बाली की ओर से वित्तिय वर्ष 2025-26 हेतु मान्यता प्राप्त पंजीकृत उपर्युक्त श्रेणी के ठेकेदारों से ई-बोली द्वारा 28 कार्यो की ई-बोली सूचना आमंत्रित की गई थी। जिसमें प्रशासनिक कारणों से ई-बोली के दिनांक व समय में संशोधन किया जाता है। जो निम्नानुसार है। ई-बोली सूचना की विस्तृत जानकारी विभाग की वेबसाईड www.sppp.rajasthan.gov.in or www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Bid Online Download/ Submission Start Date & Time	13.05.2025 समय 11.00 AM बजे से
Bid Online Download/ Submission End Date & Time	02.06.2025 समय 2.00 PM बजे तक
Physically Submission of the D.D. For EMD Processing Fee/ Tender Fee	02.06.2025 समय 5.00 PM बजे तक
Techanical Bid Opening Date & Time	03.06.2025 समय 3.00 PM बजे तक
Financial Bid Open Date & Time	Will be Intimated to the Techanicaly Qualified Bidder

राज.संवाद / सी / 25 / 3166 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता जन स्वा.अभि. विभाग खण्ड सॉचौर

एन.एच. 68, PHED Campus, सॉचौर (जालोर)

Phone No. no. No 02979-283624, E-mail. eephedscr@gmail.com

क्रमांक-अ.अ./जन स्वा./ सॉ/ निविदा/2025-26/697 दिनांक-16/5/25

ई-निविदा सुचना संख्या- 04/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से खण्ड सॉचौर के अधीन विभिन्न कार्य कराने हेतु लोक निर्माण विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से ई-टेण्डरिंग प्रकिया में ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है जिसका विवरण निम्नानुसार हैः-

कार्यालय का नाम व स्थान	अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग खण्ड सांचौर
निविदा का कार्य	Construction And Commissioning Of All Type Of Tube Wells under division Sanchore
निविदा की कुल लागत (राशि लाखो में)	कुल निविदा 01 रु. 105.00 लाख
निविदा प्रपत्र वेबसाईड पर उपलब्ध एवं ऑन लाईन सबमिट की दिनांक	19.05.2025 से 02.06.2025 को 13.00 बजे तक
निविदाएँ खोलने की तिथी व समय	03.06.2025 को 11.00 बजे से
UBN No	PHE 2526 WSRC 02442

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http://dipr.rajasthan.gov.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा एवं भरा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल वेबसाईड पर ही अपलोड किये जायेगे।

(पृथ्वीसिंह) अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, खण्ड सॉचौर

DIPR/C/6663/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग विद्युत खण्ड उदयपुर

क्रमांकः-टीएस/D-03 दिनांक :- 19.05.2025

निविदा सूचना संख्याः 03/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युत कार्य. (4) अनुमानित राशि 208.25 लाख मे दोष निवारण एवं उनके सुधार (मय डी.एल.पी अवधि) शर्त सहित निविदा प्रपत्र में अंकित क्रसं 4 के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग में लिफ्ट कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको के अतिरिक्त मुल निर्माता कम्पनी या उनके अधिकृत डिलर्स एवं समान कार्य में अनुभवी फर्मे (with OEM Authorization) एवं Annexure-III में वर्णीत समस्त संवेदक भाग ले सकेंगे व क्रसं 1,2 व 3 के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग में उपयुक्त श्रेणी एवं उप श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया में ऑन लाईन निर्धारित प्रपत्र में निविदा दिनांक 31.05.2025 को सांय 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाइट http://dipr.rajasthan.gov.in/tender.asp व www.eproc.rajasthan.gov.in तथा http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल http://sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in वेबसाईट पर अपलोड किये जोयंगें।

NIB code:- PWD2526A0652

UBN:- PWD2526WSOB01969, PWD2526WSOB01971, PWD2526WSOB01983, PWD2526WSOB01984

अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि विद्युत खण्ड उदयपुर

DIPR/C/6751/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर खण्ड उदयपुर

क्रमांक :-412 दिनांक :-20.05.2025

NIT No. 03/2025-26
Notice Inviting Bid No. PWDA0688

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से नगर खण्ड उदयपुर के अधीन उपखण्ड चतुर्थ के अन्तर्गत भवन निर्माण/भवन सुदृढ़ीकरण एवं नवीनीकरण कार्य के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूरसंचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त पात्र श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष से पांच वर्ष की गारण्टी अवधि सहित निम्न कार्यो की निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	भवन कार्य-कुल 01 (एक) कार्य
निविदा की कुल लागत	राशि रू. 121.85 लाख
ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एंव अपलोड करने की तारीख	23.05.2025 प्रातः 9.30 बजे से 01.06.2025 सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तारीख	03.06.2025 सांयः 4.00 बजे से

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाइट "http://dipr.rajasthan.gov.in", "http://eproc.rajasthan.gov.in" तथा "sppp.rajasthan.gov.in" पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया "http://eproc.rajasthan.gov.in" पर ऑनलाइन सम्पादित की जावेगी।

UBN NO.- 1. PWD2526S0B02088

(आर. के. मुदंडा)
अधिशाषी अभियंता
सार्वजनिक निर्माण विभाग नगर खण्ड उदयपुर

DIPR/C/6761/2025

कार्यालय, अधीक्षक, सामूहिक चिकित्सालय संघ, अजमेर

क्रमांक-687/लेखा-8/ जलानेचि/2025 दिनांक-14/5/25

ई-बिड सूचना
UBN- MCA2526GLOB00028

ज0ला0ने0 चिकित्सालय, अजमेर केन्द्रीय भण्डार के NRD औषधियों की मांग पूर्ति हेतु NRD औषधियों का क्रय (अनुमानित लागत 02.00 करोड) बोनाफाईड विनिर्माता / प्राधिकृत डीलर/विपणन एजेण्ट/थोक विकेता आदि से ई-बिड आमंत्रित की जाती है। विस्तृत बोली की शर्तें एवं बोली दस्तावेज को वैबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा कर बिड प्रपत्र डाउनलोड किया जा सकता है।

S.No.	Schedule	Detail
01	Estimated cost	Rs. 200.00 Lacks
02	Tender Fees	Rs. 5000/-
03	RISL Processing Fees through e-Gras Challan	Rs. 2000/-
04	Earnest Money Deposit 2%	Rs. 04.00 Lakh (Four Lacks)
05	Bid Publishing Date & Time	15/5/25 at 12:00 PM
06	Document Download Date and Time	15/5/25 at 01:00. NOON
07	Pre-Bid Meeting	20/5/25 at 12.00 PM
06	Document Upload Date and Time	21/5/25 at 02.09M
07	Bid submission Date & Time	10/6/25 at 03.00. PM
08	Physical Tender Fees, Processing Fees Challan Copy Submission Date, Time & Venue	On or Before 10/6/25 Till 04.00 PM Office of The Superintendent, Associated Group of Hospitals, Ajmer
09	Technical Bid Opening Date	11/6/25 at 04.00 PM

अधीक्षक
सामूहिक चिकित्सालय संघ, अजमेर

DIPR/C/6589/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड-जमवारागगढ़

क्रमांक :- 237 दिनांक :- 15.05.2025

ई-टेन्डिरिंग सूचना संख्या 02/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp व www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। FINANCE (G&T) DEPARTMENT NOTIFICATION Jaipur, October 22, 2021 (75A. Additional Performance Security. (1) In addition to Performance Security as specified in rule 75, an Additional Performance Security shall also be taken from the successful bidder in case of unbalanced bid. The Additional Performance Security shall be equal to fifty percent of Unbalanced Bid Amount. The Additional Performance Security shall be deposited in lump sum by the successful bidder before execution of Agreement. The Additional Performance Security shall be deposited through e-Grass, Demand Draft, Banker's Cheque, Government Securities or Bank Guarantee.)

निविदा का कार्य	Tentage Work for VIP Visits in PWD Division Jamwa Ramgarh (Rate Contract)
अनुमानित लागत	राशि रु. 151.92 लाख
कुल धरोहर राशि (रूपयों में)	अनुमानित लागत का 2 प्रतिशत
निविदा आवेदन /डाउनलोड करने की तारीख	सोमवार, 19 मई, 2025 प्रातः 9.30 बजे से बुधवार, 28 मई 2025 सांय 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	सोमवार, 19 मई, 2025 प्रातः 9.30 बजे से बुधवार, 28 मई 2025 सांय 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	शुक्रवार, 30 मई, 2025 को साय 3.00 बजे
प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा शुल्क जमा कराने की प्रक्रिया	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6 (5) / वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क- 8658-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क 0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि 8443-00-108-00-00 ऑफिस आई.डी. 41486

UBN No:- PWD2526WSOB01754

(गजानन्द मीणा)
अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड-जमवारागगढ़ (जयपुर)

DIPR/C/6549/2025

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक, माध्यमिक व्यावसायिक एवं प्रवेशिका परीक्षा-2025 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिकाओं की स्केन फोटो प्रति ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु परीक्षार्थियों के सूचनार्थ

माध्यमिक, माध्यमिक व्यावसायिक एवं प्रवेशिका परीक्षा-2025 का परिणाम दिनांक 28.05.2025 को घोषित किया गया है। संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिका की स्केन फोटो प्रति प्राप्त करने हेतु बिना विलम्ब शुल्क दिनांक 04.06.2025 एवं विलम्ब शुल्क सहित दिनांक 07.06.2025 तक ई-मित्र पर अथवा स्वंय के स्तर पर ऑनलाईन आवेदन कर सकते है। विस्तृत जानकारी, नियम, निर्देष, शर्ते व आवेदन पत्र प्रारुप/प्रक्रिया आदि बोर्ड वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर एवं दिनांक 22.05.2025 को अपलोड की गई विज्ञप्ति में देखे।

सचिव

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा-2025 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिकाओं की स्केन प्रति ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु व माध्यमिक परीक्षा के गणित विषय में पुनः जांच (Re-Examination) के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों के सूचनार्थ

माध्यमिक परीक्षा-2025 में प्रविष्ठ हुए सभी परीक्षार्थी, परीक्षा परिणाम घोषणा तिथि से 07 दिवस में एवं उसके पश्चात् आगामी 03 दिवस में विलम्ब शुल्क से उत्तर पुस्तिका की संवीक्षा कराने एवं संवीक्षा उपरान्त स्कैन प्रति प्राप्त करने हेतु बोर्ड वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर SCRUTINY-2025 लिंक पर नियत तिथि तक (स्वप्रमाणित आई.डी. अपलोड कर) ई-मित्र अथवा अभ्यर्थी स्वंय के स्तर से बोर्ड वेबसाईट पर सीधे ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं। सीधे आवेदन करने पर शुल्क नेट बैंकिंग/डेबिट/क्रेडिट कार्ड से तथा ई-मित्र से आवेदन करने पर शुल्क (सेवा शुल्क सहित) ई-मित्र पर जमा कराना होगा। विस्तृत जानकारी बोर्ड वेबसाईट से ली जा सकती है।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा अधिनियम 1957 के तहत बने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा विनियम 1957 के अध्याय 16 नियम (13) (5) के प्रावधान अनुसार संवीक्षा में उत्तर-पुस्तिकाओं के पुनःजांच (Re-examination) करना समाविष्ट नहीं है। संवीक्षा के अंतर्गत उत्तर पुस्तिका में प्रदत्त अंकों के योग में भिन्नता, अन्दर-बाहर (केजिंग) में भिन्नता, योग में त्रुटि, किसी प्रश्न में अंक नहीं दिये गये हों, उत्तर पुस्तिका/अंकतालिका में प्रदत्त अंकों में भिन्नता आदि त्रुटियों का निवारण करने की दृष्टि से की जाती है। परन्तु उक्त विनियम में संशोधन कर वर्ष-2025 की माध्यमिक परीक्षा के गणित विषय में पुनः जांच (Re-examination) कराने का प्रावधान किया गया है।

अन्तिम तिथि तक प्राप्त सभी आवेदनों को क्रमबद्ध/पंजीकरण कर SMS द्वारा परीक्षार्थी के प्रार्थना-पत्र में अंकित मोबाईल नं. पर पंजीकरण संख्या एवं आवेदित विषयों की सूचना अन्तिम दिनांक के पश्चात दी जावेगी। संवीक्षा की नियत प्रकिया पूर्ण कर प्रतिदिन निस्तारित प्रकरणों का परिणाम/आवेदित विषय की उत्तर-पुस्तिका वेबसाईट पर दिये लिंक पर अपलोड कर आवेदित मोबाईल नं. पर SMS द्वारा 'Password' उपलब्ध करवाया जावेगा। परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तिका ऑनलाईन देखकर डाउनलोड/प्रिन्ट कर सकेगें। ऑनलाईन आवेदन पत्र में परीक्षार्थी अपना स्वंय का सही मोबाईल नम्बर व ई-मेल अंकित करें। मोबाईल नं. व ई-मेल गलत अंकित करने पर परीक्षार्थी स्वंय जिम्मेदार रहेगा। एक मोबाईल नम्बर व ई-मेल को एक बार ही प्रयुक्त किया जा सकेगा। ई-मित्र कियोस्क धारक का मोबाईल नम्बर/ई-मेल दर्ज करना अनुचित एवं नियम विरूद्ध माना जावेगा।

सभी विषयों में संवीक्षा परिणाम का संदेश प्राप्त होने की तिथि से निर्धारित 05 दिवस की अवधि में उ.पु. का अवलोकन कर यदि कोई आपत्ति हो तो निकटतम ई-मित्र द्वारा अथवा सीधे आवेदन-पत्र भरकर/प्रमाण संलग्न कर निर्धारित शुल्क रू. 100/- प्रति विषय के साथ में ऑनलाईन आपत्ति दर्ज कर सकते हैं। ऑफलाईन आवेदन स्वीकार्य नहीं होगें।

वर्ष-2025 में माध्यमिक परीक्षा के गणित विषय में पुनः जांच (Re-Examination) का प्रावधान किया गया है। परीक्षार्थी गणित विषय में संवीक्षा उपरान्त आपत्ति/पुनः जांच (Re-Examination) करवा सकता है। आपत्ति शुल्क रुपये 100/-प्रति विषय तथा पुनः जांच (Re-Examination) शुल्क रुपये 100/-प्रति प्रश्न रहेगा। पुनः जांच (Re-Examination) हेतु आवेदन पत्र में प्रश्न संख्या व पृष्ठ संख्या अनिवार्य रुप से अंकित करें। संवीक्षा परिणाम के SMS/E-mail भेजने की तिथि से 05 दिवस की निर्धारित अवधि में ही आपत्ति/पुनः जांच (Re-Examination) हेतु ऑनलाईन ही आवेदन किये जा सकेगें। ऑफलाईन आवेदन स्वीकार्य नहीं होगें।

नोट : 1. विस्तृत जानकारी, नियम, निर्देश, शर्ते आवेदन पत्र प्रारूप/प्रक्रिया आदि बोर्ड वेबसाईट पर उपलब्ध है। 2. समस्त परीक्षाओं के परिणाम घोषणा दिवस से उक्त निर्धारित समयावधि में आवेदन किया जा सकता है। 3. निर्धारित तिथि के बाद व डाक से प्राप्त आवेदन-पत्र व आपत्ति स्वीकार्य नहीं होंगी। 4. किसी भी प्रकार की जानकारी/आवेदक अपने संवीक्षा की वर्तमान STATUS की जानकारी बोर्ड वेबसाईट पर 'SCRUTINY-2025' लिंक पर प्राप्त की जा सकती है। 5. एक परीक्षार्थी को आवेदन हेतु एक ही अवसर देय होगा। अतः एक बार ही आवेदन में वांछित सभी विषय (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) अंकित करें। 6. संवीक्षा/आपत्ति/पुनः जांच (Re-Examination) में अंकों में कमी अथवा वृद्धि के उपरान्त परिणाम/अंकों में संशोधन होगा तदनुसार परिणाम/संशोधित अंक प्रभावी होगे एवं उसी अनुरुप संशोधित अंकतालिका जारी की जायेगी। 7. संवीक्षा उपरान्त आवेदित विषय/विषयों में अंक परिवर्तन होने अथवा नहीं होने की किसी भी स्थिति में संवीक्षा प्रक्रिया शुल्क लौटाया नहीं जायेगा।

सचिव

हम महाराणा प्रताप के संदेश को पूरी दुनिया तक पहुंचाने का कर रहे काम : भजनलाल शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की रक्षा के लिए राजमहलों का वैभव त्यागकर जंगलों का कष्टमय जीवन जीया, लेकिन आजीवन अपने स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप महान योद्धा, परम स्वाभिमानी और स्वतंत्रता प्रेमी थे। उन्होंने हमें सदैव सत्य, धर्म और राष्ट्रहित के मार्ग पर चलना सिखाया। शर्मा बुधवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में महाराणा प्रताप फाउंडेशन की ओर से आयोजित 'शौर्य गाथा के रंग' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि महाराणा प्रताप जैसे वीर और पराक्रमी योद्धा ने राजस्थान की महान धरती पर जन्म लिया। उनका सम्पूर्ण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणापुंज है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में महाराणा प्रताप फाउंडेशन की ओर से आयोजित 'शौर्य गाथा के रंग' कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

- 'वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने सत्य, धर्म और राष्ट्रिहत के मार्ग पर चलना सिखाया'

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप की वीरता से देश-दुनिया के ख्यातनाम इतिहासकार भी प्रभावित हुए। कर्नल जेम्स टॉड ने महाराणा प्रताप की वीरता की प्रशंसा करते हुए हल्दीघाटी के युद्ध को थर्मोपल्ली और दिवेर के युद्ध को मेवाड़ का मैराथन बताया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप केवल देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में प्रेरणा के स्त्रोत हैं। उनकी देशभक्ति, वीरता एवं शौर्य को काल और भौगोलिक सीमा में नहीं बांधा जा सकता है।

शर्मा ने कहा कि हम महाराणा प्रताप के संदेश को पूरी दुनिया में पहुंचाने का काम कर रहे है। इसे ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों चावंड-हल्दीघाटी-गोगुंदा-कुंभलगढ़-दिवेर-उदयपुर आदि को सम्मिलित करते हुए महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट विकसित कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कोच और खेल विशेषज्ञ तैयार करने के लिए महाराणा प्रताप खेल विश्वविद्यालय की स्थापना करने जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन हमें संप्रभुता और स्वतंत्रता की रक्षा करना सिखाता है। उनके जीवन मूल्यों को आत्मसात कर भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विश्व में मजबूत शक्ति के रूप में पहचान बनाई है। इस शक्ति की एक झलक पूरी दुनिया ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखी। इस ऑपरेशन के माध्यम से पहलगाम में हमारी बहनों का सिंदूर मिटाने वालों को मिट्टी में मिला दिया गया। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद प्रधानमंत्री ने पहली जनसभा महाराणा प्रताप की धरती राजस्थान में की।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सिंधु समझौता रद्द कर पाकिस्तान को साफ कर दिया की पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते। शर्मा ने महाराणा प्रताप की वीरता एवं शौर्य की विरासत को संरक्षित करने और उनके जीवन मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने के सराहनीय कार्य करने के लिए महाराणा प्रताप फाउंडेशन की प्रशंसा की।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को नमन किया एवं पंडित नरेन्द्र मिश्र द्वारा लिखी गई रचना का जिक्र करते हुए कहा कि 'राणा प्रताप इस भरत भूमि, मुक्ति मंत्र के गायक हैं...राणा प्रताप आजादी के अपराजित काल विधायक हैं'।

इस अवसर पर विधायक महेन्द्रपाल मीना सहित महावीर सिंह सरवड़ी, राम सिंह चंदलाई, सुदर्शन सिंह, प्रेमसिंह बनवासा एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

नगरीय निकायों के पुनर्गठन एवं पुनर्सीमांकन से जुड़े प्रस्तावों पर चर्चा

मंत्रीमण्डलीय उप समिति के सदस्य जल संसाधन विभाग के मंत्री सुरेश सिंह रावत, राज्यमंत्री वन विभाग संजय शर्मा, राज्यमंत्री सहकारिता विभाग गौतम कुमार तथा समिति के संयोजक राज्यमंत्री नगरीय विकास विभाग झाबर सिंह खर्रा ने बैठक में जोधपुर, भरतपुर एवं जयपुर संभाग की नगरीय निकायों के पुनर्गठन एवं पुनर्सीमांकन के प्रस्तावों पर समीक्षा एवं विचार विमर्श किया गया।

जयपुर। मंत्रिमण्डल सचिवालय के आदेशों की अनुपालना में बुधवार को स्वायत्त शासन विभाग के सभागार में नगरीय प्रशासन को और अधिक प्रभावशाली, उत्तरदायी एवं समावेशी बनाने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण द्वितीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में राज्य के नगरीय निकायों के पुनर्गठन एवं पुनर्सीमांकन से जुड़े प्रस्तावों पर गहन परीक्षण और विचार-विमर्श किया गया। बैठक में मंत्रीमण्डलीय उप समिति के सदस्य जल संसाधन विभाग के मंत्री सुरेश सिंह रावत, राज्यमंत्री वन विभाग संजय शर्मा, राज्यमंत्री सहकारिता विभाग गौतम कुमार तथा समिति के संयोजक राज्यमंत्री नगरीय विकास विभाग झाबर सिंह खर्रा द्वारा इस बैठक में जोधपुर, भरतपुर एवं जयपुर संभाग की नगरीय निकायों के पुनर्गठन एवं पुनर्सीमांकन के प्रस्तावों पर समीक्षा एवं विचार विमर्श किया गया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में प्रारम्भ की गई इस पहल का मूल उद्देश्य राज्य के नगरीय निकायों को वर्तमान यथार्थ और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना है,ताकि आमजन तक प्रशासन की पहुँच सुलभ हो, स्थानीय विकास को गति मिले और शहरी क्षेत्रों में जीवनस्तर में सार्थक सुधार आए। यह प्रक्रिया न केवल नगरीय प्रशासन को अधिक संगठित और जनोन्मुखी बनाएगी,बल्कि स्थानीय शासन में पारदर्शिता, समावेशिता और उत्तरदायित्व की भावना को भी सुदृढ़ करेगी। यह निर्णय प्रक्रिया राजस्थान को शहरी सुशासन की दिशा में एक नई ऊँचाई तक पहुँचाने की ओर सशक्त कदम है। इस बैठक में स्वायत्त शासन विभाग के प्रमुख शासन सचिव राजेश यादव, निदेशक एवं विशिष्ट सचिव इन्द्रजीत सिंह सहित अन्य उच्च अधिकारी भी उपस्थित रहे।

राज्य सरकार बुजुर्गों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित : अविनाश गहलोत

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक राष्ट्र की नींव हैं, जिस पर वर्तमान खड़ा है और भविष्य निर्मित होगा। हम सब मिलकर एक ऐसा समाज बनाएं जहां बुजुर्गों को न केवल सहारा मिले, बल्कि वे स्वयं को समाज के सक्रिय और गौरवशाली अंग के रूप में अनुभव करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रदेश के बुजुर्गों को लाभान्वित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने बुधवार को इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान के सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण एवं सशक्तिकरण पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित किया।

- 'वरिष्ठ नागरिक राष्ट्र की नींव हैं, जिस पर वर्तमान खड़ा है और भविष्य निर्मित होगा'
- विभिन्न सेशंस में बुजुर्गों को मनोवैज्ञानिक, योग प्रशिक्षक, आहार विशेषज्ञ, सायबर एवं पुलिस अधिकारियों ने दिए विभिन्न पहलुओं पर परामर्श

गहलोत बुधवार को इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान के सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण एवं सशक्तिकरण पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा वृद्ध कल्याण योजना, भक्त श्रवण कुमार कल्याण सेवा आश्रम (डे-केयर सेंटर), माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम- 2007, मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह,

स्वयंसिद्धा आश्रम, राजस्थान राज्य वरिष्ठ नागरिक कल्याण बोर्ड तथा अटल वयो अभ्युदय योजना सरीखी विभिन्न योजनाएं संचालित कर हजारों वरिष्ठजनों को लाभान्वित किया जा रहा है। गहलोत ने कहा कि इन सबके अलावा प्रदेश के संवेदनशील मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में वरिष्ठ नागरिकों के लिए खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, देवस्थान विभाग, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग सहित कई विभागों द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित को जा रही है। उन्होंने कहा कि बुढ़ापा कोई बीमारी नहीं है, यह ताकत और उत्तरजीविशा है, सभी प्रकार के उतार-चढ़ाव और निराशाओं, परीक्षणों और बीमारियों पर विजय है।

अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप राकां ने कहा कि विभाग द्वारा वरिष्ठजनों के कल्याण के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि समाज में हो रहे विभिन्न बदलावों के चलते बुजुर्गों में एकाकीपन और अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। ऐसी दशा से बचाव के लिए बुजुर्ग आर्थोपार्जन के साथ स्वयं को व्यस्त रखें और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें।

कार्यशाला में नामचीन मनोवैज्ञानिक, श्रेष्ठ योग प्रशिक्षक, बेहतरीन आहार विशेषज्ञ, स्वयं सेवी संस्था, पुलिस, सायबर सेल के अधिकारी एवं जिला प्रशासन के अधिकारियों ने योग व ध्यान, मानसिक स्वास्थ्य और निवारक देखभाल सत्र, पोषण व स्वस्थ रूप में वृद्धावस्था, सामाजिक सुरक्षा लाभों के बारे में जागरूकता, वरिष्ठ नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार की रोकथाम और प्रतिक्रिया, सामाजिक-जुड़ाव और समय प्रबंधन के लिए रणनीतियां, वित्तीय योजना और डिजिटल साक्षरता और अंतर पीढ़ीगत सेशंस के जरिए वृद्धजनों को जागरूक किया।

इस अवसर पर निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव बचनेश अग्रवाल, अतिरिक्त निदेशक केसर लाल मीणा, अतिरिक्त निदेशक रीना शर्मा, संयुक्त निदेशक बीपी चंदेल, जोनल हेड आईसीआईसीआई विकास माथुर, यूएनसीपीयू के दिव्यांश गुप्ता सहित कई विषय विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

समरावता उपद्रव प्रकरण में नरेश मीणा की जमानत पर सुनवाई टली

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने समरावता में हुए उपद्रव के मामले में आरोपी नरेश मीणा की जमानत याचिका पर सुनवाई 30 मई तक टाल दी है। जस्टिस प्रवीर भटनागर की एकलपीठ ने यह आदेश नरेश मीणा की द्वितीय जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान नरेश मीणा की ओर से अधिवक्ता महेश शर्मा ने कहा कि एसटी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में माना है कि घटना में पुलिस ने ज्यादती की है। पुलिस ने लोगों को मौके पर जमा होने दिया और बाद में उन पर कार्रवाई कर दी। वहीं आयोग की सिफारिश पर प्रशासन ने पीड़ितों को मुआवजा भी दिया है। प्रकरण में याचिकाकर्ता पर हिंसा का आरोप नहीं है। वहीं जिन अन्य लोगों पर हिंसा का आरोप है, उनमें से कई जमानत पर रिहा हो चुके हैं। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि मामले में गत 11 फरवरी को आरोप पत्र पेश हो चुका है और अदालत ने 14 फरवरी को उसकी जमानत याचिका को खारिज कर दिया था। वहीं अब तक निचली अदालत में ट्रायल आरंभ होकर उस पर चार्ज नहीं लगे हैं। ऐसे में उसे जमानत दी जाए। जिसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से कहा गया की एफआईआर और आरोप पत्र में याचिकाकर्ता पर स्पष्ट आरोप है। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से अदालत में और तथ्य पेश करने की गुहार करते हुए सुनवाई टालने की गुहार की। इस पर अदालत ने मामले की सुनवाई 30 मई को रखी है।

डॉ. हरिशंकर आचार्य अध्यक्ष, अभय सिंह महासचिव निर्वाचित

जयपुर। पब्लिक रिलेशंस एंड एलाईड सर्विसेज एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (प्रसार) की कार्यकारिणी के चुनावों का परिणाम बुधवार को घोषित किया गया। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के कर्मियों के संगठन 'प्रसार' के अध्यक्ष पद पर डॉ. हरिशंकर आचार्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर अजय कुमार, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पद पर धर्मेंद्र कुमार मीना, मुख्यालय उपाध्यक्ष पद पर चंद्रशेखर पारीक, महासचिव पद पर अभय सिंह और संयुक्त सचिव पद पर सुश्री अंजलिका पंवार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं।

पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संपन्न हुई निर्वाचन प्रक्रिया के उपरांत, प्रसार चुनाव कार्यालय ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई दी और उन्हें संगठन के विकास एवं सुचारु संचालन में सक्रिय योगदान देने का आव्हान किया।

पूर्व मंत्री महेश जोशी की जमानत पर टली सुनवाई

जयपुर। ईडी मामलों की विशेष कोर्ट में बुधवार को जल जीवन मिशन के करीब 900 करोड़ रुपए घोटाले से जुडे ईडी मामले में न्यायिक हिरासत में चल रहे पूर्व मंत्री महेश जोशी की जमानत अर्जी पर बहस शनिवार तक टल गई। ईडी की ओर से मामले में बहस के लिए समय मांगा गया। जिस पर कोर्ट ने उसे समय दे दिया। इससे पहले मंगलवार को महेश जोशी की ओर से बहस में कहा कि उसे केस में झूठा फंसाया गया है। एसीबी की एफआईआर और मामले में पेश चालान में उसका नाम नहीं है। ईडी ने मार्च, 2024 में उसे समन दिया था। जिसका जवाब ईडी को भेजा गया था। इसके बाद ईडी ने करीब एक साल तक कोई कार्रवाई नहीं की और पिछले दिनों उसे अचानक बुलाकर गिरफ्तार कर लिया। इसके अलावा ईडी ने अपनी रिपोर्ट में जिन 50 लाख रुपए का हवाला दिया है, वह जुलाई, 2023 में उसके बेटे की कंपनी ने लोन के रूप में लिया था और उसे लौटाया जा चुका है। वहीं मामले में अन्य आरोपियों की पहले ही जमानत हो चुकी है। उससे कोई रिकवरी नहीं हुई है। इसलिए उसे जमानत पर रिहा किया जाए

भिनाय में औद्योगिक क्षेत्र के लिए भूमि आवंटन की मंजूरी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार औद्योगिक और ऊर्जा क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए संकल्पित है। औद्योगिक निवेश से स्थानीय रोजगार बढ़ाने के साथ विद्युत आपूर्ति की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए निरंतर महत्वपूर्ण फैसले किए जा रहे हैं।

इसी क्रम में मुख्यमंत्री शर्मा ने एक और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए नवीन औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के लिए अजमेर की भिनाय तहसील स्थित ग्राम कनईकलां में 106 हैक्टेयर से अधिक भूमि आवंटन की स्वीकृति प्रदान की है। राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम लिमिटेड (रीको) को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 92 के तहत भूमि गैर प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए आवंटित की गई है। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित होंगे और औद्योगिक विकास को गति मिलेगी।

एक अन्य निर्णय के तहत मुख्यमंत्री शर्मा ने बारां जिले की अंता तहसील के ग्राम सोरसन में 765 केवी जीएसएस के लिए भूमि आवंटन प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इसके तहत 39.17 हैक्टेयर भूमि को राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड को कीमतन आवंटित किया गया है। इसकी स्थापना से विद्युत आपूर्ति व्यवस्था अधिक सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्ण हो जाएगी।

ईद-उल-अजहा 7 जून को मनाई जाएगी

जयपुर। देश के विभिन्न राज्यों में बुधवार शाम ईद-उल-अज़हा के चांद के दीदार हो गए जिसके बाद सात जून को बकरीद का त्योहार मनाने का मुस्लिम धर्मगुरुओं ने ऐलान किया। भारत में बकरीद 2025 में 7 जून को मनाई जाएगी। यह त्योहार पैगंबर इब्राहिम के बलिदान की याद में मनाया जाता है। दुनिया भर के मुसलमान साल के सबसे पवित्र त्योहारों में से एक ईद-उल-अजहा की तैयारी कर रहे हैं, सऊदी अरब में 26 मई को अर्धचंद्राकार चांद दिखने के साथ ही 2025 में ईद-अल-अज़हा की सही तारीख तय हो गई है। ईद-उल-ज़ुहा या अज़हा या बकरीद, ईद उल फित्र के दो महीने नौ दिन बाद मनाई जाती है। इस्लामी कैलेंडर में 29 या 30 दिन होते हैं

सावरकर जयंती पर मदन राठौड़ ने पुष्पांजलि अर्पित की

जयपुर। स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की जयंती पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने उदयपुर में भाजपा जिला कार्यालय में पुष्पांजलि अर्पित करते हुए परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और वीर सावरकर के स्वदेश प्रेम, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रसेवा के सिद्धांतों से प्रेरित होकर युवाओं से राष्ट्र निर्माण के प्रति भागीदारी का आव्हान किया। राठौड़ ने कहा कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर का जीवन राष्ट्र के लिए संघर्ष, विचार और त्याग का प्रतीक रहा है। उनके आदर्शों को जनमानस तक पहुंचाने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। सावरकर ने जहाँ एक ओर स्वदेशी आंदोलन को आत्मसात किया, वहीं दूसरी ओर सामाजिक सुधार, शिक्षा और आधुनिक भारत की नींव रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मदन राठौड़ ने अपने संबोधन में कहा कि वृक्षारोपण केवल प्रकृति से प्रेम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जिम्मेदारी है। वीर सावरकर ने हमें सिखाया कि राष्ट्रसेवा के मार्ग पर विचार, कर्म और साहस तीनों का संतुलन आवश्यक है। आज हम एक हरित और समर्थ भारत के संकल्प के साथ पौधारोपण कर रहे हैं। राठौड़ ने हरियाली के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का संदेश देते हुए कहा कि भाजपा उदयपुर कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण का यह आयोजन केवल एक प्रतीकात्मक कार्यक्रम नहीं है ,बल्कि यह एक सांस्कृतिक और वैचारिक आंदोलन का हिस्सा है।

बालकों को ड्रग्स के कुप्रभावों की जानकारी देने के लिये प्रशिक्षण दिया

जयपुर। रालसा के तत्वावधान में एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय रीटा तेजपाल (जिला एवं सेशन न्यायाधीश, जयपुर महानगर द्वितीय) की अध्यक्षता में नालसा द्वारा जारी स्कीम जागृति एवं डॉन के ऑरिएंटेशन सेशन का आयोजन किया गया। साथ ही आशा- बाल विवाह की रोकथाम की संचालन प्रक्रिया के संबंध में विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। मीटिंग में बाल विवाह रोकथाम तथा बाल विवाह हो जाने पर पीड़ित बालक-बालिका के पुनर्वास संबंधी विषयों पर तथा जमीनी स्तर पर आम व्यक्ति को सरकार द्वारा संचालित प्रत्येक योजना के बारे में जानकारी हो इस संबंध में विभागों से समन्वय कर आम जन को सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार पैरा लीगल वॉलेंटियर्स के माध्यम से करवाने के संबंध में संकल्प लिया गया।

रालसा के तत्वावधान में एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय रीटा तेजपाल (जिला एवं सेशन न्यायाधीश, जयपुर महानगर द्वितीय) की अध्यक्षता में नालसा द्वारा जारी स्कीम जागृति एवं डॉन के ऑरिएंटेशन सेशन का आयोजन किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर मेट्रो द्वितीय की सचिव (अतिरिक्त जिला एवं सेशन न्यायाधीश) पल्लवी शर्मा ने बताया कि सेशन के दौरान दिए गए प्रशिक्षण में ड्रग्स न लेने के संबंध में तथा उसके कुप्रभावों की जानकारी देने के संबंध में विद्यालयों, कारागृह, गली मौहल्लों में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करवाना तय किया गया तथा ड्रग एडिक्ट की पहचान कर उसे नशा मुक्ति केन्द्र में भिजवाए जाने की व्यवस्था करने और उसे समुचित रूप से पुनर्वासित करने के संबंध में कदम उठाने हेतु चिकित्सा विभाग को निर्देशित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनिता मुवाल सहायक निदेशक बाल अधिकारिता विभाग, जयपुर, मनमोहन नगर निगम हैरिटेज जयपुर, मुकुट सिंह उपायुक्त, नगर निगम, ग्रेटर, जयपुर, विजय शर्मा डीसीपीयू जयपुर, जनार्दन कुमार आत्रैय चीफ एलएडीसीएस जयपुर महानगर द्वितीय, शिवरतन गोदारा, एसीपी शास्त्री नगर, जयपुर, पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम, रामनिवास शर्मा, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जयपुर, सुनील कुमार सिंघल जिला शिक्षा अधिकारी जयपुर, सुरेश महरानिया अतिरक्त पुलिस आयुक्त उत्तर, जयपुर, संतोष कुमार मीणा अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट शहर दक्षिण जयपुर, रामकिशन बिश्नोई उपाधीक्षक एससी-एसटी सेल जयपुर ग्रामीण, दीपक खटाना उपखण्ड अधिकारी जयपुर उत्तर, बीपी चंदेल उप निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग शहर जयपुर, एक्शन एड एनजीओ के प्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे।

कार्रवाई से पूर्व सुनवाई का मौका देना है प्राधिकारी की बाध्यकारी ड्यूटी : हाईकोर्ट

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा कि किसी व्यक्ति के खिलाफ प्रतिकूल कार्रवाई करने या आदेश पारित करने से पूर्व उसे सुनवाई का मौका देना संबंधित प्राधिकारी की बाध्यकारी ड्यूटी है और वह इससे इनकार नहीं कर सकता। इसके साथ ही अदालत ने विद्यार्थी के नकल से जुड़े इस मामले में एनटीए और जेईई परीक्षा आयोजक को कहा है कि वह याचिकाकर्ता का पक्ष सुनकर नए सिरे से आदेश पारित करे। अदालत ने याचिकाकर्ता को कहा है कि वह एक सप्ताह में संबंधित प्राधिकारी के समक्ष पेश हो और प्राधिकारी उसका पक्ष सुनकर दो सप्ताह में नया आदेश जारी करे। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश माहिर बिश्नोई की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि मामले में याचिकाकर्ता को सुनवाई के अधिकार से वंचित किया गया है। वहीं उस पर लगाया गया दंड उसके करियर को बर्बाद कर देगा और आने वाले समय में यह कलंक उसके साथ रहेगा। इसके साथ ही उसे रोजगार पाने में भी बाधा उत्पन्न होगी।

याचिका में अधिवक्ता दीपक बिश्नोई ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने जेईई मेंस, 2025 की परीक्षा दी थी, लेकिन परीक्षा में अनुचित साधन का उपयोग करने का बताकर उसका परिणाम रोक लिया गया। वहीं उसे आगामी दो सत्रों की परीक्षा देने के लिए अपात्र घोषित कर दिया। याचिका में कहा गया कि परीक्षा कक्ष के सीसीटीवी फुटेज के आधार पर यह कार्रवाई की गई है। जबकि संबंधित प्राधिकारी ही इस साक्ष्य को लेकर स्पष्ट नहीं है। वहीं कार्रवाई से पहले न तो उसे नोटिस दिया गया और ना ही उसे सुनवाई का मौका मिला। जबकि नियमानुसार किसी भी व्यक्ति के खिलाफ प्रतिकूल फैसला देने से पहले उसे सुना जाना जरूरी है। दूसरी ओर एनटीए और परीक्षा आयोजक की ओर से कहा गया कि याचिकाकर्ता परीक्षा के दौरान पास बैठे दूसरे अभ्यर्थी की कॉपी से नकल कर रहा था। दोनों अभ्यर्थियों की उत्तर पुस्तिका में उत्तर शब्दशः लिखे गए थे। यह सब सीसीटीवी में भी रिकॉर्ड हुआ है। ऐसे में उसे अनुचित साधन का उपयोग करने का आरोपी मानते हुए अगले दो सत्रों की परीक्षा के लिए अयोग्य घोषित किया है। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित प्राधिकारी को मामले में याचिकाकर्ता को सुनकर नए सिरे से आदेश देने को कहा है।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की विभिन्न परीक्षाओं के परिणाम जारी

माध्यमिक एवं माध्यमिक व्यवसायिक परीक्षा का परिणाम 93.60 प्रतिशत रहा

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने बुधवार को सेकण्डरी, सैकण्डरी व्यावसायिक एवं प्रवेशिका परीक्षा-2025 के परिणाम बुधवार को जारी किए। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने वीसी के जरिए कोटा से रिजल्ट जारी किया।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर द्वारा बुधवार को कोटा कलेक्ट्रेट से सैकण्डरी, सैकण्डरी व्यावसायिक एवं प्रवेशिका परीक्षा 2025 के परिणाम वर्चुअल माध्यम से जारी किए। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता छात्रों की मेहनत, माता-पिता के सहयोग, शिक्षकों के मार्गदर्शन और स्कूलों की सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण का प्रतिफल है। इस अवसर पर दिलावर ने असफल विद्यार्थियों को निराश न होकर निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी। दिलावर ने बोर्ड प्रशासन, शिक्षकों एवं अभिभावकों को भी इस सफलता में सहभागी बताते हुए उनके योगदान की सराहना की।

बोर्ड प्रशासक महेश चंद्र शर्मा ने बोर्ड कार्यालय से परिणाम जारी करते हुए बताया कि विद्यार्थियों ने इस वर्ष उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत छात्रों की तुलना में अधिक रहा है। ये राज्य के शैक्षिक परिदृश्य के लिए सुखद संकेत है।

प्रशासक शर्मा ने बताया कि माध्यमिक व माध्यमिक व्यावसायिक परीक्षा में 10 लाख 94 हजार 186 परीक्षार्थी पंजीकृत है। इसमें से 10 लाख 71 हजार 460 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। माध्यमिक एवं माध्यमिक व्यवसायिक परीक्षा का परिणाम 93.60 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 93.16 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 94.08 रहा। माध्यमिक एवं माध्यमिक व्यवसायिक परीक्षा में 5 लाख 75 हजार 554 छात्रों में से 2 लाख 69 हजार 141 छात्र और 5 लाख 18 हजार 632 छात्राओं में से 2 लाख 77 हजार 229 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है।

उन्होंने बताया कि प्रवेशिका परीक्षा 2025 में कुल 7316 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें से 7099 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। प्रवेशिका परीक्षा 2025 का परीक्षा परिणाम 83.67 प्रतिशत रहा।

इसमें छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 82.01 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 85.03 रहा। प्रवेशिका परीक्षा में 3310 छात्रों में से 643 छात्र और 4006 छात्राओं में से 974 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। बोर्ड सचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों के परिश्रम, शिक्षकों की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण तथा बोर्ड के कार्मिकों की सतत मेहनत का परिणाम है। बोर्ड ने परिणामों की समयबद्ध व पारदर्शी घोषणा कर एक बार पुन: देश के अग्रणी शिक्षा बोर्डों में अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। इस अवसर पर विशेषाधिकारी नीतू यादव, वित्तीय सलाहकार रश्मि बिस्सा सहित अन्य कार्मिक उपस्थित रहे।

बोर्ड प्रशासक महेश चंद्र शर्मा ने बोर्ड कार्यालय से परिणाम जारी किए।

- शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कोटा से सेकण्डरी, सेकण्डरी व्यावसायिक एवं प्रवेशिका परीक्षा-2025 के परिणाम जारी किये

25 लाख की अवैध शराब सहित दो आरोपी गिरफ्तार

जालोर जिले के सांचौर पुलिस ने अवैध शराब सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के सांचौर पुलिस एवं जिला स्पेशल टीम ने बुधवार को सरहद आमली में राजस्थान व पंजाब निर्मित अवैध अंग्रेजी शराब बीयर के 47 कार्टन बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। अवैध शराब परिवहन में प्रयुक्त वाहन क्रेटा कार को जब्त किया। बरामद अवैध शराब की अनुमानित बाजार कीमत 25 लाख रूपये आंकी गई है।

जिले में शराब तस्करी करने वालों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत जेठाराम सउनि. मय जाब्ता पुलिस थाना सांचौर व जिला विशेष टीम जालोर द्वारा मुखबीर से प्राप्त सूचना के अनुसार बाडमेर से चितलवाना होते हुए गुजरात की तरफ जाने वाली सड़क पर सरहद आमली में संयुक्त रूप से नाकाबंदी शुरू की। नाकाबंदी में वाहन क्रेटा कार को रूकवाकर तलाशी ली गई तो वाहन में राजस्थान व पंजाब निर्मित अवैध शराब के 47 कार्टन भरे हुए पाये जाने पर शराब व शराब परिवहन में प्रयुक्तकार व वाहन में मिली नम्बर प्ले को जब्त कर वाहन चालक खेमाराम पुत्र आम्बाराम जाट निवासी मौखाब कलां पुलिस थाना शिव जिला बाड़मेर व रामजीवनराम पुत्र खैराजराम विश्नोई निवासी वीरावा पुलिस थाना चितलवाना जिला जालोर को गिरफ्तार किया।

चूरू-मोलीसर ट्रैक दोहरीकरण का स्पीड ट्रायल सफल

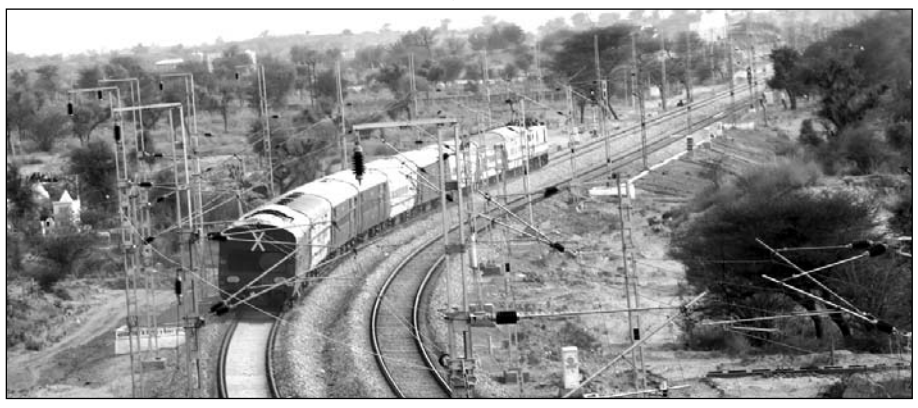

चूरू से मोलीसर तक सीआरएस स्पेशल से 120 किमी प्रतिघंटा की स्पीड से ट्रायल किया।

चूरू, (निसं)। बीकानेर रेल मंडल परीक्षण के दौरान लगभग 27 किलोमीटर लंबे चूरू-मोलीसर रेलखंड तक रेल संरक्षा आयुक्त बुधवार को स्वचालित ट्रॉली से पहुंचे और चूरू से मोलीसर तक स्पीड ट्रायल सीआरएस स्पेशल से 120 किमी प्रतिघंटा की स्पीड से ट्रायल किया। ट्रायल सफल होने के बाद सीआरएस श्रीनिवास ने 90 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से ट्रेन चलाने की अनुमति प्रदान की। निरीक्षण के दौरान सीआरएस ई श्रीनिवास ने सुरक्षा मानकों, तकनीकी पहलुओं व ट्रैक की गुणवत्ता का बारीकी से अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि पूर्व में रतनगढ़ से मोलीसर तक डबल लाइन थी एवं मोलीसर से चूरू तक सिंगल लाइन थी, अब मोलीसर से चूरू तक डबल लाइन पर गाड़ी चलाने की अनुमति मिलने से रेलवे कम समय में अधिक गाड़ियां चला सकेगा और रेलवे अधिक माल का परिवहन कर सकेगा, जिससे रेलवे की आय में वृद्धि होगी। उक्त स्पीड ट्रायल दोहरीकरण परियोजना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे इस मार्ग पर ट्रेनों की गति, संख्या व संचालन क्षमता में वृद्धि होगी। आने वाले समय में यात्रियों को तेज और सुरक्षित यात्रा सुविधा प्राप्त होगी। स्पीड ट्रायल के दौरान बीकानेर मंडल रेल प्रबंधक डॉ. आशीष कुमार, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी रणसिंह गोदारा, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक जयप्रकाश, सीनियर डीएसटीई ललित कुमार, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वयक) अमित जैन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (दक्षिण) अमन अग्रवाल, सीनियर डीईई टीआरडी जितेंद्र कटारिया, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (सामान्य) आदित्य लेघा, डिप्टी चीफ इंजीनियर विजय सिंह, चीफ इंजीनियर कंस्ट्रक्शन एस.एल मीना, मूवमेंट इंस्पेक्टर महेंद्र सिंह, धीरज थानवी सहित रेलवे के अनेक अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

विवाहिता की संदिग्ध मौत मामले में पति गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। जिले के ओसियां उपखण्ड क्षेत्र के एकलखोरी गांव में बीते दिनों संदिग्ध परिस्थितियों में हुई एक विवाहिता की मौत के मामले में पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार किया है। मामले में दहेज हत्या का आरोप लगाया गया था।

ओसियां वृत्ताधिकारी जब्बरसिंह चारण ने बताया कि एकलखोरी निवासी भीखी पत्नी राकेश की गत 17 मई को घर पर अज्ञात कारणों से मौत हो गई थी। जिस पर विवाहिता भीखी के पिता लादूराम पुत्र पांचाराम विश्नोई ने पति, सास, ससुर सहित के खिलाफ दहेज हत्या मामला दर्ज कराया था। रिपोर्ट में बताया था कि उनकी पुत्री भीखी का गौना (मुकलावा) करीब डेढ़ वर्ष पूर्व हुआ था। उसके पश्चात जंवाई राकेश एवं ससुर शैतानाराम पुत्र मंगलाराम, सास मनोहरी एवं ननद सरिता सभी मिलकर पुत्री को दहेज के लिए शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना देते रहे। ससुराल से प्रताड़ित होकर पुत्री पीहर आ गई। करीब दस दिन पश्चात उसके पति एवं मोहनराम घर आए और भीखी को साथ भेजने का कहने पर बेटी को ससुराल भेज दिया। इसके बाद 16 मई की रात को उसकी पत्नी के पास फोन आया कि मां मेरे ससुराल वाले मेरी हत्या रात में कर देंगे। उसके अगले दिन ही उसकी मौत की सूचना आ गई। रिपोर्ट में पिता ने आरोप लगाया कि उसकी पुत्री भीखी की हत्या दामाद राकेश, शैतानाराम, मनोहरी, सरिता सभी ने एकराय होकर गला दबाकर की है। जिस पर पुलिस ने जांच करते हुए पति राकेश को गिरफ्तार किया है।

उदयपुर में बारिश

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में बुधवार को सुबह से छाई उमस और गर्मी के बाद दोपहर करीब तीन बजे शहर के विभिन्न इलाकों में हल्की बारिश हुई। बारिश से तापमान में गिरावट आई और लोगों को राहत मिली।

डबोक स्थित मौस्सम विभाग के अनुसार बुधवार को अधिकतम तापमान 38 तथा न्यूनतम तापमान 27.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं शाम 5.30 बजे समाप्त 12 घंटों में 15.6 मी.मी. वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार संभाग के कुछ भागों में अधिकतम तापमान आगामी 2-3 दिन 42 से 44 डिग्री दर्ज होने की संभावना है। नमी की मात्रा अधिक होने के कारण उमस भरी गर्मी दर्ज होने की प्रबल संभावना है। उदयपुर संभाग के कुछ भागों में मेघगर्जन के साथ मध्यम से तेज बारिश आगामी 2.3 दिन होने की संभावना है।

पाली पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक एपीओ

जयपुर/पाली। पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग मंत्री जोराराम कुमावत के निर्देश पर पशुपालन विभाग, पाली में सेवारत संयुक्त निदेशक डॉ. ओमप्रकाश बुनकर को एपीओ कर दिया गया है।

पाली प्रवास के दौरान मंत्री ने संयुक्त निदेशक के गौशाला के संबंध अपने ही एक कर्मचारी के साथ हुई बहस का वीडियो वायरल होने की जानकारी मिलने पर इस मामले में संज्ञान लेते हुए कार्रवाई के निर्देश दिए। मंत्री के निर्देश पर पशुपालन विभाग की शासन उप सचिव संतोष करोल ने डॉ. ओमप्रकाश बुनकर को प्रशासनिक कारणों से आदेशों की प्रतीक्षा (एपीओ) में रखते हुए मुख्यालय निदेशालय पशुपालन, जयपुर भेज दिया है।

भ्रूण लिंग परीक्षण पर कसा शिकंजा, दलाल गिरफ्तार

कथित रूप से गर्भवती महिलाओं को भ्रूण लिंग परीक्षण के लिए अल्ट्रासाउंड सेंटर ले जाया करता था दलाल

जयपुर/कुचामन। राजस्थान में भ्रूण लिंग चयन के खिलाफ चल रही सख्त मुहिम के तहत पीसीपीएनडीटी टीम ने नागौर जिले के कुचामन में बुधवार को एक और बड़ी सफलता हासिल की। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की एमडी डॉ. भारती दीक्षित के निर्देशन में की गई इस कार्रवाई में डिकॉय ऑपरेशन के जरिए एक दलाल को रंगे हाथ पकड़ा गया, जबकि डॉक्टर की भूमिका को लेकर संदेह बरकरार है। टीम ने आरोपी दलाल सुखराम जाट को गिरफ्तार कर लिया है, जो कथित रूप से गर्भवती महिलाओं को भ्रूण लिंग परीक्षण के लिए अल्ट्रासाउंड सेंटर ले जाया करता था। कुचामन स्थित मंगलम अल्ट्रासाउंड सेंटर में की गई इस कार्रवाई में मशीन को सीज कर दिया गया है और डॉक्टर बीआर बांता की भूमिका की जांच पीबीआई थाना पुलिस कर रही है।

सूचना के आधार पर की गई रैकी के बाद टीम ने एक डिकॉय गर्भवती महिला को दलाल से संपर्क करवाया। 70 हजार रुपए लेने के बाद दलाल महिला को अल्ट्रासाउंड सेंटर ले गया, जहां परीक्षण के बाद उसने गर्भ में लड़का होने की पुष्टि करते हुए "खाओ, पियो, मौज करो" जैसे शब्द कहे। इसी दौरान टीम ने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया। अल्ट्रासाउंड सेंटर पर एफ फॉर्म नहीं भरना, पंजीकरण रजिस्टर में एंट्री नहीं होना जैसी गंभीर लापरवाहियों ने डॉक्टर की भूमिका को संदेह के घेरे में खड़ा कर दिया है। पुलिस फिलहाल जांच कर रही है और डॉक्टर से पूछताछ जारी है।

एनएचएम एमडी डॉ. भारती दीक्षित ने कहा, यह सिर्फ एक कार्रवाई नहीं, बल्कि समाज में बेटियों के अस्तित्व की लड़ाई है। ऐसे अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने बताया कि यह एक पखवाड़े में तीसरा सफल ऑपरेशन है। इससे पहले टीम ने 12 मई को गुजरात के ईडर और 15 मई को पंजाब के अबोहर में भी डिकॉय ऑपरेशन कर दलालों और संदिग्ध डॉक्टरों के खिलाफ कार्रवाई की थी। लगातार हो रही इन कार्रवाइयों से भ्रूण लिंग परीक्षण गिरोहों में हड़कंप मचा हुआ है।

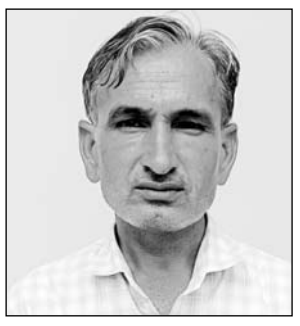

गिरफ्तार आरोपी

- डॉक्टर की भूमिका को लेकर संदेह बरकरार, अल्ट्रासाउंड मशीन सीज
- पीसीपीएनडीटी टीम ने एक पखवाड़े में तीसरी बड़ी कार्रवाई की

जोसा काउंसलिंग शेड्यूल जारी

कोटा, (निसं)। आईआईटी कानपुर की ओर से आयोजित की गई देश की सबसे प्रतिष्ठित प्रवेश परीक्षा जेईई एडवांस्ड का परिणाम 2 जून को जारी किया जाएगा। परिणाम जारी होने के अगले दिन 3 जून से आईआईटी, एनआईटी, ट्रिपलआईटी व जीएफटीआई में प्रवेश के लिए जोसा काउंसलिंग प्रक्रिया प्रारंभ होगी। इस वर्ष जोसा काउंसलिंग द्वारा 23 आईआईटी, 32 एनआईटी, 26 ट्रिपलआईटी एवं 47 जीएफटीआई में प्रवेश दिया जाएगा। जोसा काउंसलिंग का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि इस वर्ष आईआईटी, एनआईटी व ट्रिपलआईटी में प्रवेश के लिए होने वाली जोसा काउंसलिंग प्रक्रिया 3 जून से 28 जुलाई के मध्य छह राउण्ड्स में होगी।

छह जून तक आवेदन विथड्रॉ करने का अवसर

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक मत्स्य विकास अधिकारी (मत्स्य विभाग) भर्ती-2024 के अन्तर्गत वांछित योग्यता न होने पर भी ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को आवेदन विथड्रॉ करने का अवसर दिया गया है। विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आयोग सचिव ने बताया कि 2 सितंबर 2024 को उक्त 8 पदों पर भर्ती का विज्ञापन जारी कर 11 सितंबर से 10 अक्टूबर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गये थे। आयोग द्वारा की गई रेण्डम/सेम्पल जांच में यह पाया गया कि कतिपय आवेदकों के पास अनिवार्य योग्यता नहीं होने के उपरांत भी उनके द्वारा आवेदन किया गया है। आयोग द्वारा उक्त शैक्षणिक व वांछित योग्यता न होने पर भी आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को आगाह किया है कि वे अपना ऑनलाइन आवेदन पत्र 6 जून 2025 तक विथड्रॉ कर लेवें अन्यथा उनके विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी।

महिला प्रो. की अश्लील फोटो वायरल करने वाले प्रो. रामकेश मीणा को निलंबित करने की मांग

गंगापुर सिटी, (निसं)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गंगापुर सिटी ने मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर एक महिला प्रोफेसर की अश्लील फोटो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने वाले राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी में संस्कृत के प्रोफेसर रामकेश मीणा उर्फ आदिवासी को तुरंत निलंबित कर कड़ी कानूनी कार्रवाई करने तथा गंगापुर सिटी से हटाने की पुरजोर मांग की है।

ज्ञापन की प्रतिलिपि उचित कार्यवाही के लिए उच्च शिक्षा मंत्री, गृह राज्य मंत्री, प्रमुख सचिव, शासन सचिव उच्च शिक्षा, आयुक्त कॉलेज शिक्षा, पुलिस महानिदेशक, पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर, जिला कलक्टर सवाई माधोपुर, पुलिस अधीक्षक सवाई माधोपुर, अध्यक्ष राष्ट्रीय महिला आयोग, अध्यक्ष राज्य महिला आयोग, प्राचार्य राजकीय पीजी महाविद्यालय गंगापुर सिटी को भी प्रेषित की है।

एबीवीपी जिला संयोजक मनोज सैनी, छात्र नेता सीताराम गुर्जर एवं अन्य द्वारा दिए ज्ञापन में लिखा है कि प्रोफेसर रामकेश मीणा ने तमाम हदें पार कर दी हैं। नैतिकता को तार-तार कर दिया है। प्रोफेसर जैसे महान प्रतिष्ठा के पद को कलंकित किया है। रामकेश मीणा राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी में संस्कृत विषय के प्रोफेसर है। वर्तमान में डेपुटेशन पर राजकीय महाविद्यालय वजीरपुर में नोडल अधिकारी हैं। रामकेश मीणा अंग्रेजी में प्रो. रामकेश आदिवासी के नाम से फेसबुक चलाते हैं। रामकेश मीणा ने एक महिला प्रोफेसर की फोटो पर जगह-जगह गलत स्टीकर लगाए, अवांछित शब्द लिखकर, एडिट कर अश्लील बनाया, फिर इसे अपनी फेसबुक पर वायरल किया है जिसे बहुत लोगों ने देखा है। रामकेश मीणा की यह अश्लील हरकत बहुत ही शर्मनाक है। हम सब सभी को लज्जित करने वाली है। गंगापुर सिटी इलाके के छात्र युवा नागरिक भी बुरी तरह आहत है, शर्मिंदा है। बहुत आक्रोश है। रामकेश मीणा के खिलाफ पूर्व में कई शिकायतें है। इन्हें राजनेताओं और अधिकारियों का संरक्षण प्राप्त है। आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा के अधिकारियों का भी इन्हें संरक्षण मिला हुआ है। इनके खिलाफ कार्यवाही नहीं होती, हौसले बुलंद है। अश्लील आचरण करने वाले रामकेश मीणा के खिलाफ तुरंत कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए।

- अ.भा.वि. परिषद गंगापुर सिटी ने उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा

चोरी और गुम हुए 89 मोबाइल बरामद, मालिकों के सुपुर्द किये

डीडवाना, (निसं)। राजस्थान पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार लगातार ऑपरेशन एंटी वायरस अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत डीडवाना जिले के समस्त थानों और सायबर सेल ने बड़ी कार्रवाई करते हुए गुम और चोरी हुए 89 मोबाइल बरामद किये हैं। इन मोबाइलों की बाजार कीमत लगभग 13 लाख 35 हजार रुपए बताई जा रही है। इन मोबाइलों को राजस्थान सहित अनेक प्रदेशों से ट्रेस कर बरामद किया गया है, जिन्हें बुधवार को जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में एसपी हनुमान प्रसाद मीणा ने उनके मालिकों के सुपुर्द कर दिया।

एसपी हनुमान प्रसाद मीणा ने बताया कि एंटी वायरस अभियान के तहत चल रहे इस अभियान में पोर्टल पर दर्ज चोरी और गुम हुए मोबाइल को ट्रेस करने के लिए पुलिस की टीमों ने विशेष अनुसंधान किया और मोबाइल फोन को ट्रेस करने की कार्रवाई की, जिसके परिणाम स्वरूप पूर्व में भी 240 मोबाइल बरामद कर उनके मालिकों के सुपुर्द किया गया था। इसी क्रम में गुम व चोरी हुए 89 मोबाइलों को भी बरामद कर आज उनके मालिकों को सौंप दिया गया। इस दौरान लंबे समय बाद अपने मोबाइल वापस पाकर लोग काफी खुश और प्रसन्न नजर आए।

एसपी ने बताया कि केंद्रीय इक्विपमेंट आइडेंटिटी रजिस्टर्ड पोर्टल दूरसंचार विभाग का एक नागरिक केंद्रित पोर्टल है। यह पोर्टल मोबाइल उपकरणों को उनके अंतरराष्ट्रीय मोबाइल उपकरण पहचान नंबरों का इस्तेमाल करके प्रबंधन और ट्रैक करने के लिए बनाया गया है। अगर किसी का मोबाइल फोन गुम हो जाता है तो वह आईएमईआई नंबरों को इस पोर्टल पर इंद्राज कर बंद करवा सकते हैं। साथ ही संबंधित थाने में शिकायत दर्ज करवाकर पोर्टल पर जाकर मोबाइल फोन का नंबर भी ब्लॉक करवा सकते हैं। गुम मोबाइल बरामद होने पर उसके मालिक के द्वारा पोर्टल पर आईएमइआई नंबर को अनब्लॉक करवाने हेतु रिक्वेस्ट भेजी जाकर नंबर को पुन शुरू करवाया जा सकता है।

एसपी हनुमान प्रसाद मीणा ने बरामद मोबाइल के बारे में जानकारी दी।

- बरामद मोबाइलों की कीमत लगभग 13.35 लाख रुपए है
- डीडवाना में ऑपरेशन एंटी वायरस के तहत पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की

श्रीगंगानगर में व्यापारी के घर पर फायरिंग

श्रीगंगानगर, (निसं)। जवाहरनगर थाना क्षेत्र में व्यापारी राजू कथोडीया के घर पर अज्ञात बदमाशों ने फायरिंग कर दी। यह वारदात अग्रसेन चौक के पास हनुमान मंदिर के सामने हुई। अचानक चली गोलियों की आवाज से इलाके में दहशत फैल गई। बुधवार को सुबह लोगों ने घर की दीवार पर गोलियों के निशान देखे। मौके पर कारतूस के खोल भी मिले। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुटी। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। पुलिस को शक है कि यह मामला गैंगस्टर गोल्डी बराड़ से जुड़ा हो सकता है।

राजू कथोडीया को कुछ दिन पहले 4 करोड़ रुपए की रंगदारी देने की धमकी मिली थी। यह धमकी गोल्डी बराड़ के नाम पर दी गई थी। गोल्डी बराड़ कनाडा से गैंग चलाता है। वह पंजाब और राजस्थान में कई संगीन मामलों में वांछित है। इससे पहले 25 मार्च को भी राजू कथोडीया के घर पर अज्ञात लोगों ने कारतूस और धमकी भरा पत्र फेंका था। उस समय भी पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी। अब 2 महीने बाद दूसरी बार फायरिंग की घटना से मामला गंभीर हो गया है।

पुलिस अधिकारियों का मानना है कि दोनों घटनाएं आपस में जुड़ी हो सकती हैं। यह मामला रंगदारी वसूली से जुड़ा लग रहा है। फायरिंग करने वालों की पहचान नहीं हो पाई है। सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर बदमाशों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने जल्द खुलासा होने की संभावना जताई है। लगातार मिल रही धमकियों और गोलीकांड के बाद व्यापारियों और आम लोगों में डर का माहौल है। खासकर अग्रसेन चौक और जवाहर नगर क्षेत्र के लोग डरे हुए हैं। व्यापारिक संगठनों ने घटना की निंदा की है और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है।

- पुलिस को शक है कि मामला गैंगस्टर गोल्डी बराड़ से जुड़ा हो सकता है

हमारा ये सफर जीत और चुनौतियां से भरा रहा। सहमारी टीम की फाइटिंग स्पिरिट, एकता और लचीलापन सबसे अलग था। हम प्रतिबद्ध रहे, एक-दूसरे का साथ दिया और कभी हार नहीं मानी। ऋषभ पंत का शुक्रिया। - संजीव गोयनका

एलएसजी के मालिक, ऋषभ पंत को शुक्रिया बोलते हुये।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

ऋषभ पंत

लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान ऋषभ पंत पर धीमी ओवर गति के लिये 30 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। ऋषभ पंत का आईपीएल के इस सत्र में यह तीसरा अपराध है। आईपीएल के नये नियमों के तहत पंत पर प्रतिबंध लगाने की बजाये उन पर 30 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। इस दौरान मैच में खेलने वाले सभी खिलाड़ियों में से प्रत्येक पर या तो 12 लाख रुपये या उनके मैच शुल्क का 50 प्रतिशत (जो भी कम हो) जुर्माना लगाया गया। मंगलवार को लखनऊ सुपर जायंट्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के साथ हुए मैच में धीमे ओवर रेट के लिए ऋषभ पंत पर यह जुर्माना लगाया गया है।

क्या आप जानते हैं ?... आईपीएल टूर्नामेंट में आरसीबी और पीबीकेएस एकदूसरे से 35 मैचों में भिड़ीं। इन 35 मैचों आरसीबी ने 17 मैच जीते जबकि पीबीकेएस 18 मैचों में विजयी हुई।

पंजाब किंग्स, आरसीबी की नजर फाइनल के प्रवेश पर

चंडीगढ़, 28 मई। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और पंजाब किंग्स के बीच होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 क्वालीफायर वन मुकाबले से पहले आरसीबी जॉश हेजलवुड और टिम डेविड की वापसी से उत्साहित है और टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने के लिए मैदान में उतरेगी। वहीं पंजाब किंग्स अपनी मजबूत बल्लेबाजी लय और घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाकर फाइनल में पहुंचना चाहेगी। मुल्लांपुर के महाराजा यादवेंद्र सिंह क्रिकेट स्टेडियम में शुक्रवार को होने वाले यह मुकाबला जीतने वाली टीम सीधे फाइनल में पहुंच जायेगी। प्लेऑफ में हमेशा मुकाबला आक्रामक होता रहा है। हेजलवुड और डेविड की वापसी से आरसीबी का गेंदबाजी आक्रमण मजबूती देगा और फिनिशिंग पावर पंजाब किंग्स की मजबूत टीम को हराने सहायक होगी। आईपीएल के इस सत्र में आरसीबी के लिए 10 मैचों में 18 विकेट लेने वाले हेजलवुड का तेज गेंदबाजी आक्रमण, अनुभव, अनुशासन और नियंत्रण उनकी क्षमता को बेहतरीन बनाता हैं। बीच के ओवरों में उनकी रन रोकने और

महत्वपूर्ण विकेट लेने की क्षमता पंजाब की गहरी बल्लेबाजी लाइनअप को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हेजलवुड के साथ, अनुभवी भारतीय खिलाड़ी भुवनेश्वर कुमार और क्रुणाल पांड्या की ऑलराउंड क्षमता आक्रमण में और गहराई और विविधता जोड़ती है। टिम डेविड डेथ ओवरों में बड़े शॉट लगाकर मैच फिनिशिंग के लिए जाने जाते है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की बल्लेबाजी में विराट कोहली अहम भूमिक निभा रहे हैं। उन्होंने अब तक पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करते हुए 60.20 की औसत से 600 से अधिक रन बनाए हैं और लगातार अच्छी बल्लेबाजी ने आरसीबी को मजबूत स्थिति में रखा है। फिल साल्ट शीर्ष पर तेज शुरुआत प्रदान करता है, जबकि रजत पाटीदार ने हाल ही में फिटनेस संबंधी परेशानियों के बावजूद 140 से ऊपर की स्ट्राइक रेट से महत्वपूर्ण रन बनाए हैं। मयंक अग्रवाल और रोमारियो शेफर्ड का प्रदर्शन भी सराहनीय रहा है। पंजाब किंग्स को कम तर नहीं आंका जा सकता है। टीम ने 14 मैचों में से नौ जीत के साथ लीग स्टैंडिंग में शीर्ष पर रही। उनकी बल्लेबाजी संतुलित और लचीली है। उसके पास प्रभसिमरन सिंह और प्रियांश आर्य की धाकड़ सलामी जोड़ी है। यह जोड़ी टीम की मजबूत नींव रखने में मददगार रही है। वहीं कप्तान श्रेयस अय्यर ने मध्य क्रम में 172 की प्रभावशाली स्ट्राइक रेट से 500 से अधिक रन बनाए हैं। मार्कस स्टोइनिस, जोश इंगलिस और शशांक सिंह के अंतिम ओवरों में योगदान ने अक्सर पंजाब के पक्ष में मैच पलटा है। गेंदबाजी की बात की जाये तो अर्शदीप सिंह पंजाब किंग्स की अगुवाई कर रहे हैं। उन्होंने अब तक टूर्नामेंट में 18 विकेट लिये है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के कारण तेज गेंदबाज मार्को जेनसन की अनुपस्थिति एक चुनौती है। काइल जैमीसन से अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने की उम्मीद है, हालांकि उनकी इकॉनमी रेट टीम के लिए चिंता का विषय रही है। युजवेंद्र चहल की स्पिन टीम को बीच के ओवरों में रन रोकने और विकेट लेने की क्षमता दिखाती। मुल्लांपुर की पिच बल्लेबाजी के अनुकूल होने की उम्मीद है, जिसमें पहली पारी का औसत स्कोर 170 के आसपास रह सकता। कुल मिलाकर देखा जाये तो रॉयल चैलेंजर्स बेंगलरु और पंजाब किंग्स की टीमें संतुलित दिख रही हैं ऐसे में हेजलवुड और टिम डेविड की वापसी आरसीबी के बोनस साबित हो सकता है। इन दोनों खिलाड़ियों की सकारात्मक गेंदबाजी और फिनिशिंग की क्षमता से हर कोई वाकिफ है। कोहली की प्रतिभा और टीम का बहुमुखी गेंदबाजी लाइनअप आरसीबी को सीधा फाइनल में पहुंचा सकता है। पंजाब किंग्स को मुकाबला जीतने के लिए अपनी मजबूत बल्लेबाजी लय को बरकरार रखने और घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाने का अवसर प्रदान करेगा।

भारत 44 साल बाद एशियाई भारोत्तोलन चैम्पियनशिप की करेगा मेजबानी

अहमदाबाद, 28 मई। भारत 44 सालों के बाद अगले साल अहमदाबाद में होने वाली एशियाई भारोत्तोलन चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा। एशियाई भारोत्तोलन महासंघ (एडब्ल्यूएफ) ने बुधवार को यह जानकारी दी। भारत ने पिछली बार 1982 में नई दिल्ली में एशियाई भारोत्तोलन चैंपियनशिप का आयोजन हुआ था। वर्ष 2026 एक से 10 अप्रैल तक चलने वाली इस चैंपियनशिप में एशियाई मंच पर भारतीय भारोत्तोलन के लिए एक ऐतिहासिक वापसी होगी। उज्बेकिस्तान के ताशकंद में 2024 में हुई एडब्ल्यूएफ कांग्रेस में इस चैंपियनशिप को गुजरात के गांधीनगर को आबंटित किया गया था। जिसका आयोजन स्थल अब बदलकर अहमदाबाद कर दिया गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन महासंघ (आईडब्ल्यूएफ) द्वारा शुरू की गई नई भार श्रेणियों के तहत आयोजित होने वाली पहली एशियाई चैंपियनशिप भी होगी। इससे वैश्विक स्तर पर खेल के लिए एक नए युग की शुरुआत होगी। यह चैंपियनशिप भारतीय भारोत्तोलकों की नई पीढ़ी को मंच प्रदान करेगी।

पंजाब किंग्स और आरसीबी मुकाबले में बारिश बनेगी विलेन

मैच रद्द होने पर किसे होगा फायदा

चंड़ीगढ़, 28 मई। आरसीबी और पंजाब दोनों टीमें चाहेंगी कि बारिश इस मुकाबले से दूर रहे और अच्छी खबर ये है कि 29 मई को चंडीगढ़ में बारिश की संभावना बेहद कम है। हालांकि, अगर बारिश होती है तो मैच नहीं हो पाता है तो ये आरसीबी के लिए बड़ा झटका साबित होगा। पंजाब किंग्स को इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि लीग मैचों के बाद अंकतालिका में ऊपर रहने वाली टीम फाइनल में पहुंचेगी। क्वालीफायर 1 के लिए कोई रिजर्व डे नहीं है इसलिए बारिश के खलल के कारण पंजाब किंग्स फाइनल के लिए क्वालीफाई कर जाएगी।

मुंबई-गुजरात के बीच एलिमिनेटर मैच

आईपीएल 2025 के लिए मुंबई और गुजरात ने प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई किया था, लेकिन गुजरात तीसरे और मुंबई चौथे स्थान पर रही थी। इन दोनों टीमों के बीच इसी मैदान पर यानी चंडीगढ़ में ही 30 मई को एलिमिनेटर मैच खेला जाएगा। इस मैच में हारने वाली टीम बाहर हो जाएगी जबकि जीतने वाली टीम क्वालीफायर 2 में क्वालीफायर ए में हारने वाली टीम से भिड़ेगी।

आईपीएल 2025 प्लेऑफ का पूरा शेड्यूल

नई दिल्ली, 28 मई। गुरुवार से आईपीएल 2025 के प्लेऑफ के मुकाबलों का आगाज होने जा रहा है। इस सीजन के लीग मैच खत्म हो गए हैं जिसके तहत सभी 10 टीमों के बीच 70 मुकाबले खेले गए। पंजाब किंग्स, गुजरात टाइटंस, आरसीबी और मुंबई इंडियंस ने प्लेऑफ क्वालीफाई किया है।आईपीएल 2025 का पहला क्वालीफायर पंजाब किंग्स और आरसीबी के बीच 29 मई को खेला जाएगा। ये मुकाबला चंड़ीगढ़ के मुल्लानपुर में खेला जाएगा। मैच का टॉस शाम 7 बजे से होगा, वहीं मुकाबले की शुरुआत साढ़े सात बजे से होगी। इस मैच को जीतने वाली टीम सीधे फाइनल में प्रवेश कर जाएगी, वहीं हारने वाली टीम को दूसरा क्वालीफायर खेलना होगा। शुक्रवार, 30 मई को न्यू चंड़ीगढ़ के मुल्लानपुर में एलिमिनेटर मैच होगा। एलिमिनेटर मुकाबले में गुजरात टाइटंस और मुंबई इंडियंस के बीच होगा। इस मैच को जीतने वाली टीम पहला क्वालीफायर हारने वाली टीम के साथ दूसरा क्वालीफायर खेलेगी। मैच का टॉस शाम सात बजे होगा, वहीं मुकाबले की शुरुआत 7.30 बजे से होगी। रविवार, 1 जून को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में दूसरा क्वालीफायर मुकाबला खेला जाएगा। एलिमिनेटर मैच की विजेता टीम और क्वालीफायर-1 हारने वाली टीम के बीच क्वालीफायर-2 खेला जाएगा। इस मैच को जीतने वाली टीम फाइनल में पहुंचेगी। मैच का टॉस शाम सात बजे होगा जबकि साढ़े सात बजे मुकाबले की शुरुआत होगी।

3 जून को फाइनल मुकाबला

इसके बाद 3 जून को आईपीएल 2025 का फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। खिताबी मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होगा। क्वालीफायर 1 और क्वालीफायर 2 जीतने वाली टीमों के बीच फाइनल मुकाबला खेला जाएगा।

फाइनल मुकाबले के लिए रिजर्व डे

हालांकि, आईपीएल में क्वालीफायर और एलिमिनेटर मैच में रिजर्व डे नहीं होता है। वैसे अब तक आईपीएल में कभी भी क्वालीफायर और एलिमिनेटर मैच बारिश में नहीं धुआ है। बारिश को देखते हुए बीसीसीआई ने एक्स्ट्रा टाइम दो घंटे का रखा है। इसका मतलब अगर साढ़े 9 बजे भी मैच शुरू होता है तो भी मैच पूरे 20 ओवर का खेला जाएगा। अगर बारिश के कारण बिल्कुल भी मैच नहीं हो पाया तो फिर लीग स्टेज में पॉइंट्स टेबल में ऊपर रहने वाली टीम आगे बढ़ेगी। यानी उस मैच की विजेता होगा। खिताबी मैच के लिए रिजर्व डे रखा गया है।

भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच प्रो. लीग के लिए नीदरलैंड हुई रवाना

बेंगलुरु, 28 मई। भारतीय महिला हॉकी टीम का 24 सदस्यीय दल कप्तान सलीमा टेटे की अगुवाई में 28 मई से शुरु हो रही एफआईएच प्रो लीग यूरोपीय चरण के लिए बुधवार को यहां से नीदरलैंड के लिए रवाना हो गई। हॉकी इंडिया की आज यहां जारी विज्ञिप्त के अनुसार भारतीय महिला टीम आठ जून तक नीदरलैंड के एम्सटर्डम में अभ्यास करेगी। उसके बाद टीम लंदन जाएगी, जहाँ उसे ऑस्ट्रेलिया और अर्जेंटीना के खिलाफ अपने पहले चार मैच खेलने हैं। भारतीय महिला टीम 14 और 15 जून को ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम से भिड़ेगी, उसके बाद 17 और 18 जून को अर्जेंटीना की महिला टीम से मैच खेलेगा।

आईपीएल का फाइनल सशस्त्र बलों को समर्पित करना सराहनीय कदम : गंभीर

नई दिल्ली, 28 मई। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने बुधवार को कहा कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) का इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के फाइनल मुकाबले को सशस्त्र बलों को समर्पित करना वास्तव में 'अविश्वनीय' सराहनीय कदम है और यह हमारी राष्ट्रीय एकता को दर्शता है। गंभीर ने संवाददाता सम्मेलन से कहा, मैं अक्सर कई मामलों में बीसीसीआई की आलोचना करता रहा हूं, लेकिन यह पहल वास्तव में सराहनीय है। सशस्त्र बलों को समर्पित किया गया कोई भी कार्य को हमारा पूर्ण समर्थन है। उन्होंने कहा कि यह एक अच्छी पहल है। यह दर्शाता है कि पूरा देश एकजुट है और हमारे सशस्त्र बलों को सलाम कर रहा है। बिना किसी स्वार्थ के हमारी रक्षा करने के लिए मैं सशस्त्र बलों को श्रेय देता हूं।

मुख्य कोच गंभीर ने कहा, हमारे सैनिक बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना हमारी सेवा करते हैं, सुरक्षा करते हैं और बलिदान देते हैं। उन्होंने कहा कि यह कदम न केवल क्रिकेट संस्था के लिए बल्कि इससे भी अधिक वर्दीधारी बहादुर पुरुषों

और महिलाओं के लिए व्यापक सराहना का पात्र है। गंभीर ने यह टिप्पणी पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा चलाये गये ऑपरेशन सिंदूर के बाद बीसीसीआई द्वारा आईपीएल 2025 के समापन समारोह को सशस्त्र बलों को समर्पित करने के फैसले प्रति एकजुटता प्रकट करते हुए की है।

आगामी तीन जून को अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित आईपीएल के फाइनल मुकाबले में सेना, नौसेना और वायु सेना के सम्मान में सैन्य बैंड और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के 45 मिनट का समारोह आयोजित किया जायेगा। समापन समारोह में सेना प्रमुखों सहित शीर्ष सैन्य अधिकारियों को आमंत्रित किया गया है। बीसीसीआई ने कहा है कि इस पहल का उद्देश्य सशस्त्र बलों की निस्वार्थ सेवा और बहादुरी के लिए राष्ट्र की कृतज्ञता को उजागर करना है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने समारोह की पुष्टि करते हुए कहा कि क्रिकेट देश को एकजुट करता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र, उसकी संप्रभुता, अखंडता और सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

टी दिलीप फिर से टीम इंडिया के फील्डिंग कोच बने

आईपीएल 2025 खत्म होने के बाद टीम इंडिया इंग्लैंड का दौरा करेगी। जहां उसे 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इस सीरीज से पहले टीम इंडिया में एक अहम शख्स की एंट्री हुई है। इस शख्स का नाम है टी दिलीप जो कि भारतीय क्रिकेट टीम के फील्डिंग कोच हैं। टी दिलीप का कॉन्ट्रैक्ट खत्म हो गया था और टीम इंडिया से अलग हो गए थे लेकिन अब एक बार फिर वो टीम से जुड़ गए हैं। वो अगले एक साल तक भारतीय टीम के साथ रहेंगे। बता दें कि, टी दिलीप का सेलेक्शन रोहित शर्मा के कारण हुआ है। रोहित शर्मा ने टी दिलीप के सेलेक्शन के लिए हेड कोच गौतम गंभीर से बातचीत की।

ओडिशा : पुरी समुद्र तट पर अवैध जल क्रीड़ा सुविधा ध्वस्त

पुरी, 28 मई। ओडिशा के पुरी जिला प्रशासन ने पुरी बीच के बलियापांडा इलाके में चल रही एक अवैध जल क्रीड़ा सुविधा को ध्वस्त कर दिया है। स्काई डाइव एडवेंचर एंड वाटर स्पोर्ट्स नाम से चल रही यह सुविधा उचित प्राधिकरण या सुरक्षा उपायों के बिना पर्यटकों को स्पीडबोट की सवारी और स्काईडाइविंग का अनुभव प्रदान कर रही थी।

यह कार्रवाई पिछले शनिवार को एक स्पीडबोट पलटने से हुयी दुर्घटना के बाद की गई क्योंकि इस दुर्घटना में सभी यात्री समुद्र में गिर गए थे। इन यात्रियों में क्रिकेटर सौरव गांगुली के भाई स्नेहाशीष गांगुली और उनकी पत्नी अर्पिता भी शामिल थे। सौभाग्य से दोनों को लाइफगार्ड ने बचा लिया और बाद में सुरक्षित कोलकाता वापस भेज दिया गया। घटना के बाद प्रशासन ने जांच शुरू की और पाया कि सुविधा में उपयोगकर्ताओं के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रावधानों का अभाव था। नतीजतन मंगलवार को बुलडोजर का उपयोग करके अवैध संरचना को ध्वस्त कर दिया गया।

विश्व कप लीग 2 : अमेरिका ने ओमान को 9 रनों से हराया

लॉडरहिल (अमेरिका), 28 मई। साई तेजा एम (73), स्मित पटेल (41) और संजय कृष्णमूर्ति (नाबाद 40) की शानदार पारियों के बाद जसदीप सिंह और हरदीप सिंह (तीन-तीन विकेट) की बदौलत अमेरिका ने मंगलवार रात विश्व कप लीग दो के एकदिवसीय मुकाबले में ओमान को नौ रनों से शिकस्त दी।

फ्लोरिडा के सेंट्रल ब्रोवार्ड रीजनल पार्क स्टेडियम टर्फ मैदान पर खेले गये मुकाबले में ओमान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी अमेरिका के लिए स्मित पटेल और शयन जहांगीर की सलामी जोड़ी ने 69 रन जोड़े। 11वें ओवर में सुफयान महमूद ने शयन जहांगीर (37) को आउट कर ओमान को पहली सफलता दिलाई। 16वें ओवर में आमिर ने स्मित पटेल (41) को आउटकर अमेरिका को दूसरा झटका दिया। अमेरिका ने निर्धारित 50 ओवरों में कप्तान मोनांक पटेल(26), साई तेजा एम (73), हरमीत सिंह (33) और संजय कृष्णमूर्ति (नाबाद 40) आदि के योगदान से आठ विकेट पर 293 रनों का स्कोर खड़ा किया। ओमान की ओर से सुफयान महमूद ने तीन विकेट लिये। शकील अहमद आमिर कलीम को दो-दो विकेट मिले। समय श्रीवास्तव ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

अमेरिका के 293 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी ओमान की शुरुआत खराब रही और उसने दूसरे ही ओवर में आमिर कलीम (पांच) का विकेट गवां दिया। इसके बाद मुजीबुउर अली ने कप्तान जतिंदर सिंह के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। 16वें ओवर में जतिंदर सिंह (40) के रनआउट होने पर इस साझेदारी का अंत हुआ। तीसरे विकेट के रूप में मुजीबुउर (19) रन बनाकर आउट हुये। हम्माद मिर्जा ने (50)रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। विनायक शुक्ला ने (46) और सुफयान महमूद (72) रनों की पारी खेली। आखिरी ओवरों में अमेरिकी गेंदबाजों ने कसी हुई गेंदबाजी की। ओमान के बल्लेबाज निर्धारित 50 ओवरों में नौ विकेट पर 284 रन ही बना सके और उनकी टीम नौ रन से मुकाबला हार गई। अमेरिका की ओर से जसदीप सिंह और हरदीप सिंह ने तीन-तीन विकेट लिये। सौरभ नेत्रवलकर और मिलिंद कुमार ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

यूनियन क्रिकेट क्लब ने भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल को हराया, देव का शतक

जयपुर, 28 मई । जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग के नॉक आउट मुकाबले में आज के एल सैनी स्टेडियम पर खेले गए दूसरे सेमी फाइनल मैच में यूनियन क्रिकेट क्लब ने श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल को 4 विकेट से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। प्रात: श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मयंक सारस्वत के 80 रन, मोहित प्रजापत के 100 रन, वंश आमेरिया के 33 रन व राहुल शर्मा के 40 रनों से 50 ओवर में 8 विकेट पर 304 रन बनाए। यूनियन क्रिकेट क्लब के लिए दीपक चौधरी ने 40 पर 2, आदित्य टांक ने 56 पर 2, लोकेश शर्मा ने 5 पर 2, आतिफ खान व अशोक स्वामी ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में यूनियन क्रिकेट क्लब ने नितेश कुमार के 35 रन, देव प्रताप के शतक 178 रन (85 गेंद, 29 चौके व 5 छक्के), दीपक चौधरी के 24 रन, लोकेश शर्मा के 19 रन व दीपक चौधरी के 20 रनों से 33 ओवर में 6 विकेट 305 रन बनाकर मैच जीत लिया। श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल के लिए शुभम राव ने 59 पर 3, मयंक कुमावत ने 70 पर 3 विकेट लिए।

26वीं एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप

भारत ने मिक्स्ड रिले में गोल्ड मेडल अपने नाम किया, तेजस्विन शंकर, रूपल चौधरी और पूजा छाए

नई दिल्ली, 28 मई। भारत की 4400 मीटर मिक्स्ड रिले टीम ने साउथ अफ्रीका के गुमी में 26वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में बेहतरीन प्रदर्शन किया। भारतीय 4400 मीटर मिक्स्ड रिले टीम ने अपना स्वर्ण पदक बरकरार रखा। अलग-अलग स्पर्धाओं में 4 सिल्वर और एक कांस्य पदक जीतने के बाद भारत ने दूसरे दिन 28 मई तक कुल 8 पदक जीते।

इन पदकों में गुलवीर सिंह का गोल्ड मेडल भी शामिल है।गुलवीर सिंह ने 10,000 मीटर में गोल्ड जीता था। तो रुपल चौधरी, संतोष कुमार, विशाल टीके और सुभा वेंकटेशन की भारतीय चौकड़ी ने 3:18.12 सेकेंड के समय के साथ गोल्ड मेडल जीता। चीन की टीम 3:20.52 सेकंड का समय लेकर दूसरे स्थान पर रही, जबकि श्रीलंका

ने 3:21.95 सेकंड के साथ कांस्य पदक जीता। अमेरिका में रहने वाले तेजस्विन शंकर भारत के सिल्वर मेडलिस्टों में से एक थे।

तेजस्विन शंकर ने 7618 का स्कोर जमा करके डेकाथलॉन में दूसरा स्थान हासिल किया। वह चीन के फेई जियांग से पीछे और जापान के कीसुके ओकुडा से आगे रहे।रूपल ने दिन में पहले महिला 400 मीटर स्पर्धा में सिल्वर मेडल जीता। रूपल और पूजा मामूली अंतर से गोल्ड जीतने से चूक गईं। दोनों को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा। इससे पहले पुरुष 1500 मीटर में भारत के यूनुस शाह ने देश के लिए कांसा जीता।

रूपल चौधरी ने महिलाओं के 400 मीटर फाइनल में 52.68 सेकेंड का समय निकालकर दूसरा स्थान हासिल किया। ये भारत के लिए दिन का पहला मेडल था। इसी स्पर्धा में हमवतन विथ्या रामराज 53.00 सेकेंड के समय के साथ पांचवें स्थान पर रहीं। जापान की नानाको मात्सुमोतो ने गोल्ड मेडल, जबकि उज्बेकिस्तान की जोनबीती हुकमोवा ने कांस्य पदक जीता। रूपल चौधरी ने 2022 में वर्ल्ड अंडर 20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 2 मेडल अपने नाम करने वाली पहली भारतीय एथलीट बनकर इतिहास रचा था। रूपल ने तब 4400 मीटर रिले में रजत और महिलाओं की 400 मीटर स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था।

सीपीएल का दूसरा संस्करण 31 से होगा शुरु

अहमदाबाद, 28 मई। गुजरात के अहमदाबाद में क्रिकेट प्रीमियर लीग का दूसरा संस्करण 31 मई से शुरु होगा। चिरिपाल ग्रुप के प्रमोटर और सीपीएल के सह-संस्थापक रोनक चिरिपाल ने बुधवार को यहां यूनीवार्ता को बताया कि सीपीएल 2025 गुजरात की क्रिकेट खेलने की भावना को जागृत कर सके और सच्ची प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने का एक प्रमुख मंच बनाने के सपने को साकार करने की दिशा में लिया गया दूसरा दृढ़ कदम है। क्रिकेट प्रीमियर लीग का दूसरा संस्करण एसजी हाईवे पर, निरमा यूनिवर्सिटी के सामने स्थित एसजीवीपी ग्राउंड्स में 31 मई से 14 जून, 2025 के बीच आयोजित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चिरिपाल ग्रुप की प्रमुख पहल, सीपीएल का आयोजन करने का मिशन शीर्ष रणजी ट्रॉफी खिलाड़ियों और उभरती हुई स्थानीय प्रतिभाओं को एक संगठित, प्रतिस्पर्धात्मक मंच प्रदान करके गुजरात के घरेलू क्रिकेट के परिदृश्य को नए स्तर पर ले जाना है।

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने शूटआउट में अर्जेंटीना को 2-0 से हराया

रोसारियो (अर्जेंटीना), 28 मई। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने चार देशों के टूर्नामेंट के अपने तीसरे मैच में नियमित समय में स्कोर 1-1 से बराबरी पर रहने के बाद पेनल्टी शूटाआउट में मेजबान अर्जेंटीना को 2-0 से हराया। आज यहां खेले गये मुकाबले में भारत के लिए कनिका ने (44वें) मिनट में एकमात्र गोल किया, जबकि लालरिनपुई और लालथंतलुंगी ने शूटआउट में गोल दाग कर टीम की जीत सुनिश्चित की। अर्जेंटीना की मिलग्रोस डेल वैले ने (10वें) मिनट पहले क्वार्टर में गोलकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद भारत ने तीसरे क्वार्टर में कनिका के 44वें मिनट से गोलकर स्कोर 1-1 से बराबरी पर लाकर टीम को मुकाबले में वापस ला दिया। निर्धारित समय में स्कोर बराबरी पर रहने पर मैच में परिणाम के लिए पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया। शूटआउट में गोलकीपर और कप्तान निधि ने अंतर पैदा किया और लगातार चार गोल बचाकर मेजबान टीम को बाहर कर दिया।

पद्मश्री श्रीराम सिंह व ओलंपियन गोपाल सैनी ने किया शिविर का उद्घाटन

160 बालक व 135 बालिकाओं सहित 295 खिलाडी होंगे शिविर में

जयपुर, 28 मई। पदश्री और अर्जुन अवार्डी श्रीराम सिंह शेखावत ने कहा कि शिविर में भाग लेने वाले खिलाडी जमकर महनत करे और यहां प्रशिक्षकों द्वारा जो कुछ भी सिखाया जाता है, उसे अपनी डायरी में नोट करें ताकि यहां से जाने के बाद वह उसे देख कर ट्रेनिंग कर सकें।

मुख्य अतिथि ओलंपियन श्रीराम सिंह ने कहा कि पूर्व के मुकाबले वर्तमान में सुविधाओं का अंबार है। खिलाडी को तो बस अब कडी महनत करनी है। परिणाम अपने आप सामने आएगें। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के तत्वावधान में सवाई मानसिंह स्टेडियम में बुधवार से 65वां केन्द्रीय आवासीय खेलकूद प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ हुआ। प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले इस शिविर में कुल 295 खिलाडी भाग ले रहे है।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता अर्जुन अवार्डी, ओलंपियन व क्रीडा भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपल सैनी ने की। विशिष्ट अतिथि क्रीडा भारती के राष्ट्रीय सहमंत्री रामानन्द, प्रान्त मंत्री राजस्थान, क्रीडा भारती मेघ सिंह और राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया भी उपस्थित थें। इस अवसर पर राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने कहा कि भीषण गर्मी को देखते हुए शिविर में भाग लेने वाले खिलाडियों की इस बार भी ठहराने की अच्छी व्यवस्था की गई है। उन्हे होटलो में ठहराया गया है। साथ ही परिषद वरिष्ठ प्रशिक्षको द्वारा उन्हे उच्च स्तरीय ट्रेनिंग भी दी जायेगी।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले 21 दिवसीय खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 19 मई से किया जाना था लेकिन जयपुर में दो अतिरिक्त आईपीएल मैचों के कारण शिविर की तिथि में बदलाव किया गया और 19 मई के स्थान पर 28 मई से आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

खेल परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने मुख्य अतिथि का स्वाग किया। मुख्य शिविर निदेशक और मुख्य खेल अधिकारी विरेन्द्र पूनिया ने अन्य अतिथियों का साफा पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान खिलाडियों को शपथ भी दिलाई गई। शिविर का निदेशक एथलेटिक्स प्रशिक्षक सबल प्रताप सिंह को नियुक्त किया गया है। जबकि क्रिकेट प्रशिक्षक मनीष वर्मा को सहायक शिविर निदेशक बनाया गया है। जयपुर के शिविर में 15 खेलों को शामिल किया गया है। इस शिविर में फुटबाल, क्रिकेट, जिम्नास्टिक, जूडो, हॉकी, कुश्ती, कबड्डी, भारोत्तोलन, खो-खो, साईक्लिंग, बैडमिंटन, टेबल-टेनिस, वुशू और तैराकी शामिल है।

अमित के नाबाद शतक व राहुल व रोहन के अर्द्धशतकों से जयपुरिया की शानदार जीत

जयपुर, 28 मई। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज नैना क्रिकेट एकेडमी जगतपुरा, जयपुर पर खेले गये पूल-जी के मैच में अमित गौतम 123 रन नाबाद शतक (60 गेन्द, 10 चौके, 11 छक्के), रोहन राजवर 74 रन नाबाद (34 गेन्द, 5 चौके, 7 छक्के), राहुल खण्डेलवाल 63 रन (29 गेन्द, 5 चौके, 6 छक्के) के अर्द्धशतको की मदद से जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी ने एलिट क्रिकेट एकेडमी को 111 रन से हरा कर 2 अंक अर्जित किये ।

जयपुरिया एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये अमित गौतक 123 रन राहुल खण्डेलवाल 63 रन ने मिलकर 9.1 ओवर में 101 रन जोड़कर अच्छी शुरूआत की अगले बल्लेबाज रोहन राजवर 74 रन नाबाद ने अतित गौतम से मिलकर 10.5 ओवर में दूसरे विकेट पर 174 रनों की नाबाद सोझेदारी निभाकर अपनी टीम का स्कोर निर्धारित 20 ओवर में 1 विकेट खोकर 274 रन बनाये। एलिट क्रिकेट एकेडमी की ओर से गर्वित राज 48 रन पर 1 विकेट लेकर एक मात्र सफल गेन्दबाज रहे।

जवाबी पारी में एलिट क्रिकेट एकेडमी ने बन्टी शर्मा 52 रन नाबाद (50 गेन्द 4 चौके 3 छक्के), शुभम शर्मा 44 रन (17 गेन्द, 4 चौके, 4 छक्के), मोहम्मद हसीन 22 रन तथा सोहन 18 रन नाबाद की मदद के बावजूद निर्धारित 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 163 रन ही बना सकें, जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी की ओर से दिव्यांश शर्मा 18 रन पर 2 विकेट, पूरव शर्मा 11 रन पर 2 विकेट तथा मिहित अग्रवाल व ईशान जैन प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेन्दबाज रहे। मैन ऑफ दा मैच अमित गौतम 123 रन नाबाद जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी रहे।

'जल स्वावलम्बन पखवाड़े में वर्षा जल संग्रहण व स्वच्छता पर जोर दिया जायेगा'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने अधिकारियों को पखवाड़े की गतिविधियों में आमजन व गाँवों को जोड़ने के निर्देश दिये

- मुख्यमंत्री ने कहा कि 21 जून को योग दिवस को प्रदेश की संस्कृति एवं धरोहर से जोड़ते हुए हर संभाग व जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर योगाभ्यास का आयोजन सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिये गये हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारीयों को 5 जून से 20 जून तक मनाये जाने वाले जल स्वावलम्बन पखवाड़े में आयोजित होने वाली गतिविधियों में आमजन की पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जयपुर, 28 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर, इस वर्ष गंगादशमी का अनूठा संयोग बना है। गंगादशमी की मान्यता को ध्यान में रखते हुए, राज्य सरकार इस अवसर को जल स्वावलम्बन पखवाड़े के माध्यम से वर्षा जल के अधिक संग्रहण तथा जल स्रोतों के रख-रखाव एवं स्वच्छता के लिए व्यापक स्तर पर मनाने जा रही है।

शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित बैठक में निर्देश दिए कि जल स्वावलम्बन पखवाड़े में आयोजित होने वाली गतिविधियों में आमजन की पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित हो तथा प्रत्येक गांव को इन गतिविधियों में जोड़ा जाए ताकि यह एक जन आंदोलन का रूप ले सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 5 जून से 20 जून तक जल स्वावलम्बन पखवाड़ा मनाया जाएगा। 5 जून को गंगा दशमी एवं विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में, प्रत्येक ग्राम एवं शहर में समस्त विभागों द्वारा जल स्रोतों, नदियों, जल धाराओं एवं तालाबों पर पूजन, कलश यात्रा, जागरूकता अभियान, स्वच्छता अभियान एवं अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शर्मा ने कहा कि जल स्वावलम्बन पखवाड़े में पेयजल स्रोतों की सफाई, मरम्मत, जल बचत हेतु जन जागरूकता अभियान सहित अन्य कार्यक्रम भी संचालित किए जाएंगे।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर विश्व भर में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से योग का बड़ा महत्व है और राज्य सरकार ने इस वर्ष के योग दिवस के आयोजन को प्रदेश की संस्कृति एवं धरोहर से जोड़ते हुए, प्रत्येक संभाग व जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर योगाभ्यास का आयोजन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

देश में करोना के एक हज़ार से ज्यादा एक्टिव केस

नयी दिल्ली, 28 मई। भारत में कोविड-19 के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, देश में कोरोना वायरस से संक्रमित सक्रिय मामले 1,010 हैं। आंकड़ों के अनुसार, केरल और महाराष्ट्र सबसे गंभीर रूप से प्रभावित राज्यों में से हैं। मामलों में यह वृद्धि दो नए उप-वेरिएंट - एनबी.1.8.1 और एलएफ.7 - का पता लगने के साथ हुई है, जिनकी वर्तमान में वैश्विक स्वास्थ्य प्राधिकरण निगरानी कर रहे हैं। भारत सहित सिंगापुर, चीन, थाईलैंड और हांगकांग जैसे अन्य दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में भी कोविड के मामलों में वृद्धि देखी गई है।

- सबसे ज्यादा 430 एक्टिव केस केरल में हैं, इनमें से 335 नए मामले हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी किए गए राज्यवार आंकड़ों के अनुसार, केरल और महाराष्ट्र में कोरोनावायरस के मामलों में सबसे ज़्यादा वृद्धि देखी गई है। केरल में 430 मामले सामने आए हैं, जिनमें से 335 नए हैं। इस बीच, महाराष्ट्र में 154 नए संक्रमण के साथ 210 मामले सामने आए हैं।

'तमिल भाषा से जन्मी है कन्नड़'

फिल्म स्टार कमल हासन की इस टिप्पणी से कर्नाटक में बवाल मच गया है

-लक्ष्मण कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- कर्नाटक में उनकी इस टिप्पणी का भारी विरोध किया जा रहा है। कन्नड़ एक्टिविस्ट धमकी दे रहे हैं कि अगर एक्टर ने माफी नहीं मांगी तो उनकी फिल्म ''ठग लाइफ'' को कर्नाटक में प्रदर्शित नहीं होने दिया जाएगा।
- कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा, ''कन्नड़ भाषा का इतिहास बहुत पुराना है... बेचारे कमल हासन को यह पता ही नहीं है।''

बेंगलुरु, 28 मई। भाषा का मुद्दा कर्नाटक में बेहद संवेदनशील बन चुका है, जहां इससे जुड़ा हर पहलू यहां के लोगों और कार्यकर्ताओं के दिलो-दिमाग में सर्वोपरि है। हिंदी भाषी प्रवासी अपनी हरकतों व बातों से पहले ही कन्नड़ बोलने वालों को मानसिक तनाव दे रहे हैं और अब तमिल फिल्म सुपरस्टार कमल हासन की कन्नड़ भाषा पर की गई विवादास्पद टिप्पणी ने राज्य को आक्रोशित कर दिया है।

कमल हासन की यह टिप्पणी कि ''तमिल ने कन्नड़ को जन्म दिया'' सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। इसके बाद कर्नाटक के लोग और भाजपा की कर्नाटक इकाई समेत कई लोगों ने अभिनेता से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की है। चेन्नई में अपनी फिल्म ''ठग लाइफ'' के प्रचार कार्यक्रम के दौरान दिए गए इस बयान की वीडियो क्लिप तेजी से वायरल हो गई है।

इस टिप्पणी के खिलाफ बेंगलुरु, मैसूरु, हुबली और कुछ अन्य शहरों में कई कन्नड़ समर्थक संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किए। प्रदर्शनकारियों ने कमल हासन से कहा है कि कर्नाटक की जनता से माफी मांगें और चेतावनी दी कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो वे राज्य में ''ठग लाइफ'' फिल्म का प्रदर्शन नहीं होने देंगे।

एक्स पर विजयेन्द्र नामक एक यूज़र ने अभिनेता की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए लिखा, ''अपनी मातृभाषा से प्रेम करना चाहिए, लेकिन किसी अन्य भाषा का अपमान करना असंस्कारी व्यवहार है। विशेष रूप से कलाकारों को हर भाषा का सम्मान करना चाहिए। यह अत्यधिक अहंकार की पराकाष्ठा है कि एक ऐसा अभिनेता, जिसने कई भारतीय भाषाओं में काम किया है, जिसमें कन्नड़ भी शामिल है, वह अपनी तमिल भाषा को महिमामंडित करते हुए कन्नड़ का अपमान कर रहा है, यही नहीं उसने अभिनेता शिवराज कुमार को भी इसमें घसीट लिया है।''

यूज़र ने आगे कहा, ''कन्नड़ भाषा भारत समेत विश्व के कई हिस्सों में ऐतिहासिक रूप से स्थापित रही है। कन्नड़ दुनिया की सबसे मान्यता प्राप्त भाषाओं में से एक है, यह बात कमल हासन जैसे संकीर्ण मानसिकता वालों को समझनी चाहिए।''

मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने इस विवाद पर टिप्पणी करते हुए कहा, ''कन्नड़ भाषा का इतिहास बहुत लंबा है। बेचारे कमल हासन इससे अनजान हैं।''

इसी तरह की भावनाएं व्यक्त करते हुए भाजपा कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष बी.वाय. विजयेंद्र ने कहा, ''कमल हासन कोई इतिहासकार नहीं हैं कि वे यह तय करें कि कौन-सी भाषा किससे उत्पन्न हुई। कन्नड़ भाषा, जिसका इतिहास ढाई हजार साल से भी अधिक पुराना है, भारत के नक्शे पर समृद्धि और सौहार्द का प्रतीक है।''

राजस्थान सहित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पाक युद्ध के बाद पहली बार इतने बड़े पैमाने पर हुआ मॉक ड्रिल था, तथा देशभर के 250 स्थानों और 33 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में यह मॉक ड्रिल की गई थी।

जस्टिस के.आर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बॉम्बे हाईकोर्ट का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया और 2 मार्च, 2016 को इस पद पर स्थाई नियुक्ति दी गई। जस्टिस श्रीराम को 21 सितंबर 2024 को मद्रास हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के पद पर पदोन्नत किया गया। दूसरी ओर, व्यक्तिगत जीवन में सीजे श्रीराम सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल होते थे। उन्होंने कई सालों तक एक एनजीओ में उपाध्यक्ष के तौर पर काम किया। यह एनजीओ दिवंगत लोगों के लिए अंतिम संस्कार और श्राद्ध करने की व्यवस्था करता है। इसके अलावा उन्हें गोल्फ खेलना भी पसंद है।

सुप्रीम कोर्ट ने प्रो. महमूदाबाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जा सकता है, कहा, हम निर्देश देते हैं कि एसआईटी की जांच दो मुकदमों के तथ्यों तक ही सीमित रहेगी। अदालत ने हरियाणा पुलिस से प्रोफेसर महमूदाबाद के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने के संबंध में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के नोटिस पर अपनी प्रतिक्रिया के बारे में भी बताने को कहा।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने 21 मई को कहा कि उसने गिरफ्तार अहमूदाबाद के संबंध में एक मीडिया रिपोर्ट का स्वत: संज्ञान लिया है।

पीठ के समक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल ने आशंका जताई थी कि जांच का इस्तेमाल मुकदमों इतर अन्य चीजों को देखने के लिए भी किया जा सकता है। उन्होंने कहा था कि पुलिस उनसे (महमूदाबाद) डिवाइस मांग रही है।

पीठ ने इस पर हरियाणा सरकार के वकील से पूछा, दोनों मुकदमें रिकॉर्ड में दर्ज हैं। ऐसे में डिवाइस की क्या जरूरत है? दायरा बढ़ ाने की कोशिश न करें।

शीर्ष अदालत ने एसआईटी को जुलाई में अगली सुनवाई की तारीख पर जांच रिपोर्ट पेश करने का निर्देश देते हुए कहा कि वह प्रो. महमूदाबाद को दी गयी अंतरिम जमानत की अवधि बढ़ा रहा है।

''फर्जी'' पुलिस मुठभेड़ों की जांच होगी

नयी दिल्ली, 28 मई। उच्चतम न्यायालय ने असम में फर्जी पुलिस मुठभेड़ों के आरोपों की स्वतंत्र और समयबद्ध जांच करने के लिए बुधवार को असम मानवाधिकार आयोग को निर्देश दिया। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की अंशकालीन कार्य दिवस पीठ ने नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा में मानवाधिकार आयोगों के संवैधानिक महत्व को रेखांकित करते हुए एएचआरसी यह संवेदनशील जिम्मेदारी सौंपी।

उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चित्तौड़गढ़ -भीलवाड़ा में बारिश जारी है। जैसलमेर में सुबह से रेत का गुबार (धूलभरी आंधी) है।

मध्यप्रदेश के 15 से ज्यादा जिलों में मंगलवार को बारिश हुई। आज भी भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 40 जिलों में तेज आंधी के साथ बारिश की चेतावनी है। कुछ जिलों में आंधी की रफ्तार 50किमी./घंटा तक हो सकती है। बिहार के 12 जिलों में आज बारिश का यलो अलर्ट है। इस बार मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से ज्यादा बारिश होने का अनुमान है। जून महीने में भी बारिश सामान्य से ज्यादा होगी।

भारत की विशाल सैन्य क्षमता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सकता है, जिससे परमाणु उपयोग की सीमा और भी नीचे आ जाती है। पाकिस्तानी सेना मानती है कि यह रणनीति उसकी प्रतिरोधक शक्ति को मजबूत करती है और भारत की पारंपरिक श्रेष्ठता के बावजूद, दोनों देशों के बीच सामरिक संतुलन बनाए रखती है।

हालांकि, डीआइए चेतावनी देता है कि यह रणनीति अत्यंत गंभीर जोखिमों से भरी हुई है। टैक्टिकल परमाणु हथियारों की तैनाती से गलत अनुमान या आकस्मिक उकसावे का खतरा काफी बढ़ जाता है। इस हथियारों को आगे की पंक्ति में तैनात करने और कमान का विकेन्द्रीकरण करने की जरूरत होती है, जिससे इनका अनाधिकृत उपयोग या चोरी का खतरा बढ़ जाता है। और एक बार यदि परमाणु हथियारों का प्रयोग शुरु हो गया तो भले ही वह कम क्षमता वाला हो, स्थिति को काबू में रखना बेहद मुश्किल हो जाता है। घबराहट, गलतफहमी या राजनीतिक दबाव के चलते पूर्ण परमाणु युद्ध की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

चीन पर पाकिस्तान की बढ़ती सैन्य निर्भरता स्थिति को और जटिल बना देती है। डीआईए की रिपोर्ट बताती है कि यह रणनीतिक साझेदारी इस्लामाबाद को खास तौर पर मिसाइल तकनीक और ''कमांड-एंड-कंट्रोल सिस्टम्स'' में तेजी से आधुनिक बनाने में मदद कर रही है। हालांकि इससे पाकिस्तान की सैन्य क्षमताएं बढ़ती हैं, लेकिन इससे क्षेत्र में हथियारों की होड़ भी बढ़ रही है और संकटों के समाधान की संभावना कम हो रही है।

डीआईए की 2025 की खतरा-आकलन रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि भारत को लेकर पाकिस्तान का ''अस्तित्व संबंधी खतरे'' का नज़रिया केवल बयानबाज़ी नहीं है, यह उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का प्रमुख आधार है। उसके टैक्टिकल परमाणु हथियारों और विषम युद्ध क्षमताओं में लगातार निवेश से उसकी पारंपरिक सैन्य असुरक्षा झलकती है। यह रणनीति भले ही अल्पकालिक प्रतिरोध की गारंटी देती हो, लेकिन इससे परमाणु हथियारों के उपयोग की हद खतरनाक रूप से घट जाती है और पहले से अस्थिर इस क्षेत्र को और अधिक विस्फोटक बना देती है।

जयपुर में आज ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सामने आ चुके हैं। इनमें से 1 मरीज की मौत भी हो चुकी है।

हालांकि स्थिति नियंत्रण में है, फिर भी स्वास्थ्य विभाग सतर्कता बरतने की अपील कर रहा है।

जिलेवार आंकड़ों पर नजर डालें तो जयपुर में सबसे अधिक 17 केस दर्ज किए गए हैं, जबकि जोधपुर में 6, उदयपुर में 4, डीडवाना में 3, बीकानेर में 2, अजमेर 2, बालोतरा 1, दौसा 1, फालौदी 1 तथा सवाईमाधोपुर में 1 मरीज सामने आया है। राज्य सरकार और चिकित्सा विभाग ने नागरिकों से कहा है कि थोड़ी सी भी लापरवाही भारी पड़ सकती है।

इसलिए भीड़भाड़ वाले इलाकों में मास्क पहनें और बुखार, खांसी या सांस की तकलीफ होने पर तुरंत जांच करवाएं।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में कांग्रेस का एक अहम चेहरा माना जाता है।

केरल में कांग्रेस के कुछ नेता, वेणुगोपाल की कृपा पाने के लिए, थरूर पर निशाना साध रहे हैं और उनके खिलाफ नित नई कहानियाँ गढ़ रहे हैं।

संगठन का निर्माण करने, राज्य इकाइयों को मजबूती प्रदान करने, नरेन्द्र मोदी की विफलताओं को उजागर करने, विभिन्न राज्यों में विधानसभा चुनाव जीतने की रणनीति बनाने तथा नरेन्द्र मोदी को सत्ता से बेदखल करने के प्रयासों के बजाय, कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता अपना समय, ऊर्जा और प्रयास थरूर पर हमला बोलने और उन्हें पार्टी से निकलवाने में लगा रहे हैं।

थरूर कांग्रेस की बड़ी तस्वीर में एक छोटा हिस्सा हैं, लेकिन वेणुगोपाल जैसे नेताओं के लिए वही पूरी तस्वीर बन चुके हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता भी मानते हैं कि फिलहाल मोदी सबसे कमज़ोर स्थिति में हैं, लेकिन कांग्रेस मोदी पर निशाना साधकर इस अवसर का लाभ नहीं उठा रही है और न ही मोदी और भाजपा-आरएसएस के बीच की दरारों को राजनीतिक रूप से भुनाया जा रहा है।

कांग्रेस को पूरी तरह एहसास है कि उसकी सबसे बड़ी कमजोरी संगठन है, और इसी को दुरुस्त करने की ज़रूरत है। लेकिन जब राहुल गांधी ने वेणुगोपाल को संगठन पर एकतरफा नियंत्रण दे रखा है, तो सुधार की सारी कोशिशें शुरू होने से पहले ही विफल हो जाती हैं।

अगर राहुल गांधी वास्तव में चुनाव जीतना चाहते हैं, मोदी को सत्ता से हटाना चाहते हैं और कांग्रेस को देश की मुख्यधारा की राजनीति में वापसी दिलाना चाहते हैं तो उन्हें पार्टी और संगठन पर पूरा ध्यान देना होगा।

अल्पसंख्यकों और...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आग उगलने और आतंकवाद के लिए उसकी निंदा करने के बाद, बनर्जी ने बंगाली गौरव से जुड़े एक और मुद्दे, डॉ. रास बिहारी बोस, की ओर रुख किया, जिन्होंने 1920 के दशक में जापान में भारत के स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाई थी।

अपने आधिकारिक कार्यक्रम के बाद, अभिषेक बनर्जी टोक्यो में रास बिहारी बोस के स्मारक पर गए, जहां उनके साथ जापान में भारत के राजदूत और टीम के अन्य सदस्य भी मौजूद थे।

यह कदम महत्वपूर्ण है, क्योंकि बंगाल के स्वतंत्रता सेनानियों, विशेष रूप से विदेश में उनके संघर्षों का जिक्र, बंगाल के निवासियों के बीच गहरी छाप छोड़ता है। उम्मीद की जा रही है कि आगामी राज्य विधानसभा चुनाव में पार्टी के लिए यह लाभदायक हो सकता है।

ममता बनर्जी अगले विधानसभा चुनाव में कड़े मुकाबले की आहट महसूस कर रही हैं, क्योंकि वे कई मोर्चों पर घिरी हुई हैं। बहुसंख्यक समुदाय की सहानुभूति हासिल करना उनके लिए आसान नहीं होगा, खासकर विभिन्न मोर्चों पर उनके शासन की विफलताओं को देखते हुए।

अब वे राजनीति के हर रंग को पकड़ने की कोशिश कर रही हैं। यह कितना सफल होगा, यह तो समय बताएगा। हालांकि, अभी तक ममता बनर्जी का बंगाल पुलिस और प्रशासन पर जबरदस्त नियंत्रण बना हुआ है। यही संस्थाएं पार्टी के लिए बूथ पर कब्जा करने और वोट जुटाने में मदद करेंगी।

लोकपाल ने पूर्व सेबी प्रमुख माधवी बुच पर लगे भ्रष्टाचार के सभी आरोप खारिज किए

माधवी बुच को क्लीन चिट देते हुए लोकपाल ने कहा कि हिंडन बर्ग रिपोर्ट को बुच के खिलाफ कार्यवाही का आधार नहीं बनाया जा सकता

- लोकपाल चेयरपर्सन जस्टिस ए एम खानविलकर ने कहा, आरोप निराधार, अप्रमाणित तथा निरर्थक हैं।

नयी दिल्ली, 28 मई। भ्रष्टाचार से जुड़ी शिकायतों की जांच करने वाली संस्था लोकपाल ने बुधवार को हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के आधार पर बाजार नियामक सेबी की पूर्व प्रमुख माधबी पुरी बुच के खिलाफ अनुचित व्यवहार और हितों के टकराव का आरोप लगाने वाली शिकायतों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि आरोप पूरी तरह से धारणा पर आधारित हैं और उसके समर्थन में कोई ठोस सबूत नहीं हैं। लोकपाल चेयरपर्सन न्यायमूर्ति ए एम खानविलकर की अध्यक्षता वाली छह सदस्यीय पीठ ने आदेश मेंमाना कि शिकायतों की जांच का आदेश देने के लिए कोई प्रथम दृष्टया मामला मौजूद नहीं है। लोकपाल ने कहा कि आरोप निराधार, अप्रमाणित और काफी हद तक निरर्थक हैं।

अपने आदेश में लोकपाल ने उल्लेख किया कि जब बुच ने सेबी में कार्यभार स्वीकार किया था, तब उन्होंने एएपीएल में अपने शेयरों और अपने पति के पक्ष में किए गए हस्तांतरणों का खुलासा किया था। इस बात का दूर-दूर तक कोई संकेत नहीं है कि उन्होंने सेबी के पूर्णकालिक सदस्य के रूप में कार्यभार संभालने के बाद भी एएपीएल के बैनर तले अपना परामर्श कार्य जारी रखा। बुच के खिलाफ आरोप पूरी तरह से हिंडनबर्ग रिपोर्ट पर आधारित हैं, शिकायतकर्ता आरोपों को पुष्ट करने के लिए कोई ठोस सबूत पेश करने में विफल रहे हैं। लोकपाल ने आदेश में कहा कि इसको देखते हुए इन शिकायतों का निपटान किया जाता है।

लोकपाल ने इस संबंध में पहले के आदेश का हवाला देते हुए कहा कि हिंडनबर्ग रिपोर्ट को बुच के खिलाफ कार्रवाई बढ़ ाने का एकमात्र आधार नहीं बनाया जा सकता। आदेश में कहा गया, ''शिकायतकर्ताओं ने कथित रिपोर्ट से स्वतंत्र होकर आरोपों को स्पष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन हमारे विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि वे प्रमाणिक नहीं हैं। लोकपाल ने पिछले साल आठ नवंबर को लोकसभा सदस्य मोइत्रा और दो अन्य की तरफ से दायर शिकायतों पर बुच से 'स्पष्टीकरण मांगा था। पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) की पूर्व प्रमुख बुच को चार सप्ताह के भीतर अपना जवाब देने के लिए कहा गया था। बुच ने सात दिसंबर, 2024 को हलफनामे के माध्यम से अपना जवाब दाखिल किया था। उसमें उन्होंने कुछ मुद्दे उठाए थे।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908